FAIZAN E MADINA

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

- फ़लाहो व कामयाबी के क़ुरआनी उसूल 3
- अपनी जान, माल और आल को बद्दुआ न दो ! 6
- शबे मेराज के ग़मगीन पहलू 14
- मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही 24
- नर्मी अपनाइये, अल्लाह के प्यारे बन जाइये 43

सर्दी की शिद्दत हो तो

हदीसे पाक का मज़्मून है : सख़्त सर्दी में जब बन्दा येह कहता है : "لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ" या अल्लाह ! आज सख़्त सर्दी है मुझे जहन्नम की "ज़म्हरीर" से बचा" तो अल्लाह पाक जहन्नम से फ़रमाता है कि मेरा बन्दा तुझ से पनाह मांग रहा है मैं ने उस को तुझ से पनाह दी।

(عمل الیوم واللیلہ، ص136، حدیث:307)

जब भी सख़्त सर्दी हो तो अल्लाह पाक की जनाब में येह दुआ करनी चाहिये। "ज़म्हरीर" जहन्नम का एक तब्क़ा है जिस में ठन्डक का अज़ाब है, जब काफ़िर को उस में फेंका जाएगा तो सर्दी की वज्ह से उस के जिस्म के टुक्ड़े टुक्ड़े हो जाएंगे। (सर्दी से बचने का तरीक़ा, स. 1)

मरज़े गुनाह दूर करने का वज़ीफ़ा

يَا بَرُّ (ऐ भलाई करने वाले)

जो कोई रोज़ाना सात बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर अपने दिल पर दम करेगा, اِنْ شَآءَ اللّٰہ गुनाहों की बीमारी दूर हो जाएगी।
(मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब, स. 31 – मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/42)

मसाइबो आलाम से हिफ़ाज़त

अल्लाह पाक ने चाहा तो मसाइबो आलाम से नजात मिलेगी। " يَا مُسَبِّبَ الْاَسْبَاب " 500 बार, (अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ 11, 11 बार) बाद नमाज़े इशा क़िब्ला रू बा वुज़ू नंगे सर ऐसी जगह पढ़िये कि सर और आस्मान के दरमियान कोई चीज़ ह़ाइल न हो, यहां तक कि सर पर टोपी भी न हो। इस्लामी बहनें ऐसी जगह पढ़ें जहां किसी अजनबी यानी ग़ैर मह़रम की नज़र न पड़े। (इग़्वा से हिफ़ाज़त के औराद, स. 3)

कारोबार और काम काज में दिल न लगता हो तो !

जिन लोगों का काम, कारोबार में दिल नहीं लगता उन के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने येह वज़ीफ़ा तह़रीर फ़रमाया कि "या अल्लाहु 101 बार काग़ज़ पर लिख कर तावीज़ बना कर बाज़ू पर बांध लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ जाइज़ काम धन्धे और ह़लाल नौकरी में दिल लग जाएगा।"

(चिड़िया और अन्धा सांप, स. 29)

माहनामा
फ़ैज़ाने मदीना

Monthly Magazine
FAIZANE MADINA (HINDI)

ब फ़ैज़ाने नज़र
सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह,
इमामे आज़म फ़क़ीहे अफ़ख़म हज़रते सय्यिदुना
इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رحمۃ اللہ تعالی علیہ

ब फ़ैज़ाने करम
आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत
मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह
इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالی علیہ

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर

(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ)

क़ुरआनो ह़दीस
फ़लाहो कामयाबी के क़ुरआनी उसूल 3
अपनी जान माल और आल को बद्दुआ न दो ! 6

फ़ैज़ाने सीरत
रसूलुल्लाह का बीमारों और परेशान ह़ालों के साथ अन्दाज़े मह़ब्बत 10
शबे मेराज के ग़मगीन पहलू 14

फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत औरत का मर्दाना स्वेटर पहनना कैसा ? मअ़ दीगर सुवालात 17

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत क़सम खा कर फ़ौरन वापस लेने का हुक्म मअ़ दीगर सुवालात 19

मज़ामीन
काम की बातें 21
अपनी ज़िन्दगी बदलिये 22
मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही 24
बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन 25

ताजिरों के लिये अह़कामे तिजारत 26

बुज़ुर्गाने दीन की सीरत
ह़ज़रते सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ा رضی اللہ عنہ 28
ह़ज़रते मह़मूद बिन लबीद और अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबज़ी 30
वोह जिन्हें रसूले करीम ने अपने सीने से लगाया ! 31
अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये 34

मुतफ़र्रिक़
मिसाल की ज़रूरत व अहमिय्यत 36
ईमान व अ़क़ाइद और रसाइले अमीरे अहले सुन्नत 39

क़ारेईन के सफ़ह़ात नए लिखारी 40

बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"
नर्मी अपनाइये, अल्लाह के प्यारे बन जाइये 43
सुस्त ऊंट तेज़ कैसे हुवा ? 44
रात में सैर 45
बच्चों को वक़्त का पाबन्द बनाएं 47

इस्लामी बहनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"
बेटियों की उस्तानी कैसी हो ? 49
इस्लामी बहनों के शरई मसाइल 51

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER
HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI
BUTVALA'S CHAWL,
NR. CENTRAL WARE HOUSE,
DANILIMDA, AHMEDABAD-380028.
(GUJARAT)

PLACE OF PRINTING
MODERN ART PRINTERS
OPP : PATEL TEA STALL,
DABGARWAD NAKA,
DARIYAPUR, AHMEDABAD-380001.

bookmahnama@gmail.com

फ़लाहो कामयाबी के क़ुरआनी उसूल

तौहीदो रिसालत की त़रह़ मुसलमान का बुन्यादी और अहम तरीन अ़क़ीदा "**अ़क़ीदए आख़िरत और ह़िसाब व मीज़ान**" है। अ़क़ीदए आख़िरत के इन्सानी ज़िन्दगी पर बहुत गहरे असरात हैं। अ़क़ीदए आख़िरत पर जिस क़दर ईमान मज़बूत़ होगा और जिस क़दर इस का तसव्वुर ज़ेहन नशीन रहेगा, बन्दा हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल इ़बाद सभी के मुआ़मले में बहुत एह़तियात़ करेगा। बन्दे की हर दम येही कोशिश व तमन्ना होगी कि वोह आख़िरत में अपने करीम रब और ख़ालिक़ो मालिक की बारगाह में कामयाब व सुर्ख़रू हो जाए और फ़लाह़ पा जाए।

क़ुरआने करीम जो कि किताबे हिदायत है, इस में कई मक़ामात पर ऐसे अ़क़ाइद, आमाल और औसाफ़ का ज़िक्र मौजूद है जो आख़िरत की कामयाबी और फ़लाह़ का ज़रीआ़ बनते हैं।

फ़लाह़ का लफ़्ज़ मुख़्तलिफ़ मुश्तक़ात की सूरत में क़ुरआने करीम में 40 बार आया है, जिन में से 23 बार मक्की सूरतों में और 17 बार मदनी सूरतों में आया है।

फ़लाह़ के लुग़वी व मुरादी माना बयान करते हुए ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : फ़लाह़ के लुग़वी माना हैं चीरना और खुलना और क़त्अ़ करना, इसी लिये किसान को फ़ल्लाह़ कहते हैं क्यूंकि (वोह) ज़मीन को चीरता है। इस्त़िलाह़ में फ़लाह़ के माना हैं "**कामयाबी**" क्यूंकि वोह भी आड़ों और पर्दों को चीर कर मुश्किलात को दफ़्अ़ कर के ह़ासिल की जाती है। माना येह हुए कि इस क़िस्म के लोग दुन्या और बरज़ख़ और आख़िरत हर जगह कामयाब हैं।

ख़याल रहे कि हिदायत व कामयाबी से मुराद अगर दुन्या की हिदायत व कामयाबी है तो माना येह हैं कि येह लोग दुन्या में अच्छे अ़क़ीदों पर हैं और अच्छे आमाल की तौफ़ीक़ वाले हैं, अमीरी, फ़क़ीरी, सल्त़नत वग़ैरा हर ह़ाल में कामयाब हैं। अगर बरज़ख़ की हिदायत व फ़लाह़ मुराद है तो माना येह हैं कि मरते वक़्त ह़ुस्ने ख़ातिमा और क़ब्र में सुवालात के जवाबात की हिदायत पर हैं फिर बरज़ख़ी नेमतों से कामयाब हैं। अगर क़ियामत की हिदायत व फ़लाह़ मुराद है तो मत़लब येह है कि क़ियामत में सुवालाते मलाइका के जवाबात की हिदायत पा लेंगे, फिर रब की मग़्फ़िरत से कामयाब होंगे।[1]

इमामुल लुग़त इमाम मुर्तज़ा ज़ुबैदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ताजुल उ़रूस में लिखते हैं :

فَلَيْسَ فِي كَلَامِ الْعَرَبِ كُلِّهِ أَجْمَعُ مِن لَفْظَةِ الْفَلَاحِ لِخَيْرَيِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ،

यानी कलामे अ़रब में फ़लाह़ के इलावा कोई ऐसा लफ़्ज़ नहीं जो दुन्या और आख़िरत दोनों की ख़ैर को जामेअ़ हो।[2]

क़ुरआने करीम में फ़लाह़ व कामयाबी दिलाने वाले आमाल का बयान दो अन्दाज़ में है, बाज़ मक़ामात पर कसीर आमाल व अ़क़ाइद को बयान कर के उन के फ़लाह़ व कामयाबी का सबब होना बयान किया गया है और बाज़ मक़ामात पर किसी

एक या दो आमाल को और कहीं एक या दो अ़क़ाइद को फ़लाह़ व कामयाबी का सबब व उसूल फ़रमाया गया है। आइये ! ज़ैल में पढ़िये :

ईमान व अ़मल सूरतुल बक़रह के आग़ाज़ में क़ुरआने करीम को मुत्तक़ीन के लिये हिदायत फ़रमाया गया है, साथ ही मुत्तक़ीन की सिफ़ात बयान की गईं कि येह वोह लोग हैं जो बे देखे ईमान लाते हैं, नमाज़ क़ाइम करते हैं, अल्लाह के दिये हुए माल व रिज़्क़ में से राहे ख़ुदा में ख़र्च करते हैं, क़ुरआने करीम और इस से पहली आस्मानी किताबों पर ईमान रखते हैं, आख़िरत पर यानी मरने के बाद दोबारा उठाए जाने पर यक़ीन रखते हैं। ईमानिय्यात व आमाल के येह तमाम पहलू बयान करने के बाद उन लोगों को हिदायत याफ़्ता और फ़लाह़ पाने वाले फ़रमाया गया है।[3]

तक़्वा ज़मानए जाहिलिय्यत में लोगों की येह आ़दत थी कि जब वोह ह़ज के लिये एह़राम बांधते तो किसी मकान में उस के दरवाज़े से दाख़िल न होते, अगर ज़रूरत होती तो घर की पिछली जानिब की दीवार तोड़ कर आते और वोह लोग इसे नेकी समझते थे,[4] अल्लाह करीम ने फ़रमाया कि अस्ल नेकी तक़्वा है, चुनान्चे दुरुस्त येही है कि घरों में अस्ल दरवाज़े ही से आओ, और फ़लाह़ो कामयाबी की त़लब है तो तक़्वा इख़्तियार करो।[5]

इस आयते करीमा से येह भी दर्स मिलता है कि तक़्वा, परहेज़गारी, ज़राएअ़ सवाब व नजात वोही हैं जो क़ुरआनो ह़दीस और सलफ़े सालिह़ीन ने बयान किये हैं, ना जाइज़, ह़राम और फ़ुज़ूलिय्यात व लग़्विय्यात को ज़राएअ़ नजात व मारिफ़त समझ लेना निरी जहालत है चुनान्चे ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : इस से वोह मुसलमान इ़ब्रत पकड़ें जो कि नमाज़ व रोज़े छोड़ कर सीना कोबी या भंग चरस पीने या आग जलाने उस पर धूनी रमा कर बैठने या आज कल के ह़राम गाने बजाने को क़व्वाली कह कर उन्हें अस्ल इ़बादत समझ बैठे हैं। अल्लाह पाक सच्ची समझ नसीब करे, हमें ह़क़ को ह़क़ दिखाए और बात़िल को बात़िल।[6]

नेकी की दावत और बुराई से मुमानअ़त फ़लाह़ व कामरानी का एक उसूल **"नेकी की दावत देना और बुराई से मन्अ़ करना"** भी है। क़ुरआने करीम ने उम्मते मुह़म्मदिय्या से इस का तक़ाज़ा किया है कि और तुम में एक गिरौह ऐसा होना चाहिये जो भलाई की त़रफ़ बुलाएं और अच्छी बात का हुक्म दें और बुरी से मन्अ़ करें। फिर उन की फ़लाह़ को यूं बयान फ़रमाया कि येही लोग मुराद को पहुंचे।[7]

तक़्वा पर मुश्तमिल आमाल क़ुरआने करीम ने अल्लाह से डरने और तक़्वा इख़्तियार करने पर मुश्तमिल कई ऐसे आमाल का भी ज़िक्र फ़रमाया है जो फ़लाह़ो कामरानी का उसूल और ज़रीआ़ हैं जैसा कि सूद से बचने के बारे में फ़रमाया कि "ऐ ईमान वालो सूद दूना दून न खाओ और अल्लाह से डरो इस उम्मीद पर कि तुम्हें फ़लाह़ मिले"[8]

इसी त़रह़ सब्र करने, दुश्मनों से ज़ियादा सब्र करने और इस्लामी सरह़द की निगहबानी करने का हुक्म देते हुए तक़्वे का हुक्म दिया गया है, तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ ईमान वालो सब्र करो और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और सरह़द पर इस्लामी मुल्क की निगहबानी करो और अल्लाह से डरते रहो इस उम्मीद पर कि कामयाब हो।"[9]

यूंही सूरतुल माइदह में ईमान वालों को मुख़ात़ब कर के तक़्वे के साथ वसीला ढूडने और अल्लाह की राह में जंग करने का हुक्म दिया गया और इसे फ़लाह़ो कामरानी का ज़रीआ़ बताया गया।

इसी त़रह़ सूरतुत्तग़ाबुन में अल्लाह से डरने और ह़स्बे इस्तित़ाअ़त इ़बादत करने के साथ अल्लाह व रसूल की इत़ाअ़त करने, राहे ख़ुदा में ख़र्च करने और लालच से बचने को फ़लाह़ पाने का ज़रीआ़ बताया गया है जैसा कि : "तो अल्लाह से डरो जहां तक हो सके और फ़रमान सुनो और हुक्म मानो और अल्लाह की राह में ख़र्च करो अपने भले को और जो अपनी जान की लालच से बचाया गया तो वोही फ़लाह़ पाने वाले हैं"[10]

इसी त़रह़ सूरतुल माइदह में हर ह़ाल में ह़क़ ही को ह़क़ समझने की तरग़ीब दिलाई और इसे तक़्वे का ह़िस्सा फ़रमाया गया कि "सुथरा और गन्दा बराबर नहीं (यानी ह़लाल व ह़राम, नेक व बद, मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम और खरा खोटा एक दर्जे में नहीं हो सकता) अगर्चे तुझे गन्दे की कसरत भाए तो अल्लाह से डरते रहो ऐ अ़क़्ल वालो कि तुम फ़लाह़ पाओ।"[11]

शैत़ानी आमाल से बचना फ़लाह़ो कामरानी का एक उसूल शैत़ानी कामों से बचना भी है, क़ुरआने करीम ने शराब,

जूए, शिर्क और फ़ालनामों को शैत़ानी अ़मल क़रार देते हुए उन से बचने को लाज़िम और हुसूले फ़लाह़ का ज़रीआ़ बताया है। साथ ही येह भी बताया कि शैत़ान येही चाहता है कि शराब और जूए के ज़रीए़ तुम्हारे दरमियान दुश्मनी डलवा दे और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज़ से रोके,[12] और हम दुन्या में ऐसे कई वाक़िआ़त व ह़ादिसात जानते हैं कि जूए के बाइ़स ख़ुदकुशी और क़त्ल हो गए, शराब पी कर क़त्ल कर दिये, त़लाक़ दे दी, फ़साद किया, लड़ाई झगड़ा किया।

नेअ़मे इलाहिय्या का ज़िक्रो शुक्र करना क़ुरआने करीम ने सूरतुल आराफ़ में क़ौमे आ़द को मुख़ात़ब कर के अल्लाह की नेमतें याद करने और मुन्ई़मे ह़क़ीक़ी पर ईमान लाने, त़ाआ़त व इ़बादात बजा लाने और अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के एह़सान की शुक्र गुज़ारी करने का फ़रमाया है और इसे फ़लाहो़ कामयाबी का ज़रीआ़ बताया है।[13]

कुफ़्र के मुक़ाबिल साबित क़दमी और त़लबे मददे इलाही फ़लाह़ व कामयाबी का एक उसूल "ग़ैर मुस्लिमों के मुक़ाबले में साबित क़दम रहना और अल्लाह से मदद चाहना और ग़लबे की दुआ़एं करते हुए अल्लाह को बहुत याद करना" भी है इस उसूल से येह भी मालूम हुवा कि "इन्सान को हर ह़ाल में लाज़िम है कि वोह अपने क़ल्ब व ज़बान को ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रखे और किसी सख़्ती व परेशानी में भी इस से ग़ाफ़िल न हो।"[14]

नमाज़ और अ़मले सालेह़ (सिलए रह़मी व मकारिमे अख़्लाक़) नमाज़ सिर्फ़ फ़ातिह़ा और चन्द दुआ़एं पढ़ने और रुकूअ़ सुजूद करने का नाम नहीं बल्कि येह ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी व मालिके अज़ली के हुक्मे अ़ज़ीम की पैरवी और इ़बादात में से अ़ज़ीम इ़बादत है और फ़लाहे़ अबदी का मोतबर ज़रीआ़ है। क़ुरआने करीम में अल्लाह करीम ने अहले ईमान को बिल ख़ुसूस मुख़ात़ब कर के फ़रमाया कि "ऐ ईमान वालो ! रुकूअ़ और सज्दा करो और अपने रब की बन्दगी करो और भले काम करो इस उम्मीद पर कि तुम्हें छुटकारा हो।"[15] भले कामों में "सिलए रह़मी और मकारिमे अख़्लाक़ वग़ैरा नेकियां" शामिल हैं।[16]

ईमान के 7 अहम आमाल फ़लाह़ का वाज़ेह़ मुज़्दा पाने वाले अहले ईमान की अ़मली तअ़य्युन सूरतुल मोमिनून में तफ़्सीलन मिलती है और वाज़ेह़ होता है कि फ़लाह़ के उसूल व ज़राएअ़ कौन कौन से हैं, चुनान्चे इब्तिदा में फ़रमाया कि "बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले" इस के बाद इन ईमान वालों के उन आमाल का बयान फ़रमाया है जो फ़लाह़ का ज़रीआ़ बनते हैं चुनान्चे "नमाज़ों में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ अपनाना, बेहूदा बातों की जानिब इल्तिफ़ात न करना, ज़कात अदा करना, बदकारी से बचना, अमानत अदा करना, अ़हद पूरा करना और नमाज़ों की पाबन्दी करना" फ़लाह़ पाने के ज़राएअ़ हैं।[17]

शर्मो ह़या और पर्दा व इ़फ़्फ़त सूरतुन्नूर में मुसलमान मर्दों और औ़रतों को कुछ आमाल का हुक्म दिया गया है जिन के फ़लाह़ व कामरानी का ज़रीआ़ होने की बिशारत भी दी गई है उन आमाल में "ना मह़रम और ना जाइज़ व ह़राम देखने से बचने के लिये निगाहें नीची रखना, बदकारी से बचना, औ़रतों का अपनी ज़ेबो ज़ीनत और बनाव सिंघार, ना समझ बच्चों, अपने शौहर और मह़रम रिश्तों के इ़लावा सभी से छुपाना, चलने में पांव और ज़ेवर की आवाज़ न करना और अल्लाह करीम की बारगाह में तौबा करना" शामिल है।[18]

अल्लाह की ब कसरत याद अल्लाह करीम को ब कसरत याद करना भी फ़लाह़ व कामरानी का सबब व ज़रीआ़ बताया गया है, जैसा कि फ़र्ज़ नमाज़ के वक़्त नमाज़ अदा करने का हुक्म है और जब नमाज़ अदा कर चुको तो अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो यानी मआ़श के कामों में मश्ग़ूल हो या त़लबे इ़ल्म या इ़यादते मरीज़ या शिर्कते जनाज़ा या ज़ियारते उ़लमा और इस के मिस्ल कामों में मश्ग़ूल हो कर नेकियां ह़ासिल करो और इस के साथ साथ अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त को ख़ूब याद करो।[19]

फ़लाहो़ कामरानी के मज़ीद उसूल اِنْ شَآءَ اللہ अगले माह के शुमारे में शामिल करेंगे।

---

(1) تفسیر نعیمی، 1/117 (2) تاج العروس، 7/26، تحت "فلح" (3) پ1، البقرۃ: 2 تا 5 (4) خزائن العرفان (5) پ2، البقرۃ:189 (6) تفسیر نعیمی، 2/261 (7) پ4، اٰل عمرٰن:104 (8) پ4، اٰل عمرٰن:130 (9) پ4، اٰل عمرٰن:200 (10) پ28، التغابن:16 (11) خزائن العرفان پ7، المآئدۃ:100، (12) پ7، المآئدۃ:90، 91 (13) پ8، الاعراف:69 (14) خزائن العرفان پ10، الانفال:45، (15) پ17، الحج:77 (16) خزائن العرفان، پ17، الحج:77 (17) پ18، المؤمنون: 1 تا 10 (18) پ18، النور:31 (19) پ28، الجمعۃ:9، 10۔

लो मदीने का फूल लाया हूं मैं ह़दीसे रसूल लाया हूं
(अज़् अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

अपनी जान, माल और आल को बद्दुआ न दो !

मुस्लिम शरीफ़ में है : मुह़म्मदे अ़रबी, मक्की मदनी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

لَا تَدْعُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ وَلَا تَدْعُوْا عَلٰۤى
اَوْلَادِكُمْ وَلَا تَدْعُوْا عَلٰۤى اَمْوَالِكُمْ لَا تُوَافِقُوْا مِنَ اللّٰهِ سَاعَةً
يُسْاَلُ فِيْهَا عَطَآءٌ فَيَسْتَجِيْبُ لَكُمْ

तर्जमा : अपनी जानों पर बद्दुआ़ न करो और अपनी औलाद पर बद्दुआ़ न करो और अपने अम्वाल पर बद्दुआ़ न करो कि इत्तिफ़ाक़न येह वोह घड़ी हो जिस में तुम रब से जो मांगो वोह तुम्हें दे दे।[1]

शर्हे ह़दीस

येह नसीह़त आमोज़ कलिमात एक त़वील और सह़ीह़ ह़दीस शरीफ़ का जुज़्व है। इस के रावी ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ عَنْهُ ज़िक्र करते हैं कि एक सफ़र में एक अन्सारी के ऊंट ने सरकशी की तो उस ने ऊंट पर लानत भेजी, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे ऊंट से उतर जाने का हुक्म देते हुए फ़रमाया : فَلَا تَصْحَبْنَا بِمَلْعُوْنٍ और हमारे साथ **"मलऊ़न"** जानवर को न रखो। फिर अपनी जान, औलाद और माल वग़ैरा पर बद्दुआ़ से मन्अ़ फ़रमाया जिस के अल्फ़ाज़ शुरूअ़ में नक़्ल किये गए हैं। यूं अन्सारी का अपने ऊंट पर लानत करना इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सबब बना।[2]

दो चीज़ों की मुमानअ़त

क़ारिईन ! नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم को हुस्ने अख़्लाक़, अच्छी बात करने और बुरी बात से बचने की तरबिय्यत फ़रमाया करते थे। इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में बुन्यादी त़ौर पर दो चीज़ों की मुमानअ़त की गई है, 1 जानवरों पर लानत करना 2 अपनी जान, माल, आल वग़ैरा को बद्दुआ़ देना।

लानत करने का मत़लब और शरई हुक्म

लानत का माना है : रह़मते इलाही से दूरी की दुआ़ करना।[3] इमामे अहले सुन्नत, आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : किसी मुसलमान पर लानत न करे और उसे मर्दूद व मलऊ़न न कहे और जिस काफ़िर का कुफ़्र पर मरना यक़ीनी नहीं उस पर भी नाम ले कर लानत न करे, यहां तक कि बाज़ उ़लमा के नज़्दीक मुस्तह़िक़े लानत पर भी लानत न कहे, यूं ही मच्छर और हवा और जमादात व हैवानात पर भी लानत मम्नूअ़ है।[4]

अपनी जान, माल और आल वग़ैरा को बद्दुआ देना

मत़लब येह है कि ग़ुस्से या जोश में अपनी जान, औलाद को न कोसो और अपने अम्वाल (जानवर, ग़ुलाम, जाईदाद, ज़मीन वग़ैरा) की तबाही व हलाकत की दुआ न कर बैठो कि कहीं येह क़बूलिय्यत की घड़ी न हो। इमाम अ़ब्दुल वहहाब शअ़रानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه जब किसी जानवर पर सुवार होते, अगर वोह लड़खड़ाता तो आप उसे मारते नहीं थे और न ही बद्दुआ देते।(5) इस ह़दीस शरीफ़ में उन लोगों के लिये दावते इब्रत है जो बात बात पर अपने आप या औलाद को कोसने और बद्दुआओं के आ़दी होते हैं, मसलन : ❁ मैं कोढ़ी हो कर मरूं (مَعَاذَ الله) ❁ तू ज़लील हो जाए ❁ तू ख़ुशी को तरस जाए ❁ तुझे सांप काटे ❁ तेरे हाथ पांव टूट जाएं ❁ तेरी गर्दन कटे ❁ तू कुत्ते की मौत मरे ❁ तू अन्धा हो जाए ❁ तेरा एक्सीडन्ट हो जाए ❁ तुझे कभी औलाद न मिले ❁ तेरी औलाद भी ना फ़रमान निकले ❁ तुम दाने दाने को तरसो ❁ ऐसी फ़स्ल को आग लगे ❁ तेरी लाश को कुत्ते खाएं ❁ तुझे गोली लगे। ! पहले मां या बाप ग़ुस्से की शिद्दत में लम्बी चौड़ी बद्दुआएं देते हैं फिर अगर कोई ऐसा ह़ादिसा हो जाए तो फिर सर पकड़ कर रोते हैं।(6)

क्या मां बाप की औलाद के लिये बद्दुआ क़बूल होती है ?

इस ह़वाले से दो क़िस्म की ह़दीसें मौजूद हैं, एक रिवायत तिर्मिज़ी शरीफ़ में नक़्ल की गई है कि ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन दुआएं बेशक मक़्बूल हैं : दुआ मज़्लूम की और दुआ मुसाफ़िर की और बाप का अपनी औलाद को कोसना।(7) और दूसरी रिवायत दैलमी की है कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक मैं ने अल्लाह पाक से सुवाल किया कि किसी प्यारे की प्यारे पर बद्दुआ क़बूल न फ़रमाए।(8)

अ़ल्लामा शम्सुद्दीन सख़ावी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इसे लिख कर फ़रमाते हैं : सह़ीह़ ह़दीसों से साबित कि औलाद पर मां बाप की बद्दुआ रद्द नहीं होती तो इस ह़दीस को इन से ततबीक़ देनी चाहिये।

अ़ल्लामा सख़ावी की इबारत के तह़त आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه लिखते हैं : दुआ 2 त़ौर पर होती है : **एक** येह कि दाई (यानी दुआ करने वाले) का क़ल्ब ह़क़ीक़तन इस का येह ज़रर (नुक़्सान) नहीं चाहता, यहां तक कि अगर (नुक़्सान) वाक़ेअ़ हो तो ख़ुद सख़्त सदमे में गिरिफ़्तार हो। जैसे : मां बाप ग़ुस्से में अपनी औलाद को कोस लेते हैं मगर दिल से उस का मरना या तबाह होना नहीं चाहते और अगर ऐसा हो तो उस पर उन से ज़ियादा बे चैन होने वाला कोई न होगा। दैलमी की ह़दीस में इसी क़िस्मे बद्दुआ के लिये वारिद कि ह़ुज़ूर रऊफ़ुर्रह़ीम रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस का मक़्बूल न होना अल्लाह पाक से मांगा। नज़ीर इस की वोह ह़दीस सह़ीह़ है कि ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़र्ज़ की : "इलाही ! मैं बशर हूं बशर की त़रह़ ग़ज़ब फ़रमाता हूं तो जिसे मैं लानत करूं या बद्दुआ दूं उसे तू उस के ह़क़ में कफ़्फ़ारा व अज्र व बाइसे त़हारत कर।"

दूसरे इस के ख़िलाफ़ कि दाई का दिल ह़क़ीक़तन इस से बेज़ार और उस के इस ज़रर का ख़्वास्तगार (उम्मीद वार) है और येह बात मां बाप को مَعَاذَ الله उसी वक़्त होगी जब औलाद अपनी शक़ावत से अ़क़ूक़ को (यानी ना फ़रमानी व सरकशी को) इस दरजए ह़द से गुज़ार दे कि उन का दिल वाक़ेई इस की त़रफ़ से सियाह हो जाए और अस्लन मह़ब्बत नाम को न रहे बल्कि अ़दावत आ जाए। मां बाप की ऐसी ही बद्दुआ के लिये (नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं कि रद्द नहीं होती।(9)

क़ुरआनी तालीमात

अपनी जान, माल और आल वग़ैरा को बद्दुआ न दी जाए, इस ह़वाले से क़ुरआने पाक भी हमारी राहनुमाई करता है। पारह 15 में है :

﴿وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ۱۱﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और आदमी बुराई की दुआ करता है जैसे भलाई मांगता है और आदमी बड़ा जल्द बाज़ है।(10)

तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में है : अपने लिये और अपने घर वालों के लिये और अपने माल के लिये और अपनी औलाद के लिये और ग़ुस्से में आ कर उन सब को कोसता है और उन के लिये बद्दुआएं करता है। अगर अल्लाह पाक उस की येह बद्दुआ क़बूल कर ले तो वोह शख़्स या उस के अह्लो माल हलाक हो जाएं लेकिन अल्लाह पाक अपने फ़ज़्लो करम से उस को क़बूल नहीं फ़रमाता।[11]

मां बाप की ख़िदमत में अहम गुज़ारिशात

मां बाप अपने दिल के चैन, आंख के नूर और जिगर के टुक्ड़े को बद्दुआएं क्यूं देते हैं ? इस का एक सबब इस्लामी मालूमात में कमी और तरबिय्यत का न होना है कि हम ने क्या दुआ करनी है और कौन सी नहीं करनी।

1 येह भी मुआशरती ह़क़ीक़त है कि थोड़ा बहुत इल्म रखने वाले मां बाप को अपने हुक़ूक़ तो याद आ जाते हैं लेकिन औलाद के भी उन पर कुछ हुक़ूक़ होते हैं ! येह पता नहीं होता। बहर ह़ाल औलाद के हुक़ूक़ में से येह भी है कि उसे कोसने न दिये जाएं : आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَیْه लिखते हैं : मौक़अ़ पर चश्म नुमाई, तम्बीह, तहदीद करे (मुनासिब मौक़ेअ़ पर समझाए और नसीह़त करे) मगर कोसना (बद्दुआ) न दे कि उस का कोसना उन के लिये सबबे इस्लाह़ न होगा बल्कि और ज़ियादा इफ़्साद (बिगाड़) का अन्देशा है।[12]

2 इस इ़बारत की रौशनी में ग़ौर कीजिये कि औलाद का भी दिल होता है, वोह एह़सासात रखते हैं, अगर उन का येह ज़ेह्न बन गया कि मेरी मां या बाप का मुझे बद्दुआएं देने के इलावा कोई काम नहीं तो वोह बद गुमान हो कर मज़ीद बिगड़ सकती है। इस लिये बेटा या बेटी ग़लत़ी कर बैठे तो दरगुज़र कीजिये कि वोह कम तजरिबाकार और ना समझ हैं और उन्हें नर्मी, मह़ब्बत और शफ़्क़त से समझाइये तो वोह दिल से आप की बात पर अ़मल करने के लिये तय्यार हो जाएंगे। اِنْ شَآءَ اللّٰه

3 औलाद की त़रफ़ से तक्लीफ़ या परेशानी पहुंचने पर मां बाप के लिये एक मुफ़ीद रास्ता येह भी है गुस्सा करने के बजाए सब्र करें और सवाबे आख़िरत कमाएं। नीज़ येह भी सोचना चाहिये कि अगर वोह बद्दुआ इस लिये दे रहे हैं कि औलाद घबरा कर बुरे काम से बाज़ आ जाए तो येह मक़्सद उन के ह़क़ में ह़स्बे ह़ाल दुआए ख़ैर कर के भी ह़ासिल हो सकता है कि या अल्लाह ! मेरी औलाद को गुनाहों से बचा, उन को नेक व परहेज़गार और बा अदब बना, उन्हें हमारे हुक़ूक़ पहचानने की तौफ़ीक़ दे, हमारी दिल आज़ारी कर के सदमा पहुंचाने से बचा, हमारी वज्ह से उन्हें आख़िरत में अ़ज़ाब न देना, उन्हें अच्छी सोह़बत नसीब फ़रमा, उन्हें मोह़ताजी की ज़िल्लत से बचाना इ़ज़्ज़त वाली ह़लाल रोज़ी अ़त़ा फ़रमाना, ह़राम से बचाना। कुछ अच्छी दुआएं ना फ़रमान औलाद के सामने भी अच्छी निय्यत से की जा सकती हैं, शायद येह दुआएं सुन कर वोह नादिम हों कि मैं अपनी मां या बाप को कितना सताता हूं लेकिन येह फिर भी मेरे लिये ख़ैर की दुआएं कर रहे हैं !! यूं वोह नेकी के रास्ते पर आ जाए।

4 मां बाप को चाहिये कि पहले तवक्कुल और तफ़्वीज़ का वस्फ़ अपनाएं फिर औलाद को सुधारने की तदबीरें कीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه आप की मुराद पूरी होगी। (तवक्कुल व तफ़्वीज़ की तफ़्सीली मालूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब **"तवक्कुल"** पढ़ना मुफ़ीद है।)

5 औलाद को कोसना तंगदस्ती का सबब भी बन सकता है, चुनान्चे अ़ल्लामा ज़रनूजी رَحْمَةُ اللهِ عَلَیْه ने तंगदस्ती के 44 अस्बाब में एक येह भी लिखा : अपनी औलाद को कोसनें देना।[13] ग़ौर कर लीजिये कहीं आप की तंगदस्ती का सबब येह तो नहीं ?

औलाद भी संभल जाए

अपने वालिदैन को किसी भी त़रह़ से सताने वाले ख़बरदार हो जाएं कि अगर मां या बाप में से किसी ने दुखी दिल से आप के ख़िलाफ़ बद्दुआ कर दी तो आप कहीं के न

रहेंगे। अभी भी वक़्त है तौबा कर के उन से मुआफ़ी मांग लीजिये, वरना आप को पछताना पड़ सकता है।

सोशल मीडिया पर ऐसे नौजवानों की दास्तानें बिखरी पड़ी हैं जिन्हें मां बाप की बद्दुआएं ले बैठीं। मसलन एक नौजवान ने लिखा : जब मेरी अम्मी ने मुझे येह बद्दुआ दी थी कि "ख़ुदा करे तू कभी कामयाब न हो" जब से अब तक मुझे नौकरी नहीं मिल रही है। ◎ येह वाक़िआ भी किसी ने शेयर किया : एक मां अपने बेटे पर नाराज़ हुई तो अपने हाथ आस्मान की त़रफ़ बुलन्द कर के कहा जा तुझे अल्लाह कभी भी बेटे ना दे। अल्लाह पाक का करना ऐसा हुवा कि उस की यके बाद दीगरे छे बेटियां पैदा हुईं और वोह बेटे की नेमत से मह़रूम रहा। इस त़रह़ की कई मिसालें आप को अपने जानने वालों में मिल जाएंगी।

जब कि ऐसों की स्टोरीज़ भी मौजूद हैं जो अपनी ख़ुशह़ाली और सुकून को मां बाप की दुआओं का नतीजा क़रार देते हैं, ◎ एक शख़्स का कहना है : मेरा एक अ़ज़ीज़ ज़ियादा पढ़ा लिखा भी नहीं था, उस का एक बहुत ही छोटा सा कारोबार था मगर साफ़ सुथरा घर, मिसाली बीवी और खेलते कूदते प्यारे प्यारे बच्चे। एक दिन मैं ने ह़ैरत से उस की पुर सुकून ज़िन्दगी का राज़ पूछा तो कहने लगा : येह सब मेरी मां की दुआओं का नतीजा है, जब मेरी मां ह़यात थी और मैं घर जाता तो जाते ही अपनी मां के सर पर बोसा देता, वोह मुझे दुआ देती अल्लाह तेरे सर को हमेशा बुलन्द रखे। लगता है येही सबब है कि मैं उस दुआ के त़ुफ़ैल आज बरकतों के ह़िसार में घिरा रहता हूं। ◎ एक शख़्स ने लिखा : मैं एक ऐसे कारोबारी शख़्स को भी जानता हूं जो इस दुन्या के अमीर तरीन लोगों में से एक है। उस ने एक दिन ख़ुद मुझे बताया था मेरी सारी तरक़्क़ी और मालो दौलत के पीछे मेरी वालिदैन से मह़ब्बतो अ़क़ीदत, उन की रिज़ा और दुआएं हैं।

किसी ने पंजाबी में शेर कहा है :

तुपां दानए डर मेनूं छावां मेरे नाल नीं
लोको मेरी मां दियां दुआवां मेरे नाल नीं

(यानी मुझे धूप का क्या डर मेरी मां का आंचल मेरी छांव है, ऐ लोगो ! मेरी मां की दुआएं मेरे साथ हैं)

अल्लाह पाक हमें इस्लामी तालीमात पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

(1)مسلم، ص1226، حدیث:7515(2)مسلم، ص1226، حدیث:7515
(3)دیکھئے: مراٰۃ المناجیح،8/73(4)فضائل دعا، ص188(5)المنن الکبریٰ،
ص577(6)دیکھئے: مراٰۃ المناجیح، 3/294(7)ترمذی، 5/280، حدیث:
3459(8)مسند الفردوس، 1/52، حدیث189(9)فضائل دعا، ص213،
214(10)پ15، بنی اسرائیل:11(11)تفسیر خزائن العرفان، ص527
(12)اولاد کے حقوق، ص25(13)تعلیم المتعلم طریق التعلم، ص125۔

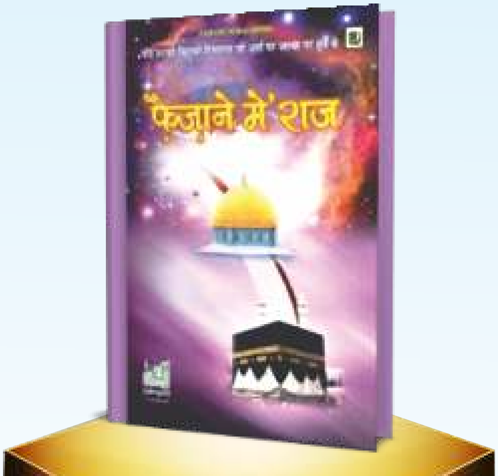

वाक़िअ़ए मेराज के बारे में तफ़्सील से जानने के लिये आज ही मक्तबतुल मदीना से किताब **"फ़ैज़ाने मेराज"** ह़ासिल कीजिये या दावते इस्लामी की वेब साइट के ज़रीए़ डाउनलोड कीजिये।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बीमारों और परेशान हालों के साथ अन्दाज़े महब्बत

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अल्लाह की मख़्लूक़ से बहुत महब्बत फ़रमाई है, मख़्लूक़ से महब्बत फ़रमाने के बहुत सारे अन्दाज़ हमें सीरते मुस्तफ़ा में मिलते हैं, येही वोह अन्दाज़ हैं जो ज़ख़्मों के लिये मरहम, बीमारी के लिये दवा और बे क़रार रूह के लिये तस्कीन का बाइस हैं। करीम आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के करम नवाज़ी वाले अन्दाज़ को पढ़ना भी बहुत बा बरकत है कि येह अन्दाज़ हमें बताते हैं कि तक्लीफ़ में राहत व सुकून इस अन्दाज़ से पहुंचाया जाता है, रंजो मलाल में गिरिफ़्तार को ढारस यूं बन्धाई जाती है और मुफ़्लिस व परेशान हालों की बे चैनी व इज़्तिराब इस तरह से ख़त्म किया जाता है।

मरीज़ों के साथ अन्दाज़े मुस्तफ़ा की चन्द झल्कियां

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक अन्दाज़ येह भी था कि आप दुन्या की परेशानी आने पर आख़िरत की आसानी और राहत, सुकून और आराम की ख़ुश ख़बरी सुना कर ढारस बन्धाते। चुनान्चे आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब कोई बन्दा बीमार होता है या सफ़र करता है तो उस के वोह आमाल लिखे जाते हैं जो वोह क़ियाम और सेहत व तन्दुरुस्ती की हालत में करता था।[(1)]

आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुसलमान पर आने वाली बड़ी छोटी आज़्माइश पर येह अज्र बयान फ़रमाया : कोई भी मुसीबत जो मुसलमान पर आती है, अल्लाह ज़रूर उस के साथ उस के गुनाह मिटा देता है हत्ता कि वोह कांटा जो उसे चुभता है वोह भी कफ़्फ़ारा बन जाता है।[(2)]

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को मख़्लूक़े ख़ुदा पर शफ़्क़त व मेहरबानी करने की यूं तालीम दी : بَشِّرُوْا وَلَا تُنَفِّرُوْا यानी ख़ुश ख़बरी सुनाओ और (लोगों को) नफ़रत न दिलाओ।[(3)]

रहमते आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बीमारों और परेशान हालों के पास ख़ुद तशरीफ़ ले जाते और उन को तसल्ली देते चुनान्चे

1 हज़रते उम्मे अ़ला رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا बीमार हुईं तो रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ उम्मे अ़ला ! ख़ुश हो जाओ कि जैसे आग सोने चांदी का मैल (खोट) दूर करता है ऐसे ही अल्लाह पाक बीमारी के ज़रीए मुसलमान की ख़ताएं बख़्श देता है।[(4)]

2 आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मरीज़ की इयादत की और उस से फ़रमाया : तुझे बिशारत हो कि अल्लाह पाक फ़रमाता है : येह (यानी बुख़ार) मेरी आग है इस लिये मैं इसे अपने मोमिन बन्दे पर दुन्या में मुसल्लत़ करता हूं ताकि क़ियामत के दिन उस की आग का हिस्सा (यानी बदला) हो जाए।[(5)]

रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने किसी ऐसे मरीज़ की इयादत की जिस की मौत का वक़्त क़रीब न आया हो और सात मरतबा येह अल्फ़ाज़ कहे तो अल्लाह पाक उसे उस मरज़ से शिफ़ा अ़ता फ़रमाएगा :

اَسْئَلُ اللّٰہَ الْعَظِیْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ اَنْ یَّشْفِیَکَ

यानी मैं अ़ज़मत वाले, अ़र्शे अ़ज़ीम के मालिक अल्लाह से तेरे लिये शिफ़ा का सुवाल करता हूं।[6]

3 रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब मरीज़ खाने की ख़्वाहिश करे तो उसे खिला दो।[7] येह हुक्म उस वक़्त है कि खाने की ख़्वाहिश सच्ची हो।[8]

4 रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अन्दाज़ के ज़रीए बीमारी के दौरान और इस के बाद खाने और परहेज़ से मुतअ़ल्लिक़ भी राहनुमाई फ़रमाई चुनान्चे उम्मे मन्ज़र बिन्ते क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रिवायत है, कहती हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मअ़ ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ मेरे यहां तशरीफ़ लाए। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को नक़ाहत थी यानी बीमारी से अभी अच्छे हुए थे, मकान में खजूर के ख़ोशे लटक रहे थे, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन में से खजूरें तनावुल फ़रमाईं। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने खाना चाहा, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को मन्अ़ किया और फ़रमाया : तुम नक़ीह हो। (यानी अभी अभी मरज़ से उठे हो लिहाज़ा नुक़्सान देह गिज़ाओं से बचना अभी ज़रूरी है) आप कहती हैं : मैं जव और चुक़न्दर पका कर ले आई, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से फ़रमाया : इस में से लो कि येह तुम्हारे लिये नाफ़ेअ़ है।[9] इस ह़दीस से मालूम हुवा कि मरीज़ को परहेज़ करना चाहिये जो चीज़ें उस के लिये मुज़िर (नुक़्सान देह) हैं उन से बचना चाहिये।[10]

5 हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बीमार के लिये तल्बीना तज्वीज़ करते हुए इरशाद फ़रमाया : तल्बीना बीमार के दिल के लिये राह़तो सुकून है, येह बाज़ रंज को दूर करता है।[11]

6 रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मरीज़ को ज़बरदस्ती खिलाने से मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया : मरीज़ों को खाने पर मजबूर न करो, कि उन को अल्लाह पाक खिलाता पिलाता है।[12]

7 रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दवा के साथ इलाज के दूसरे अस्बाब इख़्तियार करने की भी तालीम दी चुनान्चे आप ने फ़रमाया : नज़रे बद और ज़हरीले जानवर के काटने में **"झाड़ फूंक"** है।[13] यानी इन दोनों में ज़ियादा मुफ़ीद है।[14] रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नज़रे बद से झाड़ फूंक कराने का हुक्म फ़रमाया है।[15] ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के घर में एक लड़की थी जिस के चेहरे में ज़र्दी थी। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उसे झाड़ फूंक कराओ, क्यूंकि उसे नज़र लग गई है।[16]

8 रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अन्दाज़े करीमाना मौत की सख़्तियों में तसल्ली व ढारस का काम देते चुनान्चे ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ का आख़िरी वक़्त आया तो आप रोने लगे और चेहरा दीवार की त़रफ़ कर लिया, आप के बेटे ने अ़र्ज़ की : अब्बू ! क्या अल्लाह के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को फ़ुलां ख़ुश ख़बरी नहीं दी ? क्या अल्लाह के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को फ़ुलां बिशारत नहीं सुनाई ? येह सुन कर आप ने अपना चेहरा उन की त़रफ़ कर के फ़रमाया : हमारी तय्यारी में जो सब से अफ़्ज़ल चीज़ है वोह لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ की गवाही है।[17]

आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मरीज़ की इयादत से मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया : जो किसी मरीज़ की इयादत करता है या अल्लाह पाक के लिये अपने किसी मुसलमान भाई से मिलने जाता है तो एक मुनादी उसे मुख़ात़ब कर के कहता है : ख़ुश हो जा क्यूंकि तेरा येह चलना मुबारक है और तू ने जन्नत में अपना ठिकाना बना लिया है।[18]

परेशान ह़ालों के साथ अन्दाज़े मुस्त़फ़ा की चन्द झल्कियां

1 जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा होते तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की एक तादाद ह़ाज़िरे ख़िदमत होती, ह़ाज़िर होने वाले सह़ाबा में एक वोह सह़ाबी भी थे जिन का एक छोटा बच्चा था। वोह बच्चा इस मौक़ेअ़ पर उन के पीछे से आता और उन के सामने आ कर बैठ जाता। एक मौक़ेअ़ पर रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया : क्या तुम इस से मह़ब्बत रखते हो ? अ़र्ज़ की : अल्लाह पाक आप से ऐसे ही मह़ब्बत करे जैसे इस से मैं मह़ब्बत करता हूं। उस बच्चे का इन्तिक़ाल हुवा तो इस ग़म की वज्ह से वोह उस ह़ल्क़े में ह़ाज़िर न हो सके तो

रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या बात है कि मुझे फ़ुलां नज़र नहीं आ रहे ? लोगों ने जब बताया कि उन के बच्चे का इन्तिक़ाल हो चुका है तो आप उन के यहां तशरीफ़ ले गए, उस बच्चे के बारे में पूछा, जब उन सह़ाबी ने अपने लख़्ते जिगर के इन्तिक़ाल के बारे में बताया तो आप ने उन से ताज़ियत की और फ़रमाया : ऐ फ़ुलां ! तुझे उस (दुन्या से रुख़्सत होने वाले बच्चे) से ज़िन्दगी में फ़ाएदा उठाना पसन्द था या (येह अच्छा लगेगा कि) कल (बरोज़े क़ियामत) जब तू जन्नत के दरवाज़ों में से किसी एक पर जाए तो उसे वहां पाए, वोह उस दरवाज़े को तेरे लिये खोले ? अ़र्ज़ की : ऐ अल्लाह के नबी ! बल्कि वोह मुझ से पहले जन्नत के दरवाज़े पर जाए और उसे मेरे लिये खोले येह मुझे ज़ियादा मह़बूब है। फ़रमाया : तेरे लिये येही है।(19)

2 ह़ज़रते अबू सालबा अशजई رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे दो बच्चे ह़ालते इस्लाम में इन्तिक़ाल कर गए हैं। फ़रमाया : जिस के दो बच्चे इस्लाम की ह़ालत में फ़ौत हो गए अल्लाह पाक उन बच्चों पर अपने फ़ज़्ल और रह़मत की वज्ह से उस शख़्स को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। ह़ज़रते अबू सालबा अशजई رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : बाद में जब मेरी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से मुलाक़ात हुई तो आप ने मुझ से पूछा : क्या आप वोही हैं जिस ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दो बच्चों के बारे में अ़र्ज़ किया था ? मैं ने जवाब दिया : जी हां ! तो आप ने कहा : अगर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह बिशारत मुझे सुनाई होती तो येह मुझे ह़िम्स और फ़िलिस्त़ीन की ह़ुकूमत से ज़ियादा पसन्द होती।(20)

3 ह़ज़रते सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! सब से ज़ियादा मुसीबतें किन लोगों पर आईं ? फ़रमाया : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام पर फिर उन के बाद जो लोग बेहतर हैं फिर उन के बाद जो बेहतर हैं, बन्दे को उस की दीनदारी के एतिबार से मुसीबत में मुब्तला किया जाता है, अगर वोह दीन में सख़्त होता है तो उस की आज़्माइश भी सख़्त होती है और अगर वोह अपने दीन में कमज़ोर होता है तो अल्लाह पाक उस की दीनदारी के मुत़ाबिक़ उसे आज़्माता है। बन्दा मुसीबत में मुब्तला होता रहता है यहां तक कि दुन्या ही में उस के सारे गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।(21)

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुसीबत व आज़्माइश की सूरत में हमारी इन अह़ादीस के ज़रीए़ तरबिय्यत फ़रमाई :

1 बड़ा सवाब बड़ी बला के साथ मिलता है अल्लाह पाक जब किसी क़ौम से मह़ब्बत करता है तो उन्हें आज़्माता है जो राज़ी होता है उस के लिये रिज़ा है और जो नाराज़ होता है उस के लिये नाराज़ी है।(22) ह़दीस का येह मत़लब नहीं कि अगर काफ़िर व बदकार पर बड़ी बला आ जाए तो उस का दरजा बड़ा हो गया, येह सब कुछ मोमिन के लिये है, मुर्दे को बेहतरीन दवाएं देना बेकार है, जड़ कटे दरख़्त की शाख़ों को पानी देना बे सूद, अगर काफ़िर उ़म्र भर भी मुसीबत में रहे, जब भी दोज़ख़ी है और अगर मोमिने सालेह़ उ़म्र भर आराम में रहे जब भी जन्नती। हां तक्लीफ़ वाले मोमिन के दरजा ज़ियादा होंगे बशर्ते कि साबिर और शाकिर रहे। ख़याल रहे कि रिज़ा या नाराज़ी दिल का काम है, लिहाज़ा तक्लीफ़ में हाए वाए करना उस के दफ़्अ़ की कोशिश करना या मरीज़ व मज़्लूम का ह़कीम व ह़ाकिम के पास जाना नाराज़ी की अ़लामत नहीं, नाराज़ी येह है कि दिल से समझे कि रब ने मुझ पर ज़ुल्म किया, मैं इस बला का मुस्तह़िक़ न था यहां सूफ़िया फ़रमाते हैं कि बन्दे की रिज़ा रब की रिज़ा के बाद है पहले अल्लाह बन्दे से राज़ी होता है तो बन्दा रब से राज़ी हो कर अच्छे आमाल की तौफ़ीक़ पाता है।(23)

2 मोमिन के मुआ़मले पर तअ़ज्जुब है कि उस का सारा मुआ़मला भलाई पर मुश्तमिल है और येह सिर्फ़ मोमिन के लिये है जिसे ख़ुशह़ाली ह़ासिल होती है तो शुक्र करता है क्यूंकि उस के ह़क़ में येही बेहतर है और अगर तंगदस्ती पहुंचती है तो सब्र करता है तो येह भी उस के ह़क़ में बेहतर है।(24)

सुकून व तसल्ली पाने के लिये फ़रमाने मुस्त़फ़ा सुनने का सिलसिला भी जारी था चुनान्चे ह़ज़रते अबू ह़स्सान رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से अ़र्ज़

किया : मेरे दो बच्चे मर चुके हैं, क्या आप मुझे रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कोई ऐसी ह़दीस नहीं सुनाएंगे जो हमें अपने मुर्दों के बारे में मुत़मइन कर दे ? फ़रमाया : हां ! सुनाता हूं, वोह बच्चे बिला रोक टोक जन्नत में जहां चाहेंगे चले जाया करेंगे । उन में से जब कोई बच्चा अपने वालिद या वालिदैन से मिलेगा तो उन के कपड़े या हाथ को ऐसे पकड़ेगा जैसे मैं ने तुम्हारे कपड़ों के दामन को पकड़ रखा है और उसे उस वक़्त तक न छोड़ेगा जब तक कि अल्लाह पाक उस के वालिद को जन्नत में दाख़िल न फ़रमा दे ।(25)

मरीज़ों और परेशान ह़ालों से मुतअ़ल्लिक़ अन्दाज़े मुस्त़फ़ा ह़दीस की किताबों में मौजूद हैं, जो लोग दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से वाबस्ता हैं, सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत करते हैं, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मदनी मुज़ाकरों में ह़ाज़िर होते हैं, क़ाफ़िलों में सफ़र करते हैं, नेक आमाल का रिसाला फ़िल करते हैं, F.G.N चैनल के प्रोग्राम्ज़ देखते हैं और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ होने वाला लिट्रेचर पढ़ते हैं उन को येह अन्दाज़े मुस्त़फ़ा सीखना और उन पर अ़मल करना नसीब होता है, आप भी कोशिश कीजिये कि अन्दाज़े मुस्त़फ़ा का इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये इन तमाम ज़राएअ़ को इख़्तियार करें । अल्लाह करीम हमें सीरते मुस्त़फ़ा पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

(1) بخاری، 2/308، حدیث: 2996 (2) بخاری، 4/3، حدیث: 5640 (3) بخاری، 1/42، حدیث: 69 (4) ابوداؤد، 3/247، حدیث: 3092 (5) ابنِ ماجہ، 4/105، حدیث: 3470 (6) ابو داؤد، 3/251، حدیث: 3106 (7) ابن ماجہ، 4/89، حدیث: 3440 (8) بہار شریعت، 5/501 (9) ابوداؤد، 4/5، حدیث: 3856 (10) بہار شریعت، 5/501 (11) بخاری، 3/532، حدیث: 5417 (12) ترمذی، 4/5، حدیث: 2047 (13) ترمذی، 4/12، حدیث: 2064 (14) بہار شریعت، 5/501 (15) بخاری، 4/31، حدیث: 5738 (16) بخاری، 4/31، حدیث: 5739 (17) مسلم، ص70، حدیث: 321 (18) ترمذی، 3/406، حدیث: 2015 (19) نسائی، ص351، حدیث: 2085، مسند احمد، 8/303 (20) مسند احمد، 10/348، حدیث: 27289 (21) ابن ماجہ، 4/369، حدیث: 4023 (22) ترمذی، 4/178، حدیث: 2404 (23) مراٰۃ المناجیح، 2/422 (24) مسلم، ص1222، حدیث: 7500 (25) مسلم، ص1086، حدیث: 6701۔

शबे मेराज के ग़मगीन पहलू

तारीख़े इस्लाम में वोह रात भी अ़जब शान रखती है जिस को शबे मेराज कहते हैं। येही वोह रात है जिस में सरवरे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ुदा की जानिब से वोह मर्तबा ह़ासिल हुवा जिस की मिसाल अम्बिया व रुसुल में भी नहीं मिलती।

इस शबे मुक़द्दसा व मुबारका में नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा तक और मस्जिदे अक़्सा से मक़ामे क़ाबा क़ौसैन तक सैर करवाई गई। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तमाम अ़जाइबाते अर्ज़ी व समावी का मुशाहदा फ़रमाया। जन्नत की नेमतों और दोज़ख़ के अ़ज़ाबात को देखा और मक़ामे क़ाबा क़ौसैन में जमालो जलाले ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस का नज़ारा किया।

सफ़रे मेराज के दौरान एक मौक़अ़ ऐसा भी आया जब आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़मगीन हो गए और वोह मौक़अ़ तब आया कि जब आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस अहम व अ़ज़ीम सफ़र में जन्नत व दोज़ख़ के मुशाहदे के साथ मुख़्तलिफ़ गुनाहगारों के अह़वाल भी दिखाए गए। वोह अ़ज़ाबात क्या थे ?, किन लोगों को और क्यूं हो रहे थे ? येह इस मज़्मून में हम आप को बताएंगे।

दोज़ख़ का मुआ़इना

इमाम बैहक़ी लिखते हैं कि जाने दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मेराज की रात सातों आस्मानों, सिद्रतुल मुन्तहा, अ़र्शे इलाही, ला मकां और जन्नत की सैर करवाने के बाद जहन्नम का मुआ़इना करवाया गया, वोह इस त़रह़ कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जन्नत में ही मौजूद थे और जहन्नम से पर्दा हटा दिया गया जिस से आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के सातों त़ब्क़ात को मुलाह़ज़ा फ़रमाया फिर आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से उसे बन्द कर दिया गया और आप वापस सिद्रतुल मुन्तहा पर तशरीफ़ ले गए जहां से वापसी का सफ़र शुरूअ़ हुवा।[1]

मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाबात का मुशाहदा

आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शबे मेराज जहन्नमियों के जो दर्दनाक अ़ज़ाबात देखे उन में से चन्द अपनी उम्मत को तरहीब (यानी डर सुनाने) के लिये बयान कर दिये ताकि उम्मती अ़ज़ाबात सुन कर नेक और अच्छे आमाल के ज़रीए़ जहन्नम से बचने की तदाबीर करें।

तारिके नमाज़ की सज़ा

ईमान लाने के बाद नमाज़ तमाम तर फ़राइज़ में निहायत अहम व आज़म है। नमाज़ इस्लाम के पांच सुतूनों में से एक अहम सुतून है, बदनी इबादतों में सब से अफ़्ज़ल इबादत है, क़ुरआने मजीद व अह़ादीसे नबवी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस की अहमिय्यत से माला माल हैं, जा बजा इस की ताकीद आई है और इस के तारिकीन पर वई़द फ़रमाई है। मेराज की रात हमारे प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसे लोगों के पास तशरीफ़ लाए जिन के सर पत्थरों से कुचले जा रहे थे, हर बार

कुचले जाने के बाद वोह पहले की त़रह़ दुरुस्त हो जाते थे (और दोबारा कुचल दिये जाते), इस मुआ़मले में उन से कोई सुस्ती न बरती जाती थी । आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से पूछा : येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ किया : येह वोह लोग हैं जिन के सर नमाज़ से बोझल हो जाते थे।[2]

सूद ख़ोर की सज़ा

बिलाशुबा सूद इस्लाम में क़त़ई त़ौर पर ह़राम है, क्यूंकि येह एक ऐसी लानत है जिस से न सिर्फ़ मआ़शी इस्तिह़साल, मुफ़्त ख़ोरी, ह़िर्स व त़म्अ़, ख़ुद ग़रज़ी, शक़ावत संगदिली, मफ़ाद परस्ती, जैसी अख़्लाक़ी क़बाह़तें जनम लेती हैं, बल्कि येह मआ़शी और इक़्तिसादी तबाह कारियों का ज़रीआ़ भी है, इसी वज्ह से क़ुरआनो ह़दीस में सूद लेने और देने से बड़ी सख़्ती से मन्अ़ किया गया है। सुनने इब्ने माजा में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ से रिवायत है : नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेराज की रात मैं एक ऐसी क़ौम के पास आया जिन के पेट मकानों की त़रह़ (बड़े बड़े) थे और उन में सांप थे जो कि बाहर से दिखाई देते थे। मैं ने पूछा : ऐ जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ की : येह सूदख़ोर हैं।[3] आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मज़ीद फ़रमाते हैं कि हम चलते चलते ख़ून की मिस्ल एक सुर्ख़ नहर पर पहुंचे, उस में एक शख़्स तैर रहा था जब कि नहर के किनारे पर भी एक शख़्स खड़ा था जिस के सामने पत्थर पड़े हुए थे । नहर में मौजूद शख़्स बाहर निकलने की कोशिश करता तो बाहर खड़ा शख़्स उस के मुंह पर एक पत्थर मारता जो उसे उस की जगह वापस पहुंचा देता। पूछने पर बताया गया कि येह सूदख़ोर है।[4]

ग़ीबत व ऐबजूई करने वाले

मुसलमान की ग़ीबत करना बहुत बड़ा गुनाह है, क़ुरआने मजीद में अल्लाह पाक ने ग़ीबत करने को अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाने के मुतरादिफ़ क़रार दिया है और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ीबत को ज़िना से भी बदतर फ़रमाया है। एक रिवायत में है कि जब आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जहन्नम में देखा तो वहां कुछ ऐसे लोग नज़र आए जो मुर्दार खा रहे थे। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा कि ऐ जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ किया : येह वोह हैं जो लोगों का गोश्त खाते (यानी ग़ीबत करते) थे।[5] मरवी है : मेराज की रात सरवरे काइनात صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र कुछ ऐसे लोगों पर हुवा जिन पर कुछ अफ़राद मुक़र्रर थे, उन में से बाज़ अफ़राद ने उन लोगों के जबड़े खोल रखे थे और बाज़ दूसरे अफ़राद उन का गोश्त काटते और ख़ून के साथ ही उन के मुंह में धकेल देते। प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ किया : येह लोगों की ग़ीबतें और उन की ऐबजूई करने वाले हैं।[6] एक रिवायत में है कि ग़ीबत करने वाले के पहलूओं का गोश्त काट कर ख़ुद उसे ही खिलाया जा रहा था। उसे कहा जाता, खाओ ! जैसे तुम अपने भाई का गोश्त खाया करते थे।[7]

मां बाप के ना फ़रमान

हर समझदार बन्दा इस बात से Agree करेगा कि जब क़ुरआने करीम ने मां बाप को **“उफ़”** तक कहने से मन्अ़ कर दिया है तो مَعَاذَ اللّٰه उन पर हाथ उठाना या गालियां देना या ज़बान दराज़ी करना कितना सख़्त अ़मल होगा। मेराज की रात नबियों के सरदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दोज़ख़ में कुछ ऐसे लोग भी देखे जो आग की शाख़ों से लटके हुए थे । आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : ऐ जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ किया : येह वोह लोग हैं जो दुन्या में अपने वालिदैन को गालियां देते थे।[8]

बे अ़मल वाइज़ीन

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बड़ी प्रेक्टीकल ज़िन्दगी गुज़ारी है। जैसा करने का ह़ुक्म दिया वोह पहले ख़ुद किया फिर दूसरों को करने को कहा। क़ुरआने मजीद ने ऐसे वाइज़ीन की मज़म्मत बयान की है जो समाज में मज़हब और अख़्लाक़ के नुमाइन्दे बन के जीते हैं मगर बे अ़मल हैं। चुनान्चे इरशादे रब्बे करीम है :

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ(۲)
كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ(۳)﴾

तर्जमए कन्जुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! वोह बात क्यूं कहते हो जो करते नहीं । अल्लाह के नज़्दीक येह बड़ी सख़्त ना पसन्दीदा बात है कि तुम वोह कहो जो न करो ।[9] आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी जहन्नम में उन वाइज़ीन के मुआमलात को बयान किया है । फ़रमाते हैं कि मेराज की रात कुछ और लोगों के पास आया तो देखा कि उन के होंट आग की क़ैंचियों से काटे जा रहे थे और हर बार काटने के बाद वोह दुरुस्त हो जाते थे । आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पूछने पर बताया गया कि येह आप की उम्मत के ख़ुत़बा हैं, येह अपने कहे पर अ़मल नहीं करते थे और किताबुल्लाह पढ़ते थे लेकिन उस पर अ़मल नहीं करते थे ।[10]

ज़कात अदा न करने वाले

उस रात सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसे लोगों के पास भी तशरीफ़ लाए जिन के आगे और पीछे चीथड़े लटक रहे थे और वोह चौपायों की त़रह़ चरते हुए ख़ारदार घास, थूहर (एक ख़ारदार और ज़हरीला पौदा जिस के पत्ते सब्ज़ और फूल रंग बि रंगे होते हैं) और जहन्नम के गर्म पत्थर निगल रहे थे । आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ जिब्रील ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ किया : येह वोह लोग हैं जो अपने मालों की ज़कात नहीं देते थे, अल्लाह पाक ने इन पर ज़ुल्म नहीं किया और अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त बन्दों पर ज़ुल्म नहीं फ़रमाता ।[11]

यतीमों का माल खाने वाले

मेराज की रात सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुछ ऐसे लोग भी देखे जिन के होंट ऊंट के होंटों की त़रह़ (बड़े बड़े) थे, उन पर ऐसे अफ़राद मुक़र्रर थे जो उन के होंट पकड़ कर आग के बड़े बड़े पत्थर उन के मुंह में डालते और वोह उन के नीचे से निकल जाते । आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : ऐ जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ किया : येह वोह लोग हैं (फिर येह आयत पढ़ी) :

﴿اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا﴾[12]

तर्जमए कन्जुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जो ज़ुल्म करते हुए यतीमों का माल खाते हैं वोह अपने पेट में बिल्कुल आग भरते हैं ।[13]

ऐ़ब निकालने और त़ाने देने वाले

लोगों के सामने बहुत ऐ़ब निकालने और त़ाने देने वाले मर्दों और औ़रतों को इस ह़ाल में देखा वोह अपनी छातियों के साथ लटक रहे थे ।[14]

ज़ानी व बदकार मर्द व औ़रतें

वोह औ़रतें जो ज़िना करतीं और औलाद को क़त्ल कर देती हैं उन्हें इस ह़ाल में देखा कि उन में से कुछ छातियों से और कुछ पांव से लटकी हुई हैं ।[15] बदकारी (यानी ज़िना) करने वाले मर्दों और औ़रतों को (इस ह़ाल में भी) देखा कि सांपों और बिच्छूओं के साथ क़ैद हैं और वोह उन को डस रहे हैं, बिच्छू अपने डंकों से उन्हें ज़लील कर रहे हैं और हर डंक में ज़हर की एक थैली है, वोह जिसे भी काटते उस के जिस्म में ज़हरीली थैली उंडेल देते और उन की शर्मगाहों से पीप बहता है जिस की बदबू से जहन्नमी चीख़ते चिल्लाते हैं ।[16]

क़ारिईने किराम ! आप ने कई जहन्नमियों के जहन्नम में जाने के अस्बाब और उन के अ़ज़ाबात के बारे में पढ़ा, यक़ीनन अ़क़्लमन्दी का तक़ाज़ा येही है कि अगर हमारे अन्दर दोज़ख़ में दाख़िले के अस्बाब में से कोई सबब पाया जाता है तो हम उसे दूर कर के दोज़ख़ और उस के अ़ज़ाब से ख़ुद को बचाएं ।

---

(1)دلائل النبوۃ،2/394(2)مسند بزار،17/5،حدیث:9518(3)ابن ماجہ، 3/363،حدیث:2273(4)مجمع الزوائد، 1/92،حدیث:235(5)مسند احمد، 2/144،حدیث:2366(6)مسندِ حارث، 1/1172، حدیث:27(7)ابوداؤد، 4/353،حدیث:4878،دلائل النبوۃ،2/393(8)الزواجر،2/139(9)پ:28، الصَّف:02، 03(10)شعب الایمان، 2/273، حدیث: 1773(11)مسند بزار،17/5، حدیث:9518(12)پ 4، النسآء: 10(13)الشریعۃ للآجری، 3/1532،حدیث:1027، تہذیب الآثار،2/467،حدیث:725(14)شعب الایمان، 5/309،حدیث:6750(15)تفسیر طبری، الاسرآء، تحت الآیۃ:8،1/13،حدیث: 22023(16)قرۃ العیون ومفرح قلب المحزون، ص389۔

मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

1 मर्द का गोल्डन रंग की ऐनक, घड़ी या गाड़ी का इस्तिमाल करना कैसा ?

सुवाल : क्या मर्द गोल्डन रंग की ऐनक, घड़ी या गाड़ी इस्तिमाल कर सकता है ?

जवाब : गोल्डन रंग की ऐनक, घड़ी या गाड़ी इस्तिमाल करना ज़ीनत है लेकिन येह वोह ज़ीनत है जो जाइज़ होती है। उ़लमाए किराम भी गोल्डन कलर की बाज़ चीज़ें पहनते हैं अलबत्ता Gold यानी सोने की चैन वग़ैरा मर्द को पहनना जाइज़ नहीं है।

2 किसी के दरवाज़े पर इस्लामी बहन अपना तआ़रुफ़ कैसे करवाए ?

सुवाल : इस्लामी बहनें जब किसी के घर जा कर दरवाज़ा बजाएं और अन्दर से पूछा जाए : "**कौन ?**" तो क्या जवाब दें ?

जवाब : इस सूरत में अपनी कोई भी पहचान बता दें, या "**बिन्ते फुलां**" और "**उम्मे फुलां**" कह कर अपनी पहचान करा दें। ऐसे मौक़ेअ़ पर घर में मौजूद मर्द को चाहिये कि घर की औ़रत को आगे कर दे।

3 बे ग़ुस्ले शख़्स के पसीने का हुक्म

सुवाल : जिस शख़्स पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो क्या उस का पसीना भी नापाक होता है ?

जवाब : नहीं।

4 फ़ौत शुदा की त़रफ़ से सदक़ा करना

सुवाल : क्या फ़ौत शुदा इन्सानों की त़रफ़ से भी सदक़ा दिया जा सकता है ?

जवाब : जी हां ! फ़ौत शुदा अफ़राद की त़रफ़ से भी सदक़ा दिया जा सकता है, येह उन के लिये ईसाले सवाब होगा जैसे वालिद साहि़ब, दादाजान वग़ैरा के ईसाले सवाब के लिये सदक़ा दिया या बारगाहे रिसालत में सवाब नज़्र करने के लिये ग़रीबों की मदद की, कि येह मदद मैं सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم या ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के ईसाले सवाब के लिये कर रहा हूं ऐसा करना जाइज़ है।

5 औ़रत का मर्दाना स्वेटर पहनना कैसा ?

सुवाल : क्या औ़रत मर्दाना स्वेटर पहन सकती है ?

जवाब : ऐसा स्वेटर जो मर्द व औ़रत दोनों के लिये हो वोह पहन सकती है, वरना जो मर्द के लिये मख़्सूस हो वोह नहीं पहन सकती।

6 शबे बराअत पर बहन बेटियों को ह़ल्वा या रक़म वग़ैरा भेजना कैसा ?

सुवाल : हमारी बिरादरी में येह रवाज है कि शबे बराअत के मौक़ेअ़ पर बहन बेटियों को ह़ल्वा या कुछ रक़म भेजी जाती है और बाज़ औक़ात ऐसा भी होता है कि अगर येह न दिया जाए तो बहन बेटी को त़ाने मिलते हैं, ऐसा करना कैसा है ?

जवाब : शबे बराअत हो या कोई भी मौक़ेअ़,

आपस में एक दूसरे को कोई तोह़फ़ा या ह़ल्वा और मिठाई वग़ैरा भेजना अच्छी बात है, सवाब का काम है और इस से बाहम मह़ब्बत बढ़ती है, लेकिन अगर येह चीज़ें न भेजें तो त़ाने मिलते हैं और त़ानों से बचने के लिये भिजवाए तो त़ाना देने वालों के लिये येह रिश्वत है, देने वाला गुनहगार नहीं। अगर न भेजने पर बुरा भला न कहा जाए और येह ज़ेहन हो कि जो दे उस का भी भला और जो न दे उस का भी भला तो फिर शरअ़न इस में कोई ह़रज नहीं है।

7 नमाज़े फ़ज्र में कितनी ताख़ीर मुस्तह़ब है ?

सुवाल : फ़ज्र कितनी ताख़ीर से पढ़ सकते हैं ?

जवाब : बहारे शरीअ़त जिल्द 1, सफ़ह़ा 451 पर है : फ़ज्र में ताख़ीर मुस्तह़ब है, यानी अस्फ़ार (जब ख़ूब उजाला हो यानी ज़मीन रौशन हो जाए) में शुरूअ़ करे मगर ऐसा वक़्त होना मुस्तह़ब है कि चालीस से साठ आयात तक तरतील के साथ (ठहर ठहर कर) पढ़ सके फिर सलाम फेरने के बाद इतना वक़्त बाक़ी रहे कि अगर नमाज़ में फ़साद ज़ाहिर हो (यानी येह पता चले कि नमाज़ नहीं हुई) तो त़हारत कर के तरतील के साथ चालीस से साठ आयात तक दोबारा पढ़ सके और इतनी ताख़ीर मकरूह है कि तुलूए़ आफ़्ताब का शक हो जाए।

8 क़र्ज़दार पहले क़र्ज़ अदा करे या कारोबार ?

सुवाल : अगर किसी शख़्स पर 90 लाख का क़र्ज़ हो और उस के पास 20 लाख रुपिये केश हों तो क्या उसे 20 लाख से लोगों का क़र्ज़ उतारना चाहिये या उन पैसों से कोई कारोबार शुरूअ़ कर के आमदनी से अपना क़र्ज़ उतारना चाहिये ?

जवाब : जिन लोगों का क़र्ज़ है अगर वोह सब उसे मोहलत दे दें तो येह कारोबार कर ले वगर्ना क़र्ज़ अदा करे क्यूंकि ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं कि 20 लाख से 90 लाख कमा सकेगा या नहीं, फिर ख़र्च और खाना अपनी जगह पर है। क़र्ज़ अदा करना बहुत ज़रूरी है और अपने ऊपर क़र्ज़ छोड़ कर मरना बहुत ख़त़रनाक है।

9 मुक़्तदी का सना के बाद ''اَعُوْذُبِاللّٰہ'' और ''بِسۡمِ اللّٰہ'' पढ़ना कैसा ?

सुवाल : अगर मुक़्तदी सना के बाद ''اَعُوْذُبِاللّٰہ'' और ''بِسۡمِ اللّٰہ'' भी पढ़ ले तो क्या उस की नमाज़ हो जाएगी ?

जवाब : अगर मुक़्तदी ने सना के बाद तअ़व्वुज़ व तस्मिया पढ़ ली तो नमाज़ हो जाएगी, लेकिन जान बूझ कर ऐसा नहीं करना चाहिये कि येह ख़िलाफ़े सुन्नत है। इमाम का क़िराअत करना मुक़्तदी के लिये काफ़ी है, लिहाज़ा मुक़्तदी न अल्ह़म्दु शरीफ़ पढ़े न तअ़व्वुज़ व तस्मिया बल्कि ख़ामोशी से इमाम की क़िराअत सुने।

10 बात छुपाने के लिये ''मुझे नहीं पता'' कहना कैसा ?

सुवाल : बसा औक़ात बन्दा जान छुड़ाने के लिये कह देता है कि ''**मुझे नहीं पता जो चाहो करो**'' क्या येह भी झूट में शुमार होगा ?

जवाब : बाज़ औक़ात येह जुम्ला टालने के लिये कहा जाता है, मत़लब येह होता है कि मुझे पता है लेकिन मैं बताना नहीं चाहता। यूं ही अगर कोई तंग करता है तो भी येह जुम्ला कहा जाता है। इस त़रह़ के जुम्ले में निय्यत को देखा जाएगा, अगर कोई बात छुपाने के लिये येह जुम्ला बोल रहा है कि ''**मुझे नहीं पता**'' हालां कि जानता है तो अब येह झूट हो जाएगा।

11 दम की हुई अगरबत्ती जलाना कैसा ?

सुवाल : क्या अगरबत्ती पर दम कर के जला सकते हैं ?

जवाब : कुछ आ़मिलीन अगरबत्ती दम कर के देते हैं, हो सकता है ह़ुसूले बरकत के लिये हो, इस में कोई ह़रज नहीं।

12 मछली पर फ़ातिह़ा देना कैसा ?

सुवाल : क्या मछली पर फ़ातिह़ा दे सकते हैं ?

जवाब : जी हां ! मछली पर फ़ातिह़ा दे सकते हैं।

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

1 नफ़्ल रोजे़ की निय्यत कर के सो जाए और सह़री न कर सके ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि ज़ैद ने रात में येह निय्यत की, कि मैं कल नफ़्ल रोज़ा रखूंगा। हां ! अगर सह़री में उठ गया तो ठीक वरना रोजे़ से ही रहूंगा, फिर इत्तिफ़ाक़ ऐसा हुवा कि ज़ैद की सह़री में आंख ही नहीं खुली और उस ने बिग़ैर सह़री ही के वोह नफ़्ल रोज़ा मुकम्मल किया। आप से मालूम येह करना है कि क्या ज़ैद का वोह नफ़्ल रोज़ा दुरुस्त वाके़अ़ हुवा ?

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जी हां ! पूछी गई सूरत में ज़ैद का वोह नफ़्ल रोज़ा दुरुस्त वाके़अ़ हुवा।

मस्अले की तफ़्सील येह है कि नफ़्ल रोजे़ की निय्यत रात से ले कर ज़ह़वए कुब्रा से पहले तक की जा सकती है, और रात ही में निय्यत कर लेने में येह बात भी ज़रूरी है कि उस निय्यत से रुजूअ़ करना न पाया जाए। अब जब कि सूरते मस्ऊला में ज़ैद ने रात ही में नफ़्ल रोजे़ की निय्यत कर ली थी फिर इस के बाद कहीं भी इस निय्यत से रुजूअ़ करना नहीं पाया गया, लिहाज़ा ज़ैद का वोह नफ़्ल रोज़ा दुरुस्त अदा हुवा। अलबत्ता येह ज़रूर याद रहे कि सह़री करना सुन्नत है रोजे़ के लिये शर्त़ नहीं, लिहाज़ा बिग़ैर सह़री के भी रोज़ा दुरुस्त अदा होता है।

(تنویر الابصار مع الدر المختار، 3/393-بحر الرائق، 2/282-بہارِ شریعت، 1/969، 967 ملتقطاً-تحفۃ الفقہاء، 1/365)

وَاللّٰہُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 फ़ौरन क़सम वापस ले ले तो ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि अगर कोई शख़्स क़सम खाने के बाद फ़ौरन अपनी उस क़सम को वापस ले ले, तो क्या इस सूरत में भी उस क़सम को पूरा करना लाज़िम होगा ?

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जी हां ! पूछी गई सूरत में भी उस क़सम को पूरा करना लाज़िम होगा, क्यूंकि क़सम मुन्अ़क़िद होने के बाद उस से रुजूअ़ नहीं हो सकता।

चुनान्चे बह़रुर्राइक़ में है : لا رجوع عن الیمین यानी क़सम से रुजूअ़ नहीं हो सकता। (البحر الرائق شرح کنز الدقائق، 3/361)

मज्मउ़ल अन्हर में है : لا یصح الرجوع عن الیمین यानी क़सम से रुजूअ़ दुरुस्त नहीं। (مجمع الانہر فی شرح ملتقی الابحر، 1/763)

وَاللّٰہُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 सप्लायर का दुकानदार को इस लिये रक़म देना कि किसी और का माल न रखे ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि हम बेकरी आइटम (बिस्किट, केक वग़ैरा) दुकानों पर जा कर बेचते हैं, और दुकानदार किसी दूसरे का माल अपनी दुकान पर न रखे बल्कि हम से ही माल ख़रीदे इस लिये दुकानदार को कुछ रक़म देते हैं, कभी वोह रक़म हमें वापस मिल जाती है और बाज़ औक़ात रक़म वापस नहीं मिलती, क्या इस मक़्सद से दुकानदार को कुछ रक़म देना शरअ़न दुरुस्त है ?

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में आप का दुकानदार को मज़्कूरा रक़म देना, ना जाइज़ो ह़राम है।

तफ़्सील इस मस्अले की येह है कि अगर दुकानदार को रक़म देते वक़्त सराह़तन या दलालतन किसी भी त़रह़ तै है कि येह रक़म क़ाबिले वापसी है तो इस सूरत में मज़्कूरा रक़म की फ़िक़्ही हैसिय्यत **"क़र्ज़"** है, और इस क़र्ज़ पर शर्त़ है कि दुकानदार दूसरी कम्पनी का बेकरी आइटम अपनी दुकान पर नहीं रखेगा बल्कि सिर्फ़ आप से बेकरी आइटम लिया करेगा, जो कि क़र्ज़ पर मशरूत़ नफ़्अ़ है और हर वोह क़र्ज़ जो मशरूत़ नफ़्अ़ लाए, सूद और ह़राम है।

और अगर मज़्कूरा रक़म का वापस लौटाया जाना वग़ैरा कुछ तै नहीं बल्कि रक़म देने से सिर्फ़ अपना काम निकलवाना मक़्सूद है तो येह रिश्वत है, क्यूंकि फ़िक़्ही उसूलों के मुत़ाबिक़ अपना काम बनाने या अपना काम निकलवाने के लिये किसी को कुछ देना रिश्वत है, और येह भी ह़राम है।

जामेउ़त्तिर्मिज़ी में है :

لعن رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ و آلہ وسلم الراشی والمرتشی

यानी : रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रिश्वत देने और लेने पर लानत फ़रमाई। (ترمذی،1/248۔رد المحتار،7/413۔فتاوی رضویہ،23/551)

وَاللہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

4 स्नोकर और पट्टी की आमदनी का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि स्नोकर और पट्टी खेलने के लिये देना और इस के पैसे लेना कैसा है ? और इस आमदनी का क्या हुक्म है ?

بِسْمِ اللہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَاب

स्नोकर और पट्टी खेलने के लिये देना और इस के पैसे लेना, ना जाइज़ो गुनाह है और इस से ह़ासिल होने वाली आमदनी भी ह़लाल नहीं है क्यूंकि येह लहवो लअ़ब पर इजारा है कि इस त़रह़ के गेम्ज़ लहवो लअ़ब पर मुश्तमिल होते हैं और लहवो लअ़ब पर इजारा ना जाइज़ो गुनाह है और इस से ह़ासिल होने वाली उजरत भी ह़लाल नहीं होती। (در مختار،9/92 ملتقطاً-العقود الدریۃ فی تنقیح الفتاوی الحامدیۃ،2/140-بہار شریعت،3/144)

وَاللہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

5 क्या मजबूरन नफ़्ल रोज़ा तोड़ने की सूरत में क़ज़ा लाज़िम है ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि ज़ैद ने नफ़्ल रोज़ा रखा लेकिन सुब्ह़ सात बजे उसे अपने किसी अ़ज़ीज़ के घर मेहमान बन कर जाना पड़ा, जिस की वज्ह से ज़ैद ने मजबूरन वोह रोज़ा तोड़ दिया। आप से मालूम येह करना है कि क्या ज़ैद पर उस रोज़े की क़ज़ा लाज़िम होगी ?

بِسْمِ اللہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَاب

जी हां ! पूछी गई सूरत में ज़ैद पर उस नफ़्ल रोज़े की क़ज़ा लाज़िम है।

मस्अले की तफ़्सील येह है कि नफ़्ल रोज़े को बिग़ैर किसी उ़ज़्रे शरई के तोड़ना ना जाइज़ो गुनाह है, अलबत्ता मेहमान अगर मेज़्बान के साथ न खाए तो उसे अज़िय्यत होगी येह नफ़्ल रोज़ा तोड़ने के लिये उ़ज़्र है, बशर्ते़ कि मेहमान को उस रोज़े की क़ज़ा कर लेने पर एतिमाद हो और वोह येह नफ़्ल रोज़ा ज़ह़वए कुब्रा से पहले तोड़े। वाज़ेह़ हुवा कि पूछी गई सूरत में ज़ैद ने वोह नफ़्ल रोज़ा ख़्वाह उ़ज़्र के सबब तोड़ा था या बिग़ैर उ़ज़्र के, बहर सूरत उस नफ़्ल रोज़े की क़ज़ा करना ज़ैद के ज़िम्मे पर लाज़िम है, नीज़ जान बूझ कर बिग़ैर किसी उ़ज़्रे शरई के नफ़्ल रोज़ा तोड़ने की सूरत में क़ज़ा के साथ साथ ज़ैद पर उस गुनाह से तौबा करना भी ज़रूरी है।

(فتاوی عالمگیری،1/208-بہار شریعت، 1/1007-ردالمحتار مع الدر المختار، 3/475)

وَاللہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

काम की बातें

1 साफ़ सुथराई आप की शख़्सिय्यत का 70 फ़ीसद तआ़रुफ़ करवा देती है।

2 ऑफ़िस डिसिप्लिन पर आप की तरक़्क़ी का इन्हि़सार है।

3 आप कितने ही बा सलाहि़य्यत हों लेकिन अगर आप में टीम वर्क यानी मिल कर काम करने की अहलिय्यत नहीं है तो आप तरक़्क़ी नहीं कर सकते।

4 किसी भी शोबे का निगरान उसी को बनाया जाता है जिस का अख़्लाक़ व किरदार अच्छा हो और उसे इन्सानों से बात चीत करना, उन्हें ले कर चलना आता हो।

5 अगर हम नमाज़ और जमाअ़त के पाबन्द नहीं तो फिर किसी काम के नहीं।

6 दावते इस्लामी को मह़ज़ माल कमाने का नहीं बल्कि आख़िरत संवारने और जन्नत कमाने का ज़रीआ़ बनाएं।

7 ऑफ़िस में आप का टेबल आप का तआ़रुफ़ करवाता है। बिखरा हुवा सामान बिखरी सोच और बिखरी शख़्सिय्यत की अ़क्कासी करता है।

8 थम्म (Thumb) लगाने के बाद ड्यूटी टाइम शुरूअ़ हो जाता है। इस के बाद फ़ुज़ूल तज्ज़ियों और ह़ालाते ह़ाज़िरा पर गुफ़्तगू करने के बजाए पूरी तवज्जोह अपने काम पर होनी चाहिये।

9 निगरान या इदारे को ही अपनी तरक़्क़ी में रुकावट का ज़िम्मेदार न ठहराएं, अपनी ख़ामियों पर भी नज़र रखें। बद तमीज़ आदमी को कोई भी इदारा ऊपर नहीं लाता।

10 माल या ओ़हदा मिलने पर इन्सान के अन्दर का बाहर आ जाता है, किसी को फ़ैज़ाने उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मिलता है तो वोह अ़द्लो इन्साफ़, ख़ैर ख़्वाही और भलाई करता है तो किसी के अन्दर छुपा हुवा यज़ीदी किरदार बाहर आ जाता है।

11 ड्यूटी टाइम और अम्लाक के मुआ़मले में वक़्फ़ का लिह़ाज़ ज़रूरी है। ए सी, पंखे, लाइटस और पानी वग़ैरा चीज़ों के इस्तिमाल में एह़तियात़ कीजिये क्यूंकि येह किसी फ़र्द की मिल्किय्यत नहीं होतीं यहां रुक्ने शूरा भी मुआ़फ़ नहीं कर सकता। तावान से ही जान छूटेगी।

12 इज्तिमाआ़त, मदनी मुज़ाकरों और दावते इस्लामी के दीनी कामों में शामिल हों।

13 दोस्तों में या ऑफ़िस में घर वालों की बातें मसलन आज बेगम ने नाश्ता नहीं दिया, सुब्ह़ सुब्ह़ बेगम से मुंह मारी हो गई वग़ैरा बातें करना मुनासिब नहीं होता।

14 दोस्तों से इतनी बे तकल्लुफ़ी न रखें कि वोह आप की मां बहन और बीवी पर तबसिरे करें।

(बक़िय्या अगले माह के शुमारे में)

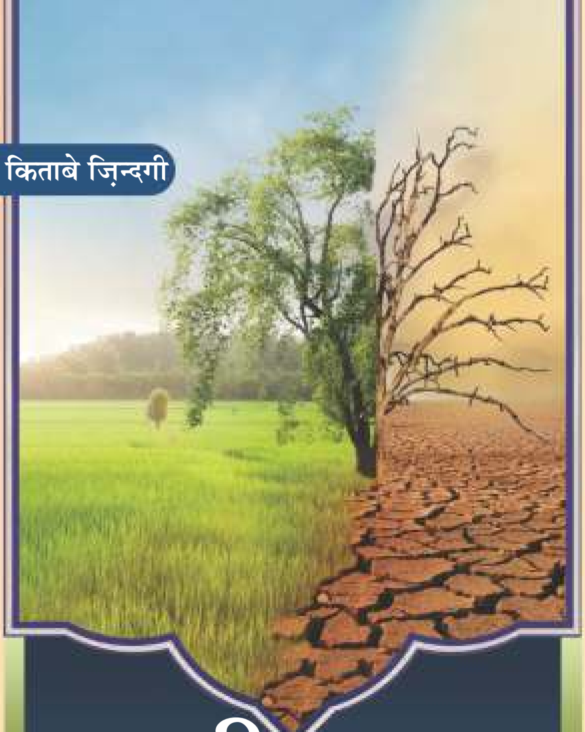

अपनी ज़िन्दगी बदलिये
(Change your life)

ज़िन्दगी को बेहतर बनाने के लिये उसे बदलना बहुत ज़रूरी है और ज़िन्दगी बदलने के लिये इन Tips पर अ़मल करना बहुत मुफ़ीद है जिन्हें ज़रूरी वज़ाह़त के साथ पेश कर रहा हूं। मगर ख़याल रहे कि इन बातों को जाइज़ और बाइसे सवाब कामों की ह़द तक मह़दूद समझा जाए।

1 ग़लत़ी की निशानदेही करने वाले से नाराज़ हो जाना नादानी है।

वज़ाह़त ग़लत़ी का नतीजा नुक़्सान की सूरत में निकलता है इस लिये निशानदेही करने वाले का तअ़ल्लुक़ किसी भी त़बके़, उ़म्र के किसी भी ह़िस्से से हो फिर ग़लत़ी दुन्यावी हो या दीनी ! निशानदेही करने वाले की इस्लाह़ क़बूल करनी चाहिये मसलन आप किसी शादी वग़ैरा की तक़रीब में जा रहे हों और ग़लत़ रास्ते पर चल पड़ें, अगर गली में खेलने वाला छोटा बच्चा भी आप को बता दे कि आप ग़लत़ रास्ते पर जा रहे हैं येह रास्ता शादी वाले घर नहीं जाता तो क्या आप उस से नाराज़ होंगे या शुक्र गुज़ार ? कि उस की वज्ह से मैं मशक़्क़त और परेशानी से बच गया। इस त़रह़ अगर हम से नमाज़ में कोई ग़लत़ी हो रही है तो हमारी इस्लाह़ करने वाला हमारा मोह़सिन है, उस का शुक्रिय्या अदा करते हुए कहना चाहिये : جزاك الله خيرا क्यूंकि अपनी इस्लाह़ हमारी ज़िन्दगी के इस मदनी मक़्सद का ह़िस्सा है कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।"

2 मिज़ाज शनासी का फ़ुक़्दान लोगों से अच्छे तअ़ल्लुक़ात में रुकावट है।

वज़ाह़त लोगों के मिज़ाजों में फ़र्क़ होता है, मिज़ाज के ख़िलाफ़ बात होने पर लोग नाराज़ हो जाते हैं, इस लिये हमें मिलने जुलने वालों के मिज़ाज का पता होना चाहिये कि उन्हें क्या अच्छा लगता है और क्या बुरा ? इस के मुत़ाबिक़ उन से सुलूक किया जाए। दीनी ख़िदमात करने वाले मुबल्लिग़ीन के लिये मिज़ाज शनासी बहुत मुफ़ीद है।

3 आमदनी और ख़र्च में तवाज़ुन न रखना माली तंगदस्ती का बड़ा सबब है।

वज़ाह़त आज कल हर दूसरा शख़्स तंगदस्ती का रोना रोता है मगर इस के अस्बाब पर ग़ौर नहीं करता। तंगदस्ती की एक बड़ी वज्ह येह है कि जितनी रक़म कमाई जाए उस से ज़ियादा ख़र्च कर डाली जाए। इस लिये ज़रूरी है कि जब कोई ख़र्चा करना हो येह देख लिया जाए कि आप के पास पैसे कितने हैं ! मशहूर है : चादर देख कर पांव फैलाना चाहिये।

4 जो आप की ख़ुशियों पर ख़ुश और दुखों पर दुखी हो उस से अपना दुख सुख ज़रूर शेर कीजिये।

वज़ाह़त इन्सान का वासित़ा उ़मूमन चार क़िस्म के लोगों से पड़ता है 1 आप के दुख पर ग़मगीन होने वाले 2 आप के दुखी होने पर ख़ुश होने वाले 3 आप की ख़ुशी पर ग़मगीन होने वाले 4 आप की ख़ुशी पर ख़ुश होने वाले।

पहली और चौथी क़िस्म के लोग (जैसे मां बाप,

बहन भाई, उस्ताज़, गहरे दोस्त) आप से मुख़्लिस होते हैं इस लिये उन से अपना दुख सुख ज़रूर शेर करना चाहिये।

5 हम अपना माल छीन / चुरा लेने वाले को चोर डाकू जब कि वक़्त चुरा लेने वाले को अपना दोस्त क़रार देते हैं।

वज़ाहत येह ह़क़ीक़त है कि वक़्त माल से ज़ियादा क़ीमती है, जाने वाले माल को वक़्त सर्फ़ कर के दोबारा कमाया जा सकता है लेकिन वक़्त एक मरतबा चला जाए करोड़ों रुपिये ख़र्च कर के भी वापस नहीं लाया जा सकता। माल छीनने वाला डकेत कहीं दोबारा दिखाई दे जाए तो हम शोर मचा देते हैं कि पकड़ो ! पकड़ो ! इस ने मुझ से डकेती की थी जब कि वक़्त ज़ाएअ् करने वाला गोया हमारे वक़्त का चोर है, मगर उसे हम अपना दोस्त और प्यारा क़रार देते हैं और रोज़ उस से हंसी ख़ुशी मिलते हैं और अपना वक़्त चोरी करवाते हैं। वाह ! क्या बात है हमारी दानिशमन्दी की।

6 आप की काविश आमदनी में ढल जाए, इस बात की जल्दी न मचाइये।

वज़ाहत इस सोच का शिकार ख़ास कर वोह नौजवान होते हैं जो अ़मली ज़िन्दगी में नए नए दाख़िल होते हैं और स्ट्रगल के अय्याम में होते हैं। जब वोह किसी कामयाब इस्लामिक टीचर, स्कोलर, राइटर, रीसर्चर, बिज़्नस मेन या अफ़्सर को देखते हैं जिन्हें उन के काम का ठीक ठाक मुआ़वज़ा मिल रहा होता है तो उन के दिल में येह ख़्वाहिश जागती है कि हमें भी हर हर काम का मुआ़वज़ा मिलना चाहिये और जब ऐसा नहीं होता तो वोह तरक़्क़ी की कोशिश छोड़ देते हैं। ऐसे नौजवानों को चाहिये कि जिन लोगों को देख कर वोह एह़सासे कमतरी में मुब्तला हो रहे हैं, येह देखें कि इस मक़ाम तक पहुंचने के लिये उन्हों ने किस क़दर मह़नत की है ? फिर वोह भी मह़नत और कोशिश में लगे रहें, कामयाबी उन का मुक़द्दर होगी, اِنْ شَآءَ اللّٰہ।

7 किसी पर एडवान्स तन्क़ीद शर्मिन्दा करवा सकती है।

वज़ाहत ऐसे लोगों से भी वासिता पड़ता है जो कोई भी काम शुरूअ् / मुकम्मल होने से पहले ही तन्क़ीद के तीर बरसाना शुरूअ् कर देते हैं और उन के तबसिरे बड़े ह़ौसला शिकन होते हैं मसलन तुम से येह काम नहीं होगा, येह काम हो ही नहीं सकता तुम कुछ भी कर लो इस इम्तिह़ान में पास नहीं हो सकते या तुम्हारी पोज़ीशन नहीं आ सकती। हमें चाहिये कि ह़ौसला हारने के बजाए भरपूर कोशिश और लगन से अपना काम करना शुरूअ् कर दें, एक दिन आएगा कि एडवान्स तन्क़ीद करने वालों को मुंह की खानी पड़ेगी।

8 थोड़ी सी तक्लीफ़ पर ह़वास बाख़्ता न हुवा करें, बाज़ों की आ़दत होती है कि सूई चुभने पर ऐसा उछलते हैं जैसे किसी ने नेज़ा मार दिया हो।

वज़ाहत इम्तिह़ान में सुवाल मुश्किल आ जाए, ख़ातून ख़ाना बरतन धोने में ताख़ीर कर दे, कपड़ों पर स्त्री बराबर न हो, बच्चे को थोड़ी सी चोट लग जाए, उस के बच्चे की मह़ल्ले के बच्चों से हल्की फुल्की लड़ाई हो जाए, दफ़्तर में स्वेपर सफ़ाई अच्छी न करे, प्रिन्टर से प्रिन्ट निकालने में तक्नीकी रुकावट आ जाए, तवक़्क़ोअ् के मुत़ाबिक़ तनख़्वाह न बढ़े, मामूली सी ट्रेफ़िक जाम हो जाए अल ग़रज़ छोटे से छोटे मुआ़मले पर बाज़ों का रवय्या इसी त़रह़ का होता है। ऐसों का दिल बहुत थोड़ा होता है ख़ास कर अपने बारे में, येह हर बात को दिल पर ले लेते हैं फिर उसी के मुत़ाबिक़ अपना रद्दे अ़मल देते हैं, ह़ालां कि समझा जाए तो येह इतने बड़े मुआ़मलात नहीं होते। ऐसे लोग अपने त़र्ज़े अ़मल की वज्ह से ख़ुद भी परेशान होते हैं और अपने इर्द गिर्द वालों को भी तशवीश में मुब्तला कर देते हैं। त़बीअ़त में ठहराव न रखने वाले ऐसे लोग ज़िन्दगी में कम ही कामयाब होते हैं। अगर आप का मिज़ाज ऐसा है तो उसे बदलने की कोशिश कीजिये।

हर बात को यूं ज़ख़्म बनाते नहीं दिल का
हर तीर को पैवस्ते रगे जां नहीं करते

मुसलमान की ख़ैर ख़्वाही

किसी मुसलमान की परेशानी दूर करना, मुसीबत और तक्लीफ़ में उस की मदद करना, दुख्यारे का दुख बांटना, भटके हुए मुसलमान को रास्ता बता देना अल ग़रज़ किसी भी नेक और जाइज़ काम में मुसलमान भाई की मदद करना निहायत अज्रो सवाब का बाइस है, चुनान्चे सरकारे आ़ली वक़ार صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم ने फ़रमाया : तुम में से जो कोई अपने भाई को नफ़्अ़ पहुंचा सकता हो तो उसे नफ़्अ़ पहुंचाए । (مسلم، ص931، حدیث: 5731)

मुसलमान भाई की ख़ैर ख़्वाही की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं, मसलन :

मुसलमान की परेशानी दूर कीजिये इन्सान पर बसा औक़ात मुख़्तलिफ़ परेशानियां आती हैं, कभी बीमारी तो कभी क़र्ज़दारी, कभी ऐसा भी होता है कि दौराने सफ़र गाड़ी या मोटर साईकल का पेट्रोल ख़त्म हो जाता है और दूर तक पेट्रोल दस्तयाब नहीं होता ऐसी सूरत में अगर हम किसी मुसलमान की परेशानी दूर कर सकते हों तो अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ उस की परेशानी दूर कर के अज्रो सवाब का ह़क़दार बनना चाहिये, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم है : जो किसी मुसलमान की परेशानी दूर करेगा अल्लाह पाक क़ियामत की परेशानियों में से उस की एक परेशानी दूर फ़रमाएगा। (مسلم، ص1069، حدیث:6578)

भूके को खाना खिलाइये ह़दीसे पाक में भूके मुसलमान को खाना खिलाने वाले के लिये जन्नती नेमतें अ़ता किये जाने की बिशारत है, चुनान्चे फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم है : जो मुसलमान किसी भूके मुसलमान को खाना खिलाएगा तो अल्लाह पाक उसे जन्नत के फल खिलाएगा और जो किसी प्यासे मुसलमान को सैराब करेगा तो अल्लाह पाक उसे पाकीज़ा शराब पिलाएगा। (ابوداؤد،2/180، حدیث:1682)

क़र्ज़ के ज़रीए़ मदद कीजिये ज़रूरत मन्द मुसलमान भाई की क़र्ज़ के ज़रीए़ भी मदद की जा सकती है चुनान्चे अल्लाह करीम के मह़बूब صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم ने फ़रमाया : तीन त़रह़ के मोमिनों को इजाज़त होगी कि वोह जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहें दाख़िल हो जाएं और उन का जन्नती ह़ूर के साथ निकाह़ किया जाएगा । उन में से एक ह़ाजतमन्द को पोशीदा क़र्ज़ देने वाला भी है। (مسند ابی یعلیٰ، 2/196، حدیث: 1788، ملخصاً)

तंगदस्त क़र्ज़दार की रिआयत कीजिये इस्लाम ने ह़ाजतमन्द मुसलमान को क़र्ज़ देने की न सिर्फ़ तरग़ीब दी है बल्कि मक़रूज़ के साथ ह़ुस्ने सुलूक और तंगदस्त क़र्ज़दार के साथ रिआ़यत करने पर अज्रो सवाब की बिशारत भी अ़त़ा फ़रमाई है चुनान्चे नबिय्ये अकरम صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم ने फ़रमाया : जिस ने तंगदस्त को मोहलत दी या उस के क़र्ज़ में कमी की, अल्लाह पाक उसे क़ियामत के दिन अपने अ़र्श के साए में जगह अ़त़ा फ़रमाएगा जिस दिन उस साए के इ़लावा कोई साया न होगा। (ترمذی، 3/52، حدیث:1310)

मज़्लूम मुसलमान की मदद कीजिये ह़दीसे पाक में मज़्लूम की मदद का ह़ुक्म भी दिया गया है चुनान्चे नबिय्ये पाक صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم ने फ़रमाया : अल्लाह पाक फ़रमाता है : मुझे मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं जल्दी या देर में ज़ालिम से बदला ज़रूर लूंगा और उस से भी बदला लूंगा जो बा वुजूदे क़ुदरत मज़्लूम की मदद नहीं करता। (معجم اوسط، 1/20، حدیث: 36)

शारेह़े बुख़ारी मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं : मुसलमान की मदद, मदद करने वाले के ह़ाल के एतिबार से कभी फ़र्ज़ होती है कभी वाजिब कभी मुस्तह़ब। (نزہۃ القاری، 3/665)

उम्मते मह़बूब का या रब बना दे ख़ैर ख़्वाह
नफ़्स की ख़ात़िर किसी से दिल में मेरे हो न बैर

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 233)

बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन

The Blessed quotes of the pious predecessors

बातों से ख़ुश्बू आए

ख़ुश बख़्ती की अ़लामात

चार चीज़ें इन्सान की ख़ुश बख़्ती की अ़लामत हैं : 1 बीवी मिज़ाज के मुत़ाबिक़ हो 2 औलाद फ़रमां बरदार हो 3 दोस्त अह़बाब नेक हों 4 रोज़गार अपने ही शहर में हो।(फ़रमाने ह़ज़रते अबू ह़ातिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ)(روضۃ العقلاء، ص ۱۰۱)

मेह़नत का सह़ीह़ मसरफ़

बनावटी अन्दाज़ अपनाने में नहीं बल्कि बनावटी अन्दाज़ छोड़ने में मेह़नत किया करो। (फ़रमाने ह़ज़रते बिशर बिन ह़ारिस رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ) (طبقات الصوفیۃ للسلمی، ص ۴۷)

सब्र हो तो ऐसा

सब्र का मत़लब येह है कि तुम उस ज़मीन की त़रह़ बन जाओ जो पहाड़ों का, तमाम इन्सानों का और जो कुछ उस पर है उन तमाम चीज़ों का बोझ बरदाश्त करती है, न इन्कार करती है और न उसे मुसीबत कहती है बल्कि उसे अपने रब की नेमत और अ़त़िय्या समझती है। (फ़रमाने ह़ज़रते अबुल ह़सन सिर्री सक़त़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ) (حلیۃ الاولیاء، ۱۰/ ۱۲۴)

अह़मद रज़ा का ताज़ा गुलिस्तां है आज भी

सुल्ह़ में फ़रीक़ैन की रिज़ा की ह़ैसिय्यत

सुल्ह़ अगर ब रिज़ा है तो इन्दल्लाह भी हो गई और दब कर है तो दुन्या में हुई आख़िरत में मुत़ालबा बाक़ी है।

(फ़तावा रज़विय्या, 19 / 128)

किसी ख़ुश फ़हमी में मत रहो

आदमी हर वक़्त मौत के क़ब्ज़े में है, मदक़ूक़ (यानी मरीज़) अच्छा हो जाता है और वोह जो उस के तीमार (यानी बीमार पुर्सी) में दौड़ता था उस से पहले चल देता है।

(फ़तावा रज़विय्या, 9/81)

बाप की अहमिय्यत

जो ह़याते पिदर (बाप की ज़िन्दगी) में अपना मुस्तक़िल इख़्तियार रखना चाहता है, बद वज़्अ़ व आवारा व ना सआ़दत मन्द गिना जाता है। (फ़तावा रज़विय्या, 19/195)

अ़त्तार का चमन कितना प्यारा चमन !

मस्जिद की वीरानी का सबब मत बनो

मस्जिद को आबाद कीजिये वीरान नहीं, हर शख़्स को येह ख़याल रखना चाहिये कि उस की किसी ह़रकत की वज्ह से कोई नमाज़ी मस्जिद से दूर न हो।

ख़ुद को नेकियों का ह़रीस बनाइये

मुसलमान को दुन्या की दौलत का नहीं, नेकियों का ह़रीस होना चाहिये।

अपने किरदार से मुस्तक़्बिल के मेअ़मारों को संवारें

इज्ज़ो इन्किसार अगर हमारे अन्दर होगा तो ज़ाहिर है कि हमारे अत़राफ़ में भी इस की बरकतें ज़ाहिर होंगी और लोग येह सीखेंगे, हमारे बच्चे भी सीखेंगे।

अह़कामे तिजारत

1 कम केरेट का सोना ज़ियादा केरेट बता कर बेचना

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले में कि सुनार मार्केट में कुछ दुकानदार ह़ज़रात कारख़ानेदार से तय्यार ज़ेवरात लेते हैं और बाज़ औक़ात ऐसा भी होता है कि ज़ेवर 20.5 केरेट का होता है और कारख़ानेदार कहता है कि येह 21 केरेट का है जब कि दुकानदार को मालूम होता है कि येह ज़ेवर 20.5 केरेट का है ऐसी सूरत में दुकानदार का कस्टमर को वोह ज़ेवर 21 केरेट का कह कर बेचना कैसा ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में 20.5 केरेट का ज़ेवर किसी कस्टमर को 21 केरेट का कह कर बेचना, झूट और धोका है। ऐसा करना हरगिज़ जाइज़ नहीं, लिहाज़ा दुकानदार पर वाजिब है कि कस्टमर को बताए कि येह ज़ेवर इतने केरेट का है, ऐसा न बताने से गाहक का ह़क़ मुतअस्सिर होता है क्यूंकि जो रेट 21 केरेट के होंगे उस से कम केरेट के रेट कम होंगे।

धोका देने की मुमानअ़त से मुतअ़ल्लिक़ सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में रिवायत है : من غشنا فلیس منا यानी : जिस ने हमें धोका दिया, वोह हम में से नहीं।

(مسلم، 64/1، حدیث: 283)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 ऑनलाइन प्लेट फ़ार्मज़ से ख़रीदारी करना

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले में कि ऑनलाइन प्लेट फ़ॉर्म मसलन Ali Express वग़ैरा से कपड़े, मोबाइल का सामान और दीगर ज़रूरी रोज़ मर्रा की चीज़ें, ख़रीदते वक़्त हमें येह मालूम नहीं होता कि ख़रीदी जाने वाली चीज़ सेलर की मिल्किय्यत में भी है या नहीं ? तो जब हमें पता नहीं है कि चीज़ मम्लूक व मक़्बूज़ भी है या नहीं तो क्या ऐसी सूरत में हमारा उन्हें ख़रीदना जाइज़ है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में ऑनलाइन प्लेट फ़ॉर्म से ख़रीदारी जाइज़ है और बैअ़ क़ब्लुल क़ब्ज़ या क़ब्लुल मलिक होने का मह़ज़ शुबा ना जाइज़ होने की वज्ह नहीं बन सकता। हां जिस प्लेट फ़ॉर्म के मुतअ़ल्लिक़ यक़ीनी त़ौर पर मालूम हो जाए कि वोह बैअ़ क़ब्लुल क़ब्ज़ के त़ौर बेचता है ऐसे प्लेट फ़ॉर्म से ख़रीदारी करना ना जाइज़ होगा।

अ़ल्लामा तफ़्ताज़ानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ शर्हुत्तल्वीह़ में लिखते हैं :

الاصل فی العقود ھو الانعقاد والجواز اذلم توضع فی الشرع الا لذلك

यानी उ़क़ूद में अस्ल, इन्इ़क़ाद व जवाज़ है क्यूंकि शरअ़ ने उन की वज़्अ़ ही इन्इ़क़ाद व जवाज़ के लिये फ़रमाई है। जब तक यक़ीनी त़ौर पर फ़साद मालूम न हो मह़ज़ शक

से उक़ूद के फ़साद का हुक्म न होगा। आप ही फ़रमाते हैं : انه لايثبت بالشك यानी फ़साद शक से साबित न होगा। (شرح التلویح علی التوضیح، ص89)

बुरहानुल मिल्लते वद्दीन अबुल मआ़ली अज़्ज़ख़ीरतुल बुरहानिया अश्शहीर ब ज़ख़ीरतुल फ़तावा में लिखते हैं : لا يثبت الفساد بالشك والاحتمال यानी शक व एह़तिमाल से फ़साद साबित नहीं होता। (الذخیرۃ البرهانیۃ، 80/13)

وَاللہُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 सूद से बचने के लिये सोना ख़रीद कर अपना नफ़्अ़ रख कर आगे बेचना ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले में कि एक शख़्स मुझ से क़र्ज़ लेना चाहता है और मैं अपना प्रॉफ़िट भी रखना चाहता हूं लिहाज़ा हम ने येह त़रीक़ा इख़्तियार किया है कि क़र्ज़दार को 2 लाख रुपिये क़र्ज़ चाहिये तो मैं बाज़ार से उसे दो लाख का सोना ख़रीद कर उधार में एक मुअ़य्यन मुद्दत के लिये 2 लाख 30 हज़ार का बेच दूंगा, क्या हमारा येह त़रीक़ा इख़्तियार करना दुरुस्त है।

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में बयान कर्दा त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ अगर आप दो लाख का सोना ख़रीद कर उस पर क़ब्ज़ा करने के बाद क़र्ज़दार को एक मुअ़य्यन मुद्दत के लिये 2 लाख 30 हज़ार में बेचेंगे तो इस त़रह़ अ़क़्द करना जाइज़ व दुरुस्त है, और उसे अ़क़्दे मुराबह़ा कहते हैं कि इस में बेचने वाला ख़रीदार को अपना नफ़्अ़ ज़ाहिर कर के बेचता है और अ़क़्दे मुराबह़ा उधार भी हो सकता है।

लेकिन इस में येह ख़याल रखा जाए कि सोना ख़रीद कर क़ब्ज़े में लेना ज़रूरी है फिर आगे बेचा जाए वरना अ़क़्द ना जाइज़ हो जाएगा।

وَاللہُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

4 बेची हुई चीज़ अदाएगी के बाद कम क़ीमत में वापस ख़रीदना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले में कि मैं ने अपने दोस्त को एक पुराना मोबाइल 35000 रुपिये में फ़रोख़्त किया। मैं ने पैसों पर और उस ने मोबाइल पर क़ब्ज़ा भी कर लिया। लेकिन मोबाइल लेने के कुछ देर बाद मेरा दोस्त वापस आ गया और कहने लगा कि मेरे घर वाले कह रहे हैं कि फ़िलह़ाल येह मोबाइल वापस कर दो, हम कुछ महीनों बाद तुम्हें नया मोबाइल दिला देंगे। अब मैं येह चाहता हूं कि जो मोबाइल मैं ने उसे 35000 में फ़रोख़्त किया था, अब मैं वोही मोबाइल उस से 32000 में ख़रीद लूं, मेरी रहनुमाई फ़रमाएं कि जो मोबाइल मैं ने उसे 35000 में फ़रोख़्त किया था और तक़ाबिज़े बदलैन भी मुकम्मल हो चुका था, क्या अब वोही मोबाइल मैं अपने दोस्त से 32000 में ख़रीद सकता हूं ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में जब पहला सौदा हो चुका और तक़ाबिज़े बदलैन भी मुकम्मल हो लिया तो जो मोबाइल आप ने 35000 में बेचा था वोही मोबाइल दूसरे सौदे में बाहमी रिज़ामन्दी से 32000 में ख़रीदना, जाइज़ है। अलबत्ता अगर मुश्तरी ने 35000 अदा न किये हों तो अब 32000 में ख़रीदना जाइज़ नहीं होगा।

सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رحمۃ اللہ علیہ लिखते हैं : "जिस चीज़ को बैअ़ कर दिया है और अभी समन वुसूल नहीं हुवा है, उस को मुश्तरी से कम दाम में ख़रीदना, जाइज़ नहीं अगर्चे उस वक़्त उस का नर्ख़ कम हो गया हो। यूंही अगर मुश्तरी मर गया, उस के वारिस से ख़रीदी जब भी जाइज़ नहीं... मुश्तरी से उसी दाम में या ज़ाइद में ख़रीदी या समन पर क़ब्ज़ा करने के बाद ख़रीदी येह सब सूरतें जाइज़ हैं।" (बहारे शरीअ़त, 2/708)

وَاللہُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रौशन सितारे

हज़रते सालिम

मौला अबी हुज़ैफ़ा رضی اللہ عنہما

एक मरतबा मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रते उ़मरे फ़ारूक़ رضی اللہ عنہ ने अपने रुफ़क़ा से फ़रमाया : किसी चीज़ की तमन्ना करो। एक शख़्स ने कहा : ऐ काश ! येह घर सोने से भरा होता और मैं उसे अल्लाह पाक की राह में ख़र्च कर देता। फ़ारूक़े आज़म رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया : तमन्ना करो। एक शख़्स ने कहा : काश ! येह घर मोतियों, ज़बरजद और जवाहिरात से भरा होता और मैं इसे राहे ख़ुदा में सदक़ा व ख़ैरात कर देता। फ़रमाया : तमन्ना करो। लोगों ने अ़र्ज़ की : या अमीरल मोमिनीन ! हमें नहीं मालूम (कि हम क्या तमन्ना करें) ? फ़ारूक़े आज़म ने फ़रमाया : मेरी तमन्ना है कि येह घर हज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़, मुआ़ज़ बिन जबल और सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ा رضی اللہ عنہم जैसे लोगों से भरा होता।[1] प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़ारूक़े आज़म رضی اللہ عنہ हज़रते सालिम की बहुत ज़ियादा तारीफ़ किया करते थे[2] क्यूंकि आप बयक वक़्त कई ख़ुसूसिय्यात रखते थे आप ह़ाफ़िज़ भी थे और क़ारी भी, इमाम भी थे और मह़ब्बते इलाही से सरशार भी, मुफ़स्सिरे क़ुरआन भी थे और मुख़्लिस इ़बादत गुज़ार भी।[3]

अनमोल सीरत हज़रते सालिम رضی اللہ عنہ साबिक़ुल इस्लाम हैं, नस्ल के एतिबार से फ़ारसी (ईरानी) थे बचपन में ग़ुलाम बना लिये गए हज़रते अबू हुज़ैफ़ा की ज़ौजा हज़रते सुबैतह अन्सारिया رضی اللہ عنہا ने आप को बचपन में ख़रीद कर आज़ाद कर दिया[4] बादे अज़ां हज़रते अबू हुज़ैफ़ा رضی اللہ عنہ ने आप को अपना मुंह बोला बेटा बना लिया, इसी वज्ह से आप को मुहाजिरीन व अन्सार दोनों में शुमार किया जाता है।[5] हज़रते अबू हुज़ैफ़ा رضی اللہ عنہ ने अपनी भतीजी की शादी आप से कर दी[6] आप ने मुशरिकीने मक्का के ज़ुल्मो सितम बरदाश्त किये[7] फिर अपने मौला ह़ज़रते अबू हुज़ैफ़ा के साथ मदीने की त़रफ़ हिजरत की और ह़ज़रते अ़ब्बाद बिन बिश्र के घर क़ियाम किया[8] आप का शुमार अहले सुफ़्फ़ा में भी होता है।[9]

फ़ज़ाइल आप رضی اللہ عنہ का दिल रब्बे करीम की मह़ब्बत से लबरेज़ था ह़दीसे मुबारका में है : जो ऐसे शख़्स की त़रफ़ देखना चाहे जिसे अपने रब से ख़ुलूसे दिल के साथ मह़ब्बत है तो उसे चाहिये कि ह़ज़रते सालिम की त़रफ़ देखे।[10] नबिय्ये अकरम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم की हिजरत से पहले सह़ाबए किराम رحمۃ اللہ علیہم हिजरत कर के मक़ामे क़ुबा में उतरते तो ह़ज़रते सालिम उन्हें नमाज़ें पढ़ाया करते।[11] आप ने ग़ज़्वए बद्र और तमाम ग़ज़्वात में शिर्कत की।[12]

बारगाहे रिसालत में एक बार अहले मदीना में कुछ ख़ौफ़ फैल गया, ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स और ह़ज़रते सालिम رضی اللہ عنہما मस्जिद में तल्वार सौंत कर खड़े हो गए हुज़ूरे अकरम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم बाहर तशरीफ़ लाए और ख़ुत़्बा फ़रमाया : ऐ लोगो क्यूं न हुवा कि तुम ख़ौफ़ में अल्लाह व रसूल की त़रफ़

इल्तिजा लाते, तुम ने ऐसा क्यूं न किया जैसा उन दोनों ईमान वाले मर्दों ने किया।[13] एक बार ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित ने तन्हाई में बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : आप को सह़ाबा में कौन ज़ियादा मह़बूब हैं ताकि मैं उन से मह़ब्बत करूं ? रसूले अकरम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने 20 नाम बयान किये जिन में एक नाम ह़ज़रते सालिम का भी था।[14]

बेहतरीन क़ारी आप का शुमार बड़े क़ारी सह़ाबा में होता है ह़दीसे मुबारका में है : क़ुरआन चार लोगों से पढ़वाओ, फिर उन में एक नाम ह़ज़रते सालिम का लिया।[15] ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا फ़रमाती हैं कि मैं एक रात रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم के पास देर से पहुंची तो मुझ से दरयाफ़्त किया : तुम कहां थीं ? अ़र्ज़ की : मैं ने एक शख़्स को मस्जिद में (बड़े प्यारे अन्दाज़ में) क़िराअत करते हुए सुना, उस जैसी तिलावत इस से पहले मैं ने कभी नहीं सुनी, येह सुन कर मह़बूबे अकरम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم मस्जिद की त़रफ़ चल दिये मैं भी पीछे पीछे चलने लगी, वहां पहुंच कर रसूले करीम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने मुझ से पूछा : क्या तुम जानती हो येह तिलावत करने वाला कौन है ? अ़र्ज़ की : नहीं ! फ़रमाया : येह सालिम मौला अबी ह़ुज़ैफ़ा है, फिर कहा : अल्लाह करीम का शुक्र है जिस ने मेरी उम्मत में इस जैसा (ख़ुश इल्ह़ान क़ारी और बेहतरीन) फ़र्द पैदा किया।[16]

शहादत सिन 12 हिजरी जंगे यमामा में नबुव्वत के झूटे दावेदार मुसैलमा कज़्ज़ाब की सरकोबी के लिये ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ عنہ ने मुसलमानों का लशकर रवाना किया, जंग का दिन बड़ा आज़माइश वाला था दुश्मन ने इस ज़ोर से ह़म्ला किया कि मुसलमानों के क़दम पीछे हटने लगे येह देख कर ह़ज़रते सालिम رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया : हम दौरे नबवी में तो इस त़रह़ नहीं करते थे फिर आप ने निस्फ़ पिन्डली तक एक गढ़ा खोदा और उस में खड़े हो गए (कि क़दम पीछे न हटा सकूं) और निहायत जांबाज़ी से लड़ने लगे उस वक़्त आप के हाथ में मुहाजिरीन का झन्डा था।[17] जब आप ने झन्डा लिया था तो कुछ मुजाहिदीन ने कहा : हमें धड़का लगा रहेगा कि हम आप की वज्ह से कहीं किसी मुश्किल में न पड़ जाएं, फ़रमाया : अगर मेरी वज्ह से तुम किसी मुश्किल में फंसो तो मैं बुरा ह़ाफ़िज़े क़ुरआन होऊंगा (यानी मेरी त़रफ़ से तुम्हें कोई मुश्किल न पहुंचेगी)।[18] आप رضی اللہ عنہ निहायत जांबाज़ी से ख़त्मे नबुव्वत के मुन्किर दुश्मनों का मुक़ाबला करने लगे, झन्डा आप के दाएं हाथ में था जब लड़ते लड़ते सीधा हाथ कट गया तो आप ने झन्डे को बाएं हाथ से पकड़ लिया दुश्मन ने वार कर के बाएं हाथ को भी काट दिया, आप ने झन्डे को गले से चिमटाए रखा और येह आयत पढ़ना शुरूअ़ कर दी : तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मुह़म्मद तो एक रसूल हैं उन से पहले और रसूल हो चुके तो क्या अगर वोह इन्तिक़ाल फ़रमाएं या शहीद हों तो तुम उल्टे पांव फिर जाओगे।[19] आख़िरेकार ज़ख़्मों की ताब न ला कर नीचे गिर पड़े[20] बद्री सह़ाबी ह़ज़रते यज़ीद बिन क़ैस رضی اللہ عنہ ने आगे बढ़ कर झन्डा थाम लिया।[21] ह़ज़रते अबू ह़ुज़ैफ़ा رضی اللہ عنہ भी उस जंग में शहीद हुए जब आप दोनों की नाश मुबारक को तलाश किया गया तो दोनों के जिस्म एक दूसरे के इस त़रह़ क़रीब थे कि आप के क़दम उन के सर के पास और उन के क़दम आप के सर के पास थे।[22] शहादत से पहले आप ने ह़ज़रते अबू ह़ुज़ैफ़ा رضی اللہ عنہ के पहलू में दफ़्नाने की वसिय्यत की।[23] अल्लाह की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

(1)مستدرک، 4/244، حدیث:5055(2)تہذیب الاسماء، 1/206(3)حلیۃ الاولیاء، 1/232(4)اعلام للزرکلی،3/73-اسد الغابہ،2/366(5)اسد الغابہ، 2/366(6)اعلام للزرکلی،3/73(7)فتح الباری لابن حجر،13/268، تحت الحدیث: 6940(8)طبقات ابن سعد،3/62(9)حلیۃ الاولیاء،1/454(10)قوت القلوب، 2/85(11)طبقات ابن سعد، 3/64(12)البدایۃ والنہایۃ، 5/44(13)مسند احمد، 6/242، حدیث:17826 ملخصاً(14)مجمع الزوائد، 9/247، حدیث: 14939 (15)حلیۃ الاولیاء، 1/232(16)مسند احمد، 9/515، حدیث: 25375-سیر السلف الصالحین، ص200(17)طبقات ابن سعد، 3/65-الاکتفاء للحمیری، 2/123 (18)اسد الغابہ 2/342(19)پ4، اٰل عمرٰن:144(20)اسد الغابہ، 2/368-سیر السلف الصالحین، ص 200(21)الاکتفاء للحمیری، 2/123(22)طبقات ابن سعد،3/65(23)اعلام للزرکلی،3/73۔

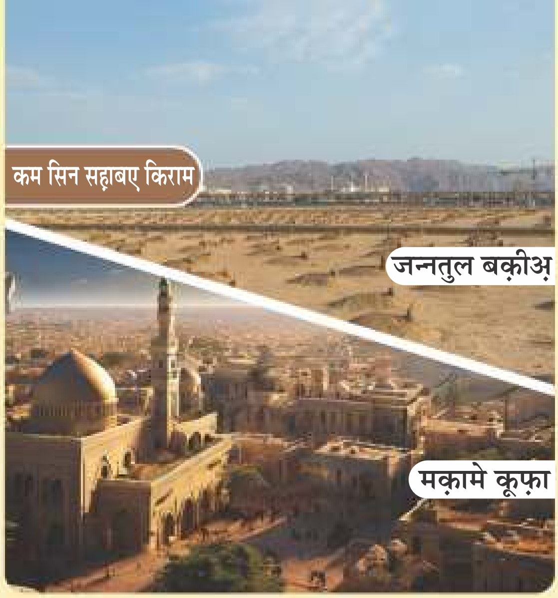

हज़रते महमूद बिन लबीद अन्सारी رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا और हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन अबज़ी ख़ुज़ाई رَضِیَ اللہُ عَنْہُ

जिन ख़ुश नसीबों को कमसिनी में अल्लाह पाक के आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सहाबी होने का शरफ़ हासिल हुवा उन में हज़रते महमूद बिन लबीद और हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन अबज़ी رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا भी शामिल हैं, आइये उन की मुख़्तसर सीरत पढ़ कर अपने दिलों को महब्बते सहाबए किराम से सरशार करते हैं :

हज़रते महमूद बिन लबीद अन्सारी رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا

आप رَضِیَ اللہُ عَنْہُ का शुमार कमसिन सहाबा में होता है, आप رَضِیَ اللہُ عَنْہُ के वालिद का नाम हज़रते लबीद और वालिदा का नाम हज़रते उम्मे मन्ज़ूर है, रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हयाते मुबारका में आप رَضِیَ اللہُ عَنْہُ मदीनए मुनव्वरा में पैदा हुए।[1]

हज़रते मुहम्मद बिन ईसा तिर्मिज़ी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते महमूद बिन लबीद رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़माना पाया और आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत भी की है, उस वक़्त आप छोटे लड़के थे।[2]

रिवायाते अहादीस : आप رَضِیَ اللہُ عَنْہُ से अहादीसे मुबारका भी मरवी हैं।[3]

अल्लाह पाक की अपने बन्दे से महब्बत : एक रिवायत में आप رَضِیَ اللہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक अल्लाह पाक अपने बन्दे को जिस से वोह महब्बत करता है दुन्या से ऐसे बचाता है जैसे तुम अपने मरीज़ को खाने पीने से इस ख़ौफ़ से बचाते हो कि खाने की सूरत में बीमार हो जाएगा।[4]

विसाल : हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त आप رَضِیَ اللہُ عَنْہُ 13 साल के थे, आप رَضِیَ اللہُ عَنْہُ ने 96 हिजरी में मदीनए मुनव्वरा में वफ़ात पाई।[5]

हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन अबज़ी ख़ुज़ाई رَضِیَ اللہُ عَنْہُ

आप رَضِیَ اللہُ عَنْہُ का शुमार कमसिन सहाबा में होता है,[6] आप رَضِیَ اللہُ عَنْہُ को रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे नमाज़ पढ़ने का शरफ़ हासिल है।[7]

रिवायाते अहादीस : आप رَضِیَ اللہُ عَنْہُ से 12 अहादीसे मुबारका मरवी हैं।[8]

वित्र की नमाज़ में कौन सी सूरतें पढ़ें ? एक रिवायत में आप رَضِیَ اللہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वित्र की नमाज़ में (पहली रक्अ़त में) سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۙ, (दूसरी रक्अ़त में) قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ और (तीसरी रक्अ़त में) قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ की तिलावत किया करते थे।[9]

विसाल : आप رَضِیَ اللہُ عَنْہُ ने 71 हिजरी में कूफ़ा में वफ़ात पाई।[10]

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خاتمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)فتح الباری لابن حجر، 2/484، تحت الحدیث: 450- الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، 3/435(2)ترمذی، 4/4(3)اسد الغابۃ، 5/122(4)مسند احمد، 9/158، حدیث:23683(5)تہذیب التہذیب، 8/79(6)فتح الباری لابن حجر، 9/425، تحت الحدیث: 4765(7)الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، 2/366 (8)تہذیب الاسماء واللغات، 1/274(9)نسائی، ص298، حدیث: 1728- بہارِ شریعت، 1/653(10)البدایۃ والنہایۃ، 12/158۔

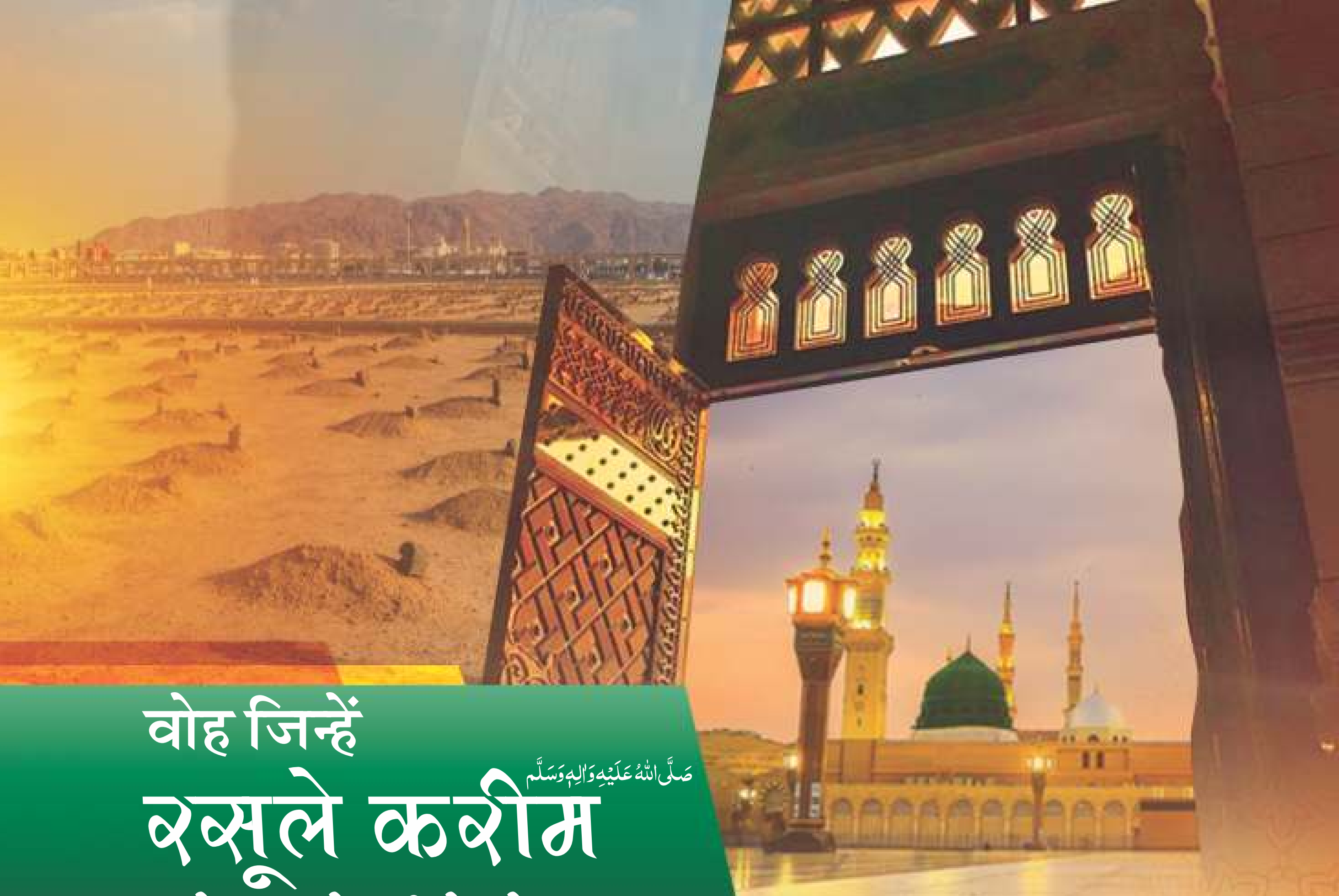

वोह जिन्हें रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने सीने से लगाया !

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ह़ज़रत मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते मुबारका हमारे लिये कामयाबी का ज़ीना है, जब हम नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़िन्दगी का मुत़ालआ़ करते हैं तो इस में आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم के साथ अन्दाज़, शफ़्क़तो मह़ब्बत और मिलनसारी वाला मिलता है, हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم की ग़मी व ख़ुशी में शरीक होते, मौक़ेअ़ की मुनासिबत से उन की दिलजोई फ़रमाते, मदद फ़रमाते, तह़ाइफ़ से नवाज़ते, सुवारी पर अपने साथ सुवार फ़रमाते, ख़बरगीरी फ़रमाते, इ़यादत फ़रमाते वग़ैरा वग़ैरा। इसी त़रह़ हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़िन्दगी में मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर मुख़्तलिफ़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم को सीने से लगाने का ज़िक्र भी मिलता है, मसलन रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मह़ब्बत का इज़्हार फ़रमाते हुए किसी सह़ाबी को सीने से लगाया, तो किसी के अच्छे जवाब से ख़ुश हो कर उसे अपने सीने से लगाया, तो किसी को शफ़्क़त से सीने लगाया, तो किसी के आने पर ख़ुशी से उसे अपने सीने से लगाया। आइये ! जिन सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم को नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सीने से लगने का शरफ़ ह़ासिल हुवा है उन में से चन्द के मह़ब्बत भरे वाक़िआ़त पढ़ते हैं।

ख़ुलफ़ाए अरबआ़ को सीने से लगाया

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ عَنْه से एक त़वील रिवायत मरवी है, जिस का ख़ुलासा येह है कि अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم

को चन्द नसीहतें फ़रमाईं और फिर खुलफ़ाए अरबआ हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रते उमर फ़ारूक़े आज़म, हज़रते उस्माने ग़नी और हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم में से हर एक को बुला कर अपने सीने से लगाया और उन की पेशानी को बोसा दिया। और हर एक के मक़ामो मर्तबे के मुताबिक़ उन के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए।(1)

इमामे हसन व इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا को सीने से लगाया

हज़रते याला رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रते इमामे हसन और हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا दौड़ते हुए रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास आए तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन दोनों को अपने सीने से लगा लिया और फ़रमाया : औलाद बख़ील और बुज़्दिल बना देने वाली है।(2)

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : औलाद को (बख़ील और बुज़्दिल) फ़रमाना उन की बुराई के लिये नहीं बल्कि इन्तिहाई महब्बत के इज़्हार के लिये है यानी औलाद की इन्तिहाई महब्बत इन्सान को बख़ील व बुज़्दिल बन जाने पर मजबूर कर देती है।(3)

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا को सीने से लगाया

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे अपने सीने से लगाया और येह दुआ दी : اَللّٰهُمَّ عَلِّمْهُ الْحِكْمَةَ यानी ऐ अल्लाह ! इसे हिक्मत का इल्म अता फ़रमा।(4) जब कि एक रिवायत में है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को अपने सीने से लगा कर येह दुआ दी : اَللّٰهُمَّ عَلِّمْهُ الْكِتَابَ यानी ऐ अल्लाह ! इसे किताब का इल्म अता फ़रमा।(5)

हज़रते मुफ़्ती शरीफ़ुल हक़ अमजदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इसी दुआ की बरकत है कि हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا को वोह इल्म अता हुवा कि उन को "हिब्रे उम्मत", "बहरुल उलूम", "रईसुल मुफ़स्सिरीन" (और) "तर्जमानुल कुरआन" कहा जाता है।(6)

हज़रते हाला बिन अबी हाला رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को सीने से लगाया

हज़रते हाला बिन अबी हाला رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का बयान है कि वोह नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में उस वक़्त हाज़िर हुए जब आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा रहे थे, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेदार हुए तो हज़रते हाला رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को अपने सीने से लगा लिया और तीन बार फ़रमाया : हाला, हाला, हाला।

हज़रते इमाम अबुल क़ासिम सुलैमान बिन अहमद तबरानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते हाला رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मुलाक़ात कर के इस लिये इतना खुश हुए क्यूंकि हज़रते हाला رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ उम्मुल मोमिनीन हज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के क़रीबी रिश्तेदार (यानी पहले शौहर के बेटे) थे।(7)

हज़रते जाफ़र तय्यार رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को सीने से लगाया

हज़रते जाफ़र तय्यार رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ जब हबशा से हिजरत कर के मदीना तशरीफ़ लाए तो रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को अपने सीने से लगाया, आप की पेशानी पर बोसा दिया और फ़रमाया : मैं नहीं जानता कि मैं ख़ैबर की फ़त्ह से ज़ियादा खुश हुवा या जाफ़र के आने से।(8)

हज़रते जाफ़र तय्यार رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के बच्चों को सीने से लगाया

हज़रते जाफ़र तय्यार رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ज़ौजए मोहतरमा हज़रते अस्मा बिन्ते उमैस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं : जब जंगे मौता में हज़रते जाफ़र तय्यार رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की शहादत हुई तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे घर तशरीफ़ लाए और मुझ से फ़रमाया : अस्मा ! जाफ़र के बच्चे कहां हैं ? मैं ने बच्चों को रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर कर दिया, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन बच्चों को अपने

सीने से लगा लिया और आप صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आंखों से आंसू जारी हो गए।[9]

हज़रते ज़ैद बिन हारिसा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को सीने से लगाया

हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं कि हज़रते ज़ैद बिन हारिसा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ (किसी सफ़र या जंग से) मदीना तशरीफ़ लाए तो उस वक़्त रसूले करीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे घर में तशरीफ़ फ़रमा थे, हज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने दरवाज़े पर दस्तक दी तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन से मिलने तशरीफ़ ले गए, उन्हें अपने सीने से लगाया और उन का बोसा लिया।[10]

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस हदीस से मालूम हुवा कि ख़ुशी में किसी से गले मिलना सुन्नत है।[11]

हज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को सीने से लगाया

ग़ज़्वए ख़ैबर के मौक़ेअ़ पर हज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ जब यासर पहलवान को वासिले जहन्नम कर के लौटे तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुशी से आगे बढ़ कर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को अपने सीने से लगाया, पेशानी पर बोसा दिया और फ़रमाया : मेरे चचा और मामूं तुम पर कुरबान हों।[12]

हज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को सीने से लगाया

हज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं जब भी हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर होता तो रसूले करीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमेशा मुझ से मुसाफ़हा फ़रमाते, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन किसी को मुझे बुलाने भेजा मैं उस वक़्त घर पर नहीं था, जब मैं घर आया तो मुझे घर वालों ने बताया कि आप को नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बुलाया था, मैं हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तख़्त पर जल्वा फ़रमा थे, आप صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे सीने से लगा लिया।[13]

हज़रते इकरिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को सीने से लगाया

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब हज़रते इकरिमा बिन अबू जहल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को अपने पास आते देखा तो उन के लिये खड़े हो गए, उन को अपने सीने से लगाया और इरशाद फ़रमाया : ख़ुश आमदीद ऐ हिजरत करने वाले सुवार।[14]

अन्सारी सहाबी को नज़्अ़ की हालत में सीने से लगाया

हज़रते सहल बिन सअ़्द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है कि एक नौजवान अन्सारी सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ पर दोज़ख़ का ख़ौफ़ तारी हो गया और वोह दोज़ख़ का ज़िक्र सुन कर रोते थे, और इस ख़ौफ़ की वज्ह से उन्हों ने अपने आप को घर में क़ैद कर लिया। रसूले करीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उन सहाबी की इस कैफ़िय्यत के बारे में बताया गया तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के पास घर पर आए और उन को अपने सीने से लगा लिया तो उन सहाबी का इन्तिक़ाल हो गया। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से फ़रमाया : अपने साथी के कफ़न व दफ़न का इन्तिज़ाम करो, दोज़ख़ के ख़ौफ़ ने इस का जिगर टुक्ड़े टुक्ड़े कर दिया है।[15]

क़ारिईने किराम ! इन वाक़िआत से हमें भी येह दर्स मिलता है कि सिर्फ़ ईदैन (यानी ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्हा) पर ही नहीं बल्कि हम भी ख़ुशी ग़मी मौक़ेअ़ की मुनासिबत से एक दूसरे से गले मिल कर दिलजोई करें ताकि आपस में महब्बत की फ़ज़ा क़ाइम हो और दिलों से नफ़रतें दूर हों।

अल्लाह पाक हमें इन बातों पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

(1) شرف المصطفیٰ، 6/30 تا 32، حدیث: 2527-الریاض النضرہ، 1/48 تا 50 (2) مسند احمد، 29/104، حدیث: 17562-مشکاۃ المصابیح، 2/171، حدیث: 4692 (3) مراٰۃ المناجیح، 6/367 (4) بخاری، 2/548، حدیث: 3756 (5) بخاری، 1/44، حدیث: 75 (6) نزہۃ القاری، 1/428 (7) معجم اوسط، 3/37، حدیث: 3794 (8) سنن کبریٰ للبیہقی، 7/163، حدیث: 13580 (9) دیکھئے: طبقاتِ ابن سعد، 8/220 (10) دیکھئے: ترمذی، 4/335، حدیث: 2741 (11) مراٰۃ المناجیح، 6/359 (12) دیکھئے: تاریخ ابن عساکر، 18/381 (13) دیکھئے: ابوداؤد، 4/453، حدیث: 5214 (14) دیکھئے: معجم کبیر، 17/373، حدیث: 1021 (15) مستدرک للحاکم، 3/317، حدیث: 3881۔

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये

मज़ार हज़रते शैख़ हाजी अ़ब्दुल करीम चिश्ती رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه

मज़ार हज़रते ख़्वाजा मुहम्मद हाशिम नक़्शबन्दी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه

रजबुल मुरज्जब इस्लामी साल का सातवां महीना है। इस में जिन औलियाए उ़ज़्ज़ाम और उ़लमाए इस्लाम का यौमे विसाल या उ़र्स है, उन में से 11 का तआ़रुफ़ मुलाहज़ा फ़रमाइये :

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام

1 वलिय्ये कामिल हज़रते शैख़ हाजी अ़ब्दुल करीम चिश्ती رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه आ़लिमे दीन, मुरीदो ख़लीफ़ा ख़्वाजा निज़ामुद्दीन बल्ख़ी, शैख़े त़रीक़त, शारेहे फ़ुसूसुल ह़कम और साहिबे करामत थे। विसाल 27 रजब 1045 हिजरी को फ़रमाया।(1)

2 हज़रते डोरे या दोरी शाह क़ादिरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه वलिय्ये कामिल थे। डोरे शाह बअ़हद शाहजहां हिन्द में आए, शहज़ादए दाराशिकोह आप का मोतक़िद था और आप को माधूसानी कहा करता था। आप का विसाल 14 रजब 1050 हिजरी में हुवा।(2)

3 पीरे त़रीक़त हज़रते शाह मुहिब्बुल्लाह गोड़यानवी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه सिल्सिलए चिश्तिया निज़ामिया के शैख़े त़रीक़त मिर्ज़ा बख़्श अल्लाह बेग के मुरीदो ख़लीफ़ा और ख़्वाजा मियां मुहम्मद शाह होशियार पूरी के मुर्शिद थे। आप की पैदाइश गोड़यानी, ज़िल्अ़ गोड़ गानोह, हरियाना, हिन्द में हुई और विसाल 12 रजब 1295 हिजरी को देहली में हुवा।(3)

4 हज़रते ख़्वाजा मुहम्मद हाशिम नक़्शबन्दी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه 27 रजब 1313 हिजरी को विसाल फ़रमाया। आप ख़्वाजा मुहम्मद उ़स्मान दामानी के मुरीदो ख़लीफ़ा, ख़ौफ़े ख़ुदा व इश्क़े रसूल के पैकर, यादगारे अस्लाफ़ और बानिये आस्तानए आ़लिया हैं।(4)

5 हज़रते अ़ब्दुल्लाह मुसाफ़िर सह़राई क़ादिरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने इल्मे दीन ह़ासिल किया, बैअ़त का शरफ़ ख़्वाजा ह़बीबुल्लाह शाह क़ादिरी शत्तारी से पाया, मुम्बई में रुश्दो हिदायत में मसरूफ़ रहे। आप साहिबे करामत और मुस्तजाबुद्दावात थे, आप का विसाल 5 रजबुल मुरज्जब 1339 हिजरी को हुवा।

6 हज़रते ख़्वाजा सूफ़ी बाबा फ़ज़्ले करीम शाह मुज़म्मिली गुजराती क़ुरैशी हाशिमी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की पैदाइश 1320 हिजरी को गुजरात में हुई और विसाल 14 रजब 1407 हिजरी को हुवा। आप सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिया गंजालविया मुज़म्मिलिया के शैख़े त़रीक़त, उ़लमा व

मज़ार हज़रते बाबा फ़ज़्ले करीम शाह मुज़म्मिली गुजराती क़ुरैशी हाशिमी رحمۃ اللہ علیہ

मज़ार अ़ल्लामए अ़स्र मुफ़्ती अ़ता मुहम्मद رحمۃ اللہ علیہ

हुफ़्फ़ाज़ के मुर्शिद हैं। जामिआ़ अन्वारुल इस्लाम आप के फ़ैज़ान का मज़्हर है।

उ़लमाए इस्लाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام

(7) मुह़द्दिसे कबीर इमाम त़लक़ बिन ग़न्नाम नख़ई कूफ़ी رحمۃ اللہ علیہ ने इमाम शरीक क़ाज़ी, इमाम मसऊ़दी और इमाम शैबान वग़ैरा से अह़ादीसे मुबारका रिवायत कीं। आप के शागिर्दों में इमाम बुख़ारी, इमाम अबू शैबा बिन अबू बक्र वग़ैरा मुह़द्दिसीन शामिल हैं, आप का विसाल माहे रजब 211 हिजरी में हुवा।(5)

(8) ह़ज़रते बिश्र बिन ह़कम अ़ब्दी नैशापुरी رحمۃ اللہ علیہ की पैदाइश नैशापुर, ईरान में हुई। अ़ज़ीम मुह़द्दिसीन मसलन इमाम मालिक और इमाम सुफ़्यान बिन उ़यैना से रिवायते ह़दीस की, आप से रिवायत करने वालों में इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम जैसे अइम्मए अह़ादीस शामिल हैं। आप का विसाल माहे रजब 237 या 238 हिजरी में हुवा।(6)

(9) अ़ल्लामए अ़स्र मुफ़्ती अ़ता मुहम्मद रतवी رحمۃ اللہ علیہ की पैदाइश 1301 हिजरी को इ़ल्मी व रूहानी घराने में हुई, आप उ़लूमो फ़ुनून की तह़सील के लिये कई शहरों का सफ़र करते हुए रामपुर पहुंचे और अ़ल्लामा फ़ज़्ले हक़ रामपुरी से इस्तिफ़ादा किया, वापस आ कर वालिद साह़िब की मस्नदे तदरीस संभाली और ज़िन्दगी भर तदरीस करते रहे, आप आस्तानए आ़लिया नक़्शबन्दिया में बैअ़त थे और ख़िलाफ़त पाई। आप बेहतरीन ख़त़ीब भी थे। विसाल 10 रजब 1376 हिजरी को हुवा।(7)

(10) आ़लिमे बा अ़मल ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मज़ंगवी رحمۃ اللہ علیہ गुजरात में पैदा हुए, आप कुतुब बीनी व कुतुब फ़हमी के माहिर, दर्से क़ुरआनो ह़दीस के शाइक़, अन्जुमने इस्लामिया के बानी और साह़िबे तस्नीफ़ आ़लिमे दीन थे। आप का विसाल 30 रजब 1384 हिजरी में हुवा।(8)

(11) तल्मीज़े मुह़द्दिसे आज़म ह़ज़रते मौलाना क़ाज़ी दोस्त मुहम्मद सिद्दीक़ी رحمۃ اللہ علیہ की पैदाइश 1336 हिजरी को इ़ल्मी घराने में हुई और यकुम रजब 1407 हिजरी को विसाल फ़रमाया, आप जय्यिद आ़लिमे दीन, तर्जुमाने अहले सुन्नत, मुस्तफ़ीज़ जामिआ़ मन्ज़रे इस्लाम बरेली शरीफ़, फ़ाज़िले जामिआ़ रज़विय्या, सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिया राशिदिया में मुरीद, अ़ज़ीमुल मर्तबत ख़त़ीब और लह़ने दाऊदी के मालिक थे।(9)

---

(1) इन्साइक्लो पीडिया औलियाए किराम, 3 / 113 (2) तह़क़ीक़ाते चिश्ती, स. 526। (3) अज़्कारे जमील, ह़ालात ह़ज़रते सय्यिद बरकत अ़लीशाह, स. 42 (4) इन्साइक्लो पीडिया औलियाए किराम, 2 /219
(5) تاریخِ اسلام للذہبی، 5 / 335- تہذیب التہذیب، 4 / 124، 125- الہدایۃ والارشاد، 1 / 378 (6) اسامی شیوخ البخاری للصغانی، ص 81، 82- تہذیب الکمال فی اسماء الرجال، 2/ 50، 51
(7) तज़्किरए उ़लमाए अहले सुन्नत, स. 65 ता 67 (8) तज़्किरए उ़लमाए अहले सुन्नत व जमाअ़त स. 336 ता 339 (9) अन्वारे उ़लमाए अहले सुन्नत, स. 246 ता 251।

मिसाल की ज़रूरत व अहमिय्यत

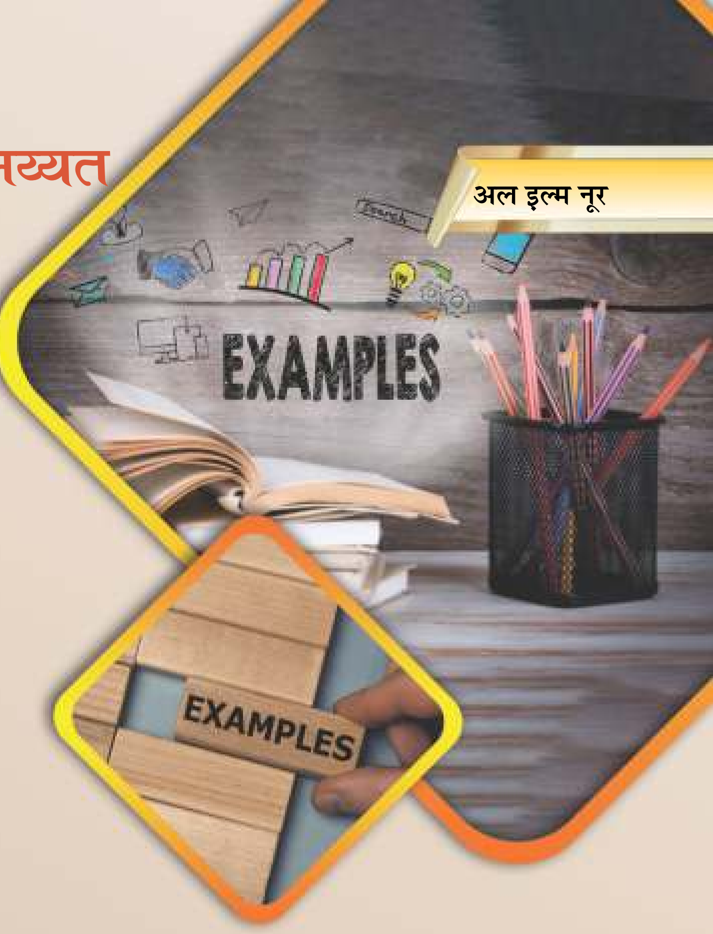

अल्लाह पाक ने इन्सान को अ़क़्ल का नूर अ़ता फ़रमाया ताकि इन्सान सहीह़ व ग़लत़ में फ़र्क़ कर सके। फिर अ़क़्ल के लिहाज़ से इन्सान मुख़्तलिफ़ दरजात में बटे हुए हैं, कोई ज़ियादा अ़क़्लमन्द तो कोई कम अ़क़्ल। जब ह़क़ीक़त येह है कि बाज़ इन्सान कम अ़क़्ल और कम फ़हम हैं तो उन्हें अ़क़्ली और ग़ैर मह़सूस बात समझाने के लिये किसी ऐसी शै की मिसाल बयान की जाती है जो उन की देखी भाली हो, उन की आ़दात और रोज़ मर्रा से तअ़ल्लुक़ रखती हो और वोह शबो रोज़ इस का नज़ारा करते हों।

हम सुब्ह़ शाम येह कहते नज़र आते हैं "**मिसाल के त़ौर पर**", "**मसलन**" "**जैसे**", या "**इसे यूं समझ लो**" वग़ैरा और हमारा टीचर या ट्यूटर भी हमें बार बार "For example" कह कह कर समझाता है। इस त़रह़ हम मिसाल दे कर बात सहूलत के साथ दूसरे को ज़ेहन नशीन करा देते हैं।

इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं : मिसालें देना अ़क़्ली त़ौर पर पसन्दीदा है।[1] मालूम हुवा कि "**मिसाल**" को हमारी ज़िन्दगी में बड़ी अहमिय्यत ह़ासिल है।

मिसाल देने का मक़्सद

मिसाल देने का मक़्सद क्या होता है ? तो इस बारे में अहले इल्मो फ़न ने मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ के साथ राय का इज़्हार किया है, चन्द आरा मुलाह़ज़ा कीजिये :

ताजुल उ़रूस में शर्हे नज़्मुल फ़सीह़ के ह़वाले से है : ضَرْبُ الْمَثَلِ اِيْرَادُهٗ لِيُتَمَثَّلَ بِهٖ وَيُتَصَوَّرَ مَا اَرَادَ الْمُتَكَلِّمُ بَيَانَهٗ لِلْمُخَاطَب यानी मिसाल इस लिये लाई जाती है ताकि इस के ज़रीए़ मुशाबहत व मुमासलत (Similarity) बयान की जाए और मुतकल्लिम ने जो बात मुख़ात़ब से बयान करने का इरादा किया है उस का तसव्वुर किया जाए।[2]

इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं : मिसाल देने का मक़्सद दिलों में असर पैदा करना होता है जो ख़ुद उस शै से नहीं होता क्यूंकि मिसाल से ग़रज़ येह होती है कि ग़ैर वाज़ेह़ बात की वाज़ेह़ से और ग़ाइब की ह़ाज़िर व मौजूद शै से मुशाबहत व मुमासलत बयान की जाए और येह मुशाबहत उस शै की ह़क़ीक़त समझने में पुख़्तगी पैदा करती है और ह़िस को अ़क़्ल के मुत़ाबिक़ कर देती है। क्या तुम नहीं देखते जब ईमान लाने की तरग़ीब मिसाल दिये बिग़ैर हो तो वोह दिल पर इस क़दर पुख़्ता असर नहीं करती जितना कि उस वक़्त करती है जब ईमान की मिसाल नूर व रौशनी से दी जाए। यूंही जब तुम सिर्फ़ कुफ़्र का ज़िक्र कर के डराओगे तो अ़क़्लों में इस की क़बाह़त व बुराई इस त़रह़ पुख़्ता नहीं होगी जैसा कि ज़ुल्मत व अन्धेरे से मिसाल के ज़रीए़ होगी। इसी त़रह़ अगर तुम्हें किसी बात की कमज़ोरी बयान करनी हो तो इस की मिसाल मकड़ी के जाले से दोगे तो येह इस ख़बर से यक़ीनी त़ौर पर ज़ियादा असर अंगेज़ होगी जो सिर्फ़ "**कमज़ोरी**" के ज़िक्र पर मुश्तमिल हो।[3]

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं : मिसाल से मक़्सूद येह होता है कि माक़ूल चीज़ मह़सूस बन कर हर एक की समझ में आ जाए और उस के ज़रीए़ मज़्मून को दिल क़बूल करे।[4]

मिसाल कैसी होनी चाहिये ?

जो बात क़ाइदे व क़ानून के तह़त की जाती है वोह अपनी एक हैसिय्यत रखती है और क़ाबिले तवज्जोह व क़ाबिले दलील क़रार पाती है वरना वोह फ़ुज़ूल ठहरती है इसी त़रह़ मिसाल बयान करने का भी एक क़ाइदा है। येह समझने के लिये दर्जे ज़ैल तीन इक़्तिबासात काफ़ी हैं :

1 किसी चीज़ का जैसा ह़ाल होगा उसी क़िस्म की चीज़ से उस की मिसाल दी जाएगी। बड़ी चीज़ की मिसाल बड़ी और ह़क़ीर चीज़ की मिसाल ह़क़ीर चीज़, इस पर एतिराज़ करना मह़ज़ ग़लत़ और बेजा है बल्कि येह तो कमाले ह़िक्मत है कि मिसाल अस्ल के मुत़ाबिक़ हो ह़क़ीर चीज़ों की मिसाल छोड़ देनी और उन के बिग़ैर मिसाल लाना उन के समझाने के लिये काफ़ी न होगा। मिस्ले मश्हूर है कि मिसाल अक़्वाल का चराग़ है। चराग़ ख़्वाह सोने का हो ख़्वाह मिट्टी का रौशनी में फ़र्क़ नहीं रखता।[5]

2 मिसाल समझाने को होती है न कि हर त़रह़ बराबरी बताने को। क़ुरआने अ़ज़ीम में नूरे इलाही की मिसाल दी ﴿كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ﴾ (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जैसे एक त़ाक़ कि उस में चराग़ है)[6] कहां चराग़ और क़ुन्दैल और कहां नूरे रब्बे जलील।[7]

क़ुरआने करीम और मिसाल

जब हम क़ुरआने करीम का मुत़ालआ़ करते हैं तो हमें इस मुक़द्दस किताब में जा बजा **"मिसालें"** नज़र आती हैं और ऐसा क्यूं न हो कि इस किताब का मक़्सद ही **"वज़ाह़त व बयान"** है जैसे तौह़ीदो रिसालत, अ़क़ाइदो नज़रिय्यात, शरीअ़तो त़रीक़त और ज़ाहिरो बात़िन का बयान वग़ैरा। इरशादे रब्बे करीम है : ﴿وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने तुम पर येह क़ुरआन उतारा कि हर चीज़ का रौशन बयान है।[8] और मिसालें बयान करने के मुतअ़ल्लिक़ इरशादे रब्बानी है : ﴿وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ (۲۱)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह मिसालें लोगों के लिये हम बयान फ़रमाते हैं कि वोह सोचें।[9]

क़ुरआने करीम से 2 मिसालें

आइये ! अब क़ुरआने करीम से 2 मिसालें मुलाह़ज़ा कीजिये कि वोह किस अच्छे अन्दाज़ से मुख़ात़ब के ज़ेहन को अस्ल मक़्सूद के क़रीब करती, तसल्ली बख़्श दावते फ़िक्र देती और उ़म्दा अन्दाज़ में किसी फ़ेल की तरग़ीब दिलाती या किसी फ़ेल से नफ़रत पैदा करती हैं।

1 इरशादे रब्बे करीम है : ﴿مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ (۲۶۱)﴾
तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उन लोगों की मिसाल जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उस दाने की त़रह़ है जिस ने सात बालियां उगाईं, हर बाली में सौ दाने हैं और अल्लाह इस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे और अल्लाह वुस्अ़त वाला, इ़ल्म वाला है।[10]

इस आयत में राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वालों की फ़ज़ीलत एक मिसाल के ज़रीए बयान की जा रही है कि येह ऐसा है जैसे कोई आदमी ज़मीन में एक दाना बीज डालता है जिस से सात बालियां उगती हैं और हर बाली में सौ दाने पैदा होते हैं। गोया एक दाना बीज के त़ौर पर डालने वाला सात सौ गुना ज़ियादा ह़ासिल करता है, इसी त़रह़ जो शख़्स राहे ख़ुदा में ख़र्च करता है अल्लाह पाक उसे उस के इख़्लास के एतिबार से सात सौ गुना ज़ियादा सवाब अ़त़ा फ़रमाता है।[11]

2 नीज़ इरशाद फ़रमाता है : ﴿مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ وَالسَّمِيْعِ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ (۲۴)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : दोनों फ़रीक़ों का ह़ाल ऐसा है जैसे एक अन्धा और बहरा हो और दूसरा देखने वाला और सुनने वाला। क्या उन दोनों की ह़ालत बराबर है ? तो क्या तुम नसीह़त नहीं मानते ?[12]

इस आयत में एक मिसाल के ज़रीए काफ़िर और मोमिन की ह़ालत बयान फ़रमाई कि दोनों फ़रीक़ों यानी काफ़िर और मोमिन का ह़ाल ऐसा है जैसे एक अन्धा और बहरा हो और दूसरा देखने वाला और सुनने वाला। काफ़िर उस की मिस्ल है जो न देखे न सुने और येह नाक़िस है, जब कि मोमिन उस की मिस्ल है जो देखता भी है और सुनता भी है और वोह कामिल है और ह़क़ व बात़िल में इम्तियाज़ रखता है, इस लिये हरगिज़ उन दोनों की ह़ालत बराबर नहीं।[13]

अह़ादीसे करीमा से 2 मिसालें

क़ुरआने करीम की त़रह़ अह़ादीसे करीमा में भी मिसालों का इस्तिमाल ब कसरत मिलता है। ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब और क़ियामत तक आने वाले उम्मतियों को दीन का पैग़ाम आसानी और वज़ाह़त के साथ समझाने के लिये कई मवाक़ेअ़ पर रोज़ मर्रा ज़िन्दगी से मिसालें दी हैं, यहां दो मिसालें ज़िक्र की जाती हैं।

पहली मिसाल और इस की वज़ाह़त

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरी और मुझ से पहले अम्बिया की मिसाल ऐसी है जैसे किसी आदमी ने घर बनाया और उस के सजाने और संवारने में कोई कमी न छोड़ी मगर किसी गोशे में एक ईंट की जगह ख़ाली छोड़ दी। लोग उस के गिर्द फिरते

और तअ़ज्जुब से कहते, भला येह ईंट क्यूं न रखी गई ? फ़रमाया : वोह ईंट मैं हूं। मैं सारे अम्बिया से आख़िरी हूं।[14]

अहले इस्लाम का येह तस्लीम किया हुवा अ़क़ीदा है कि हुज़ूर ख़ातिमुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह पाक के आख़िरी नबी हैं। आप के बाद क़ियामत तक कोई नया नबी नहीं आएगा। इस अ़क़ीदए ख़त्मे नबुव्वत का मुन्किर काफ़िर व मुर्तद यानी दाइरए इस्लाम से ख़ारिज है। इस ह़दीस शरीफ़ में बड़े ही उ़म्दा अन्दाज़ में एक आसान मिसाल के ज़रीए ख़त्मे नबुव्वत का अ़क़ीदा समझाया गया है ताकि आ़म से आ़म शख़्स भी समझ जाए मगर इन्तिहाई बद नसीबी व मह़रूमी मिर्ज़ा ग़ुलाम अह़मद क़ादियानी की जो इस आसान सी मिसाल को न समझ सका या फिर जान बूझ कर न समझा और नबुव्वत का झूटा दावेदार बन बैठा और अपने लिये दुन्या व आख़िरत की ज़िल्लतो रुस्वाई ख़रीद ली।

दूसरी मिसाल और इस की वज़ाह़त

ह़ज़रते नोमान बिन बशीर رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह पाक की ह़दों को क़ाइम रखने वालों और तोड़ने वालों की मिसाल ऐसी है जैसे कश्ती के सुवारों ने अपना ह़िस्सा तक़्सीम कर लिया। बाज़ के ह़िस्से में ऊपर वाला ह़िस्सा आया और बाज़ के ह़िस्से में नीचे वाला पस जो लोग नीचे थे उन्हें पानी लेने के लिये ऊपर वालों के पास जाना पड़ता था उन्हों ने कहा कि क्यूं न हम अपने ह़िस्से में सूराख़ कर लें और ऊपर वालों के पास जाने की ज़ह़मत से बचें पस अगर वोह उन्हें उन के इरादे के मुत़ाबिक़ छोड़े रहें तो सब हलाक हो जाएं और अगर उन के हाथ पकड़ लें तो सारे बच जाएं।[15]

इस ह़दीस शरीफ़ में एक मिसाल के ज़रीए बुराई से रोकने और नेकी का हुक्म देने की अहमिय्यत को वाज़ेह़ किया गया है और बताया गया कि अगर येह समझ कर اَمر بِالْمَعْرُوف وَنَهِي عَنِ الْمُنْكَر का फ़रीज़ा तर्क कर दिया जाए कि बुराई करने वाला ख़ुद नुक़्सान उठाएगा हमारा क्या नुक़्सान है ! तो येह सोच ग़लत़ है। इस लिये कि उस के गुनाह के असरात तमाम मुआ़शरे को अपनी लपेट में ले लेते हैं और जिस त़रह़ कश्ती तोड़ने वाला अकेला ही नहीं डूबता बल्कि वोह सब लोग डूबते हैं जो कश्ती में सुवार हैं, इसी त़रह़ बुराई करने वाले चन्द अफ़राद का येह जुर्म तमाम मुआ़शरे में ज़ख़्म बन कर फैलता है।[16]

अ़क़्लमन्दाने इस्लाम और मिसाल

क़ुरआनो ह़दीस के त़रीक़े की पैरवी करते हुए बाज़ बुज़ुर्गों और इस्लाम के अ़क़्लमन्दों ने भी अपनी किताबों में समझाने के लिये बहुत सी मिसालें दी हैं। इस ह़वाले से पुराने बुज़ुर्गों में हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का नाम सरे फ़ेहरिस्त है। इस पर आप की सारी किताबें बिल ख़ुसूस **"इह़याउल उ़लूम"** गवाह है। जब कि क़रीबी दौर में मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه तो मिसाल दे कर समझाने में अपनी मिसाल आप हैं। तफ़्सीरे नईमी हो या मिरआतुल मनाजीह़, रसाइले नईमिया हो या मवाइज़े नईमिया, आप की तक़रीबन हर किताब में मिसालों की कसरत पाई जाती है। इस की वज्ह बयान करते हुए आप के ह़ालाते ज़िन्दगी पर पी एच डी का मक़ाला लिखने वाले जनाब शैख़ बिलाल अह़मद सिद्दीक़ी साहिब तह़रीर फ़रमाते हैं :

ऐसा मह़सूस होता है कि उन (मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी) का ज़ेहन ख़ास त़ौर पर इसी ज़रूरत की त़रफ़ ज़ियादा मुतवज्जेह था कि आ़म्मतुन्नास के ह़ल्क़ों के लिये और कम पढ़े लिखे लोगों के लिये आसान और मुफ़ीद लिटरेचर पैदा करना वक़्त का अहम तरीन तक़ाज़ा है चुनान्चे वोह ख़ुद फ़रमाया करते थे : "मैं जब लिखने के लिये बैठता हूं तो येह बात मद्दे नज़र रखता हूं कि मैं बच्चों, औ़रतों और दीहात के कम पढ़े लोगों से मुख़ात़िब हूं।" तफ़्सीर लिखने का आग़ाज़ किया तो उस में भी उन का बुन्यादी एह़सास येही था कि ऐसी सादा और आसान ज़बान में क़ुरआने ह़कीम की तफ़्सीर लिखी जाए जिस से क़ुरआने ह़कीम के मुश्किल मसाइल भी आसानी से समझ आ सकें, तफ़्सीरे नईमी के दीबाचे में लिखते हैं : "बहुत कोशिश की गई है कि ज़बान आसान हो और मुश्किल मसाइल भी आसानी से समझा दिये जाएं।" चन्द लाइनों के बाद शैख़ बिलाल अह़मद लिखते हैं : उन की इन्तिहाई कोशिश येह होती कि कम ख़्वान्दा (कम तालीम) से कम ख़्वान्दा आदमी भी उन की बात को समझ सके। मज़्मून को वाज़ेह़ और सहल बनाने के लिये रोज़ मर्रा ज़िन्दगी से ब कसरत मिसालें मुन्तख़ब कर लेते।[17]

---

(1) تفسیر کبیر، 1 / 362 (2) تاج العروس، 3 / 243 (3) تفسیر کبیر، 1 / 312 (4) تفسیر نعیمی، 1 / 201 (5) تفسیر نعیمی، 1 / 201 (6) پ18، النور: 35 (7) فتاویٰ رضویہ، 30/662 (8) پ14، النحل: 89 (9) پ28، الحشر: 21 (10) پ3، البقرۃ: 261 (11) صراط الجنان، 1 / 395 (12) پ12، ھود: 24 (13) صراط الجنان، 4 / 423 (14) بخاری، 2 / 484، حدیث: 3535 (15) بخاری، 2 / 143، حدیث: 2493 (16) مراٰۃ المناجیح، 6 / 504 (17) حالاتِ زندگی مفتی احمد یار خان نعیمی، ص 104۔

कुतुब का तआरुफ़

ईमान व अ़क़ाइद और रसाइले अमीरे अहले सुन्नत

हर सहाबिये नबी जन्नती जन्नती (सफ़्हात : 24)

महबूब के प्यारे भी महबूब होते हैं, अल्लाह पाक को भी अपने प्यारे हबीब صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के प्यारे सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से महब्बत है, कुरआने पाक में जगह जगह इस का इज़्हार मौजूद है, कहीं उन से जन्नत का वादा फ़रमाया, कहीं उन्हें अपनी रिज़ा का मुज़्दा सुनाया, कहीं उन की पैरवी को हिदायत का मेयार बताया और कहीं उन के तक़्वा व तहारत का एलान फ़रमाया। इस उम्मत की पाकीज़ा तरीन हस्तियां येही हज़रात हैं। 11 आयाते मुबारका, 41 अहादीसे तय्यिबा, 4 शरई अहकाम, 9 अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन और 3 वाक़िआत व हिकायात पर मुश्तमिल इस रिसाले में सहाबी की तारीफ़, सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की अक़्साम, उन की अ़ज़्मतो शान और बे मिसाल फ़ज़ाइलो कमालात, उन की तादाद, फ़ज़ीलत के एतिबार से उन की तरतीब, उन से महब्बत करने वालों का अज्रो सवाब और बुग़्ज़ो अ़दावत रखने वालों की सज़ाओं और अ़ज़ाबात का तज़्किरा है। रिसाले की एक ख़ुसूसिय्यत येह भी है कि इस में फ़ज़ाइले सहाबा पर 40 हदीसें शामिल हैं।

फ़ातिहा और ईसाले सवाब का तरीक़ा (सफ़्हात : 28)

मर्हूमीन के लिये दुआए मग़्फ़िरत करना और उन्हें सवाब पहुंचाना इब्तिदाए इस्लाम से मुसलमानों में राइज है। इस रिसाले में एक आयते तय्यिबा, 11 अहादीसे मुबारका, 10 अक़्वाल व शरई अहकाम और 3 वाक़िआत व हिकायात की रौशनी में ईसाले सवाब का सुबूत, इस के फ़ज़ाइल, इस की मुख़्तलिफ़ सूरतें, इस के शरई अहकाम, इस का तरीक़ा, मज़ार पर हाज़िरी का तरीक़ा और ईसाले सवाब के 19 मदनी फूल बयान हुए हैं।

गानों के 35 कुफ़्रिय्या अश्आर (सफ़्हात : 32)

शाइरी अपने अन्दर बड़ी तासीर रखती है और ख़ुश आवाज़ी उस की तासीर को दो चन्द कर देती है। दीन में अच्छा शेर अच्छा है और बुरा शेर बुरा। इस रिसाले में अच्छे बुरे अश्आर के अहकाम, गाने बाजों और मूसीक़ी की तारीख़, गानों बाजों की मज़म्मत व अ़ज़ाब, म्यूज़ीकल मोबाइल टून्ज़ का मुआमला, गानों के 35 कुफ़्रिय्या अश्आर और उन में मौजूद कुफ़्रिय्या कलिमे या जुम्ले की निशानदेही, कुफ़्र से तौबा और तज्दीदे निकाह का तरीक़ा, ब हालते इर्तिदाद होने वाले निकाह और एहतियाती तज्दीदे ईमान व तज्दीदे निकाह के मसाइल ज़िक्र किये गए हैं। इस में 2 आयाते तय्यिबा, 5 अहादीसे करीमा, 3 अक़्वाल, 66 शरई अहकाम और 3 हिकायात मौजूद हैं।

28 कलिमाते कुफ़्र (सफ़्हात : 17)

ईमान की हिफ़ाज़त बेहद ज़रूरी है, इन्सान कभी अपने मुंह से कुफ़्रिय्या बात निकाल देता है जिस के सबब ईमान ज़ाएअ़ हो जाता है, आमाल बरबाद हो जाते और निकाह व बैअ़त ख़त्म हो जाते हैं। इस रिसाले में मुश्किलात के वक़्त बके जाने वाले कुफ़्रिय्यात की 11, तंगदस्ती के मौक़ेअ़ पर बके जाने वाले कुफ़्रिय्यात की 5, एतिराज़ की सूरत में बके जाने वाले कुफ़्रिय्यात की 6 और फ़ौतगी वग़ैरा के मवाक़ेअ़ पर बके जाने वाले कुफ़्रिय्यात की 6 मिसालें और उन के अहकाम ज़िक्र किये गए हैं। नीज़ तज्दीदे ईमान का तरीक़ा, तज्दीदे निकाह का तरीक़ा, अ़ज़ाबे जहन्नम की झल्कियां और ईमान की हिफ़ाज़त का विर्द तहरीर है।

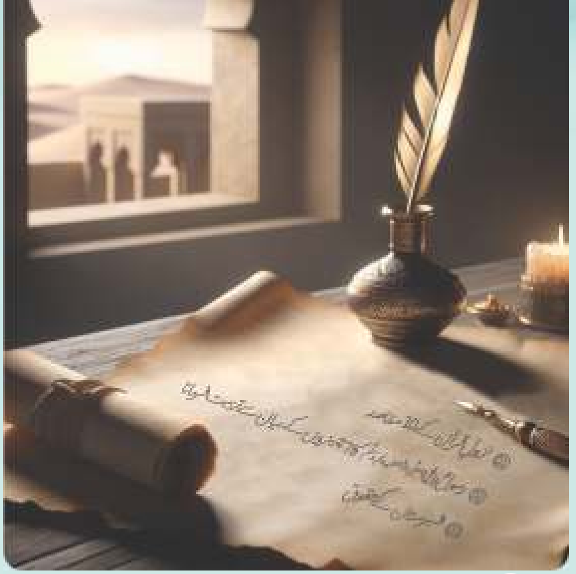

नए लिखारी

(New Writers)

नए लिखने वालों के इन्आ़म याफ़्ता मज़ामीन

नुज़ूले क़ुरआन के 10 मक़ासिद

मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह चिश्ती
(दरजए साबिआ़ जामिअ़तुल मदीना)

क़ुरआने मजीद का नुज़ूल इन्सानिय्यत के लिये अल्लाह पाक का अ़ज़ीम तरीन इन्आ़म है। येह किताब, जो आख़िरी इल्हामी पैग़ाम है, ज़िन्दगी के हर शोबे में राहनुमाई फ़राहम करती है और क़ियामत तक तमाम इन्सानों के लिये मश्अ़ले राह है। अल्लाह पाक ने क़ुरआन को नाज़िल फ़रमा कर अपनी मख़्लूक़ को वोह ज़ाबित़ए ह़यात अ़ता किया जिस के ज़रीए दुन्या व आख़िरत की फ़लाह़ ह़ासिल की जा सकती है। क़ुरआन का नुज़ूल जज़ीरए अ़रब के एक ऐसे माह़ौल में हुवा जहां शिर्क, ज़ुल्म और जहालत का दौर दौरा था और इन्सानिय्यत हिदायत की त़लबगार थी। ऐसे में क़ुरआने करीम का नुज़ूल इन्सानों को अ़क़ाइद, इ़बादात, मुआ़मलात और अख़्लाक़िय्यात के ह़वाले से मुकम्मल हिदायत फ़राहम करने के लिये हुवा। आइये नुज़ूले क़ुरआन के 10 मक़ासिद पढ़िये :

1 हिदायत क़ुरआन का बुन्यादी मक़्सद इन्सानों को सह़ीह़ राह दिखाना है ताकि वोह फ़लाह़ पा सकें। चुनान्चे इरशादे रब्बे करीम है : ﴿ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَیْبَ ۛۚ فِیْهِ ۛۚ هُدًى لِّلْمُتَّقِیْنَۙ(۲)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह बुलन्द रुत्बा किताब (क़ुरआन) कोई शक की जगह नहीं इस में हिदायत है डर वालों को। (پ1، البقرۃ:2)

2 तज़्कीर और नसीह़त इन्सानों को अल्लाह की निशानियों और माज़ी की अक़्वाम के अन्जाम से नसीह़त देना जैसा कि इरशाद होता है :

﴿وَ ذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِیْنَ(۵۵)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फ़ाएदा देता है। (پ27، الذّٰریٰت:55)

3 कुफ़्रो जहालत से निकालना क़ुरआने करीम का एक मक़्सद लोगों को कुफ़्रो गुमराही से निकाल कर ईमान की त़रफ़ ले जाना है :

﴿الٓرٰ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَیْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ﳔ
بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِیْزِ الْحَمِیْدِۙ(۱)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : एक किताब है कि हम ने तुम्हारी त़रफ़ उतारी कि तुम लोगों को अन्धेरियों से उजाले में लाओ उन के रब के हुक्म से उस की राह की त़रफ़ जो इ़ज़्ज़त वाला सब ख़ूबियों वाला है। (پ13، ابراھیم:1)

4 अ़द्लो इन्साफ़ का क़ियाम नुज़ूले क़ुरआन का एक मक़्सद इन्सानों में मुआ़शरती अ़द्ल का क़ियाम भी है इरशाद होता है :

﴿وَ اَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْمِیْزَانَ لِیَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِۚ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन के साथ किताब और अ़द्ल की तराज़ू उतारी कि लोग इन्साफ़ पर क़ाइम हों। (پ27، الحدید:25)

5 ह़क़ और बात़िल में फ़र्क़ ह़क़ और बात़िल को अलग करना ताकि इन्सान वाज़ेह़ त़ौर पर देख सके कि कौन सा रास्ता दुरुस्त है :

﴿شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ
وَ بَیِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَ الْفُرْقَانِۚ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : रमज़ान का महीना जिस में क़ुरआन उतरा लोगों के लिये हिदायत और रहनुमाई और फ़ैसले की रौशन बातें। (پ2، البقرۃ:185)

6 अन्ज़ार (Warning) मुन्किरीन और गुनाहगारों को अ़ज़ाबे इलाही से ख़बरदार करना। पारह 15, सूरतुल कहफ़ आयत नम्बर : 2 में इरशाद होता है : ﴿قَیِّمًا لِّیُنْذِرَ بَاْسًا شَدِیْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : लोगों की मस्लेह़तों को क़ाइम रखने वाली निहायत मोतदिल किताब ताकि अल्लाह की त़रफ़ से सख़्त अ़ज़ाब से डराए।

7 अह़कामात क़ुरआने पाक शरीअ़त के अह़कामात बयान करने के लिये नाज़िल हुवा :

﴿وَ اَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكَ الذِّكْرَ لِتُبَیِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَیْهِمْ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ महबूब हम ने तुम्हारी तरफ़ येह यादगार उतारी कि तुम लोगों से बयान कर दो जो उन की तरफ़ उतरा। (پ14،النحل:44)

8 माज़ी की अक़्वाम के क़िस्से पिछली क़ौमों के वाक़िआ़त बयान कर के उन से सबक़ हासिल करने की तरग़ीब देना। पारह 13, सूरए यूसुफ़, आयत 111 :

﴿لَقَدْ كَانَ فِیْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक उन रसूलों की ख़बरों में अ़क़्लमन्दों के लिये इब्रत है।

9 रहमत क़ुरआन पूरी इन्सानिय्यत के लिये रहमत का पैग़ाम है। पारह 11 सूरए यूनुस आयत 57 :

﴿یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ وَ شِفَآءٌ لِّمَا فِی الصُّدُوْرِ ﳔ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِیْنَ(۵۷)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से नसीहत आई और दिलों की सेहत और हिदायत और रहमत ईमान वालों के लिये। (پ11،یونس:57)

10 ग़ौरो फ़िक्र एक मक़्सद येह है कि लोग क़ुरआनी आयात में ग़ौरो फ़िक्र करें :

﴿كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَیْكَ مُبٰرَكٌ لِّیَدَّبَّرُوْۤا اٰیٰتِهٖ
وَ لِیَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ(۲۹)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह एक किताब है कि हम ने तुम्हारी तरफ़ उतारी बरकत वाली ताकि उस की आयतों को सोचें और अ़क़्लमन्द नसीहत मानें। (پ23،صٓ:29)

येह मक़ासिदे क़ुरआन के पैग़ाम और इन्सानिय्यत के लिये उस की अहमिय्यत को वाज़ेह करते हैं, जो हर दौर में राहे नजात फ़राहम करता है। क़ुरआने मजीद का नुज़ूल सिर्फ़ मुसलमानों के लिये नहीं बल्कि पूरी इन्सानिय्यत के लिये रहमत और हिदायत का पैग़ाम है। येह किताब ज़िन्दगी के हर शोबे में राहनुमाई फ़राहम करती है और इन्सानों को फ़लाह की राह दिखाती है।

अल्लाह पाक हमें अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का 7 चीज़ों के बयान से तरबिय्यत फ़रमाना

हाफ़िज़ मुहम्मद हमास (दरजए सादिसा जामिअ़तुल मदीना)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत की राहनुमाई और तरबिय्यत के लिये मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर अहम हिदायात और नसीहतें इरशाद फ़रमाईं, जिन का मक़्सद इन्सान की दुन्यावी और उख़रवी कामयाबी की तरफ़ राहनुमाई करना था। वोह फ़रामीन ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ पहलूओं को मुहीत़ हैं और हर मुसलमान के लिये राहनुमाई का ज़रीआ़ हैं। येह हिदायात अख़्लाक़, इबादात, मुआ़शरत और रूहानी इस्लाह़ पर मब्नी हैं, जिन पर अ़मल पैरा हो कर इन्सान अपनी ज़िन्दगी को दीने इस्लाम के मुताबिक़ ढाल सकता है। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुतअ़द्दद अहादीस में सात चीज़ों का ज़िक्र करते हुए तालीमात दी हैं उन में से 5 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप भी पढ़िये :

1 सात हलाक करने वाली चीज़ें सात चीज़ों से बचो जो हलाक करने वाली हैं, सहाबए किराम ने पूछा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह क्या हैं ? इरशाद फ़रमाया : 1 अल्लाह के साथ शिर्क करना 2 जादू करना 3 नाहक़ किसी की जान लेना 4 यतीम का माल खाना 5 सूद खाना 6 जंग से पीठ फेरना 7 पाक दामन औ़रतों पर तोहमत लगाना। (بخاری،2/243،حدیث :2766)

2 सात लोग सायए अ़र्श में होंगे अल्लाह पाक सात लोगों को अपने (अ़र्श के) साए में जगह देगा जिस दिन कोई साया नहीं होगा सिवाए उस के साए के : 1 इन्साफ़ करने वाला हाकिम 2 वोह नौजवान जिस की जवानी इबादत में गुज़री 3 वोह शख़्स जिस का दिल मस्जिद से लगा रहता है 4 वोह दो आदमी जो अल्लाह के लिये महब्बत करते हैं और उसी पर मुलाक़ात करते और जुदा होते हैं 5 वोह आदमी जिसे ख़ूबसूरत और मन्सब वाली औ़रत बदकारी की दावत दे और वोह कहे मैं अल्लाह से डरता हूं 6 वोह आदमी जो छुप कर सदक़ा देता है 7 वोह आदमी जो तन्हाई में अल्लाह को याद करे और उस की आंखें आंसूओं से भर आएं।

(بخاری،1/236،حدیث660)

3 सात कामों का हुक्म दिया रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम को सात बातों का हुक्म दिया : 1 जनाज़ों के साथ जाने 2 मरीज़ की इयादत करने 3 दावत क़बूल करने 4 मज़्लूम की मदद करने 5 क़सम पूरी करने 6 सलाम का जवाब देने का और 7 छींकने वाले का जवाब देने का हुक्म दिया। (دیکھئے: بخاری،1/420،حدیث :1239)

4 सात अफ़राद के लिये मौत, शहादत है राहे ख़ुदा में मारे जाने के इलावा शहादत सात तरह की है : 1 ताऊ़न में मरने वाला शहीद है 2 पानी में डूब कर मरने वाला शहीद है 3 ज़ातुल जम्ब (ऐसी बीमारी जिस में पस्लियों

पर फुन्सियां नुमूदार होती हैं, पस्लियों में दर्द और बुख़ार होता है, अक्सर खांसी भी उठती है, मिरआतुल मनाजीह, 2/420) की बीमारी में मरने वाला शहीद है 4 पेट की बीमारी से मरने वाला शहीद है 5 आग में जल कर मरने वाला शहीद है 6 दब कर मरने वाला शहीद है और 7 जो औ़रत बच्चे की पैदाइश में मर जाए वोह शहीद है।

(ابوداؤد،253/3،حدیث:3111)

5 मरने के बाद सात आमाल का अज्र सात चीजें़ ऐसी हैं जिन का अज्र मरने के बाद भी मिलता रहता है जब कि वोह बन्दा अपनी क़ब्र में होता है : 1 जिस ने इ़ल्म सिखाया हो 2 किसी नहर को जारी किया हो 3 किसी कुंवें को खोदा हो 4 खजूर का दरख़्त लगाया हो 5 मस्जिद बनाई हो 6 कु़रआन का नुस्ख़ा विरासत में छोड़ा हो 7 ऐसी नेक औलाद छोड़ी हो जो उस के मरने के बाद उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करती रहे। (مسند بزار،483/13،حدیث: 7289)

येह अहा़दीसे मुबारका रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़ीम तालीमात और इस्लामी उसूलों को बेहतर त़ौर पर समझने में मदद देती हैं, नबिय्ये पाक عَلَيْهِ السَّلَام की जि़न्दगी और फ़रामीन, उम्मत की मुकम्मल राहनुमाई का ज़रीआ़ हैं। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मत को सिर्फ़ इ़बादात और अ़क़ाइद में ही नहीं बल्कि अ़मली जि़न्दगी के हर शोबे में तरबिय्यत दी। आप عَلَيْهِ السَّلَام की अहा़दीस हमें दुन्यावी और उख़रवी जि़न्दगी की कामयाबी के लिये उसूल सिखाती हैं। अल्लाह पाक हम सब को नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उस्वए ह़सना पर अ़मल करते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

क़ब्रिस्तान के हु़कू़क़

अह़मद रज़ा अ़त्तारी
(दरजए सानिया जामिअ़तुल मदीना)

इस्लाम एक मुकम्मल ज़ाबित़ए ह़यात है जिस में जि़न्दगी के हर शोबे के मुतअ़ल्लिक़ हु़कू़क़ व अह़काम बयान किये हैं। जिस त़रह़ दीगर हु़कू़क़ बयान किये हैं इसी त़रह़ क़ब्रिस्तान के हु़कू़क़ की अहमिय्यत को भी उजागर किया है। आइये क़ब्रिस्तान के 6 हु़कू़क़ पढ़िये :

1 ज़ियारते कु़बूर करना क़ब्रिस्तान के हु़कू़क़ में से है कि क़ब्रिस्तान की ज़ियारत के लिये जाया जाए, रद्दुल मुह़तार में है : ज़ियारते कु़बूर मुस्तह़ब है, हर हफ़्ते में एक दिन ज़ियारत करे, जुमुआ़ या जुमेरात या हफ़्ता या पीर के दिन मुनासिब है, सब में अफ़्ज़ल रोज़ जुमुआ़ वक़्ते सुब्ह़ है। (دیکھئے: ردالمحتار،177/3)

2 सलाम कहना हु़जू़र عَلَيْهِ السَّلَام मदीना के क़ब्रिस्तान गए तो इस त़रह़ सलाम किया :

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ یَا اَھْلَ الْقُبُوْرِ، یَغْفِرُ اللّٰہُ لَنَا وَلَکُمْ
اَنْتُمْ سَلَفُنَا، وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ

यानी ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलाम हो, अल्लाह पाक हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए, तुम हम से पहले आ गए और हम तुम्हारे बाद आने वाले हैं। (دیکھئے: ترمذی،329/2،حدیث:1055)

ह़ज़रते बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ बयान करते हैं कि हु़जू़र नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन्हें तालीम देते थे कि जब वोह क़ब्रिस्तान जाएं तो कहें : ऐ मोमिनों और मुसलमानों के घर वालो ! तुम पर सलामती हो, اِنْ شَآءَ اللّٰہ हम भी तुम से मिलने वाले हैं, हम अल्लाह पाक से अपने और तुम्हारे लिये आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं।

(فیضان ریاض الصالحین،357/5،حدیث : 583)

3 क़ब्र पर अगरबत्ती न जलाना क़ब्र के ऊपर अगरबत्ती न जलाएं कि बे अदबी है और इस से मय्यित को तक्लीफ़ होती है बल्कि क़ब्र के पास ख़ाली जगह हो तो वहां रख सकते हैं, जब कि वोह ख़ाली जगह ऐसी न हो कि जहां पहले क़ब्र थी अब मिट चुकी है।

(देखिये : क़ब्र वालों की 25 हि़कायात, स. 47)

4 क़ब्र पर न बैठना क़ब्रिस्तान के हु़कू़क़ में येह भी है कि क़ब्र पर न बैठा जाए। क़ब्र पर बैठना, सोना, चलना, पाख़ाना करना ह़राम है। (فتاوی عالمگیری،166/1)

5 नए रास्ते से इज्तिनाब करना क़ब्रिस्तान में क़ब्रें ढा कर जो नया रास्ता निकाला गया उस से गुज़रना जाइज़ नहीं है। ख़्वाह नया होना उसे मालूम हो या उस का गुमान हो। (ردالمحتار،183/3)

6 तक्लीफ़ न देना क़ब्र भी लाइक़े ताज़ीम है इस से तकिया लगाना जाइज़ नहीं, रिवायत है ह़ज़रते अ़म्र बिन ह़ज़्म से फ़रमाते हैं कि मुझ को नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक क़ब्र पर तकिया लगाए देखा तो फ़रमाया इस क़ब्र वाले को न सताओ या इसे मत सताओ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 2/499)

अल्लाह पाक हमें क़ब्रिस्तान के हु़कू़क़ व आदाब बजा लाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

आओ बच्चो ! हदीसे रसूल सुनते हैं

नर्मी अपनाइये, अल्लाह के प्यारे बन जाइये

अल्लाह पाक के प्यारे और आख़िरी नबी हज़रते मुहम्मद صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने फ़रमाया : اِنَّ اللّٰهَ رَفِيْقٌ يُحِبُّ الرِّفْقَ यानी अल्लाह पाक नर्मी फ़रमाने वाला है और नर्मी को पसन्द फ़रमाता है। (بخاری،4/379،حدیث:6927)

नर्मी इख़्तियार करना यानी एक दूसरे के साथ शफ़्क़त, मेहरबानी, इत्मीनान और अच्छे अन्दाज़ से पेश आना इस्लाम की बुन्यादी तालीमात में से है, जिस इन्सान में नर्मी पाई जाती है उस की तबीअत और किरदार में निखार आ जाता है, हमारे प्यारे और आख़िरी नबी صلی اللہ علیہ والہ وسلم भी हर किसी से नर्मी फ़रमाते थे, आप की इस सिफ़त के मुतअ़ल्लिक़ कुरआने करीम में इरशाद होता है : ﴿فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो कैसी कुछ अल्लाह की मेहरबानी है कि ऐ महबूब तुम उन के लिये नर्म दिल हुए। (پ4،اٰل عمرٰن:159)

बाज़ बच्चों की तबीअ़त में सख़्ती पाई जाती है, किसी की बात जल्द नहीं मानते, छोटी छोटी बातों पर गुस्सा करते, तू तड़ाक़ और लड़ाई झगड़े पर उतर आते हैं, ऐसे बच्चों को कोई भी पसन्द नहीं करता, कोई ऐसों को दोस्त नहीं बनाता, ऐसे बच्चे अकेले ही रह जाते हैं।

अच्छे बच्चो ! आप को भी चाहिये कि नर्मी अपनाएं, अपने दोस्तों, भाई बहनों, वालिदैन और दीगर अफ़राद के साथ नर्मी से पेश आएं, अगर कोई आप के ख़िलाफ़ बात कर दे तो भी उन के साथ अच्छा रवय्या अपनाइये और अल्लाह व रसूल के पसन्दीदा बन जाइये।

अल्लाह पाक हमें अपने पसन्दीदा आमाल करते रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النّبیِّ الْاَمین صلّی اللہ علیہ والہ وسلّم

हुरूफ़ मिलाइये !

م	ز	ہ	ق	س	د	ص	و	ر
ب	و	و	ث	ی	ا	و	ط	م
ج	ص	د	ن	ر	ق	ع	ب	ع
د	ا	ل	ض	ف	ا	ن	ر	ج
ہ	ق	ر	ا	د	ی	د	ا	ز
ر	ص	س	ی	ٹ	ھ	گ	م	ہ
د	ی	ج	ا	ر	ع	م	ح	ک
ع	د	ی	ر	ب	ن	ا	ر	ب
ا	ن	ی	ف	د	ت	ب	ج	ر

रजबुल मुरज्जब इस्लामी साल का सातवां महीना है। इस महीने में आक़ा करीम صلی اللہ علیہ والہ وسلم को मेराज का मोजिज़ा अ़ता हुवा जिस में रात के थोड़े से वक़्त में आप صلی اللہ علیہ والہ وسلم मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा और वहां आस्मानों की सैर और अल्लाह पाक का दीदार कर के आए। जब सरकारे नामदार صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने लोगों को मोजिज़ए मेराज के बारे में बताया तो बाज़ अ़क़्ल के अन्धों ने आप صلی اللہ علیہ والہ وسلم की बात न मानी। कई लोग हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ عنہ के पास भी गए कि वोह भी सरकार صلی اللہ علیہ والہ وسلم को مَعَاذَ اللّٰه झुटला देंगे लेकिन जब हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ عنہ से कहा गया कि आप के दोस्त ने रातों रात मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा की सैर और अल्लाह पाक का दीदार करने का दावा किया है क्या आप उन की तस्दीक़ करते हैं ? तो हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया : जी हां ! मैं तो आप صلی اللہ علیہ والہ وسلم की आस्मानी ख़बरों की भी सुब्हो शाम तस्दीक़ करता हूं और यक़ीनन वोह तो इस बात से भी ज़ियादा हैरान कुन और तअ़ज्जुब ख़ेज़ है।
(المستدرک،۴/۲۵،حدیث:۴۵۱۵)

प्यारे बच्चो ! आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिला कर ऊपर मज़्मून में बयान किये गए पांच अल्फ़ाज़ तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़े "**दीदार**" तलाश कर के बताया गया है। तलाश किये जाने वाले 5 अल्फ़ाज़ येह हैं :

1 معراج 2 معجزہ 3 سیر 4 رجب 5 اقصیٰ۔

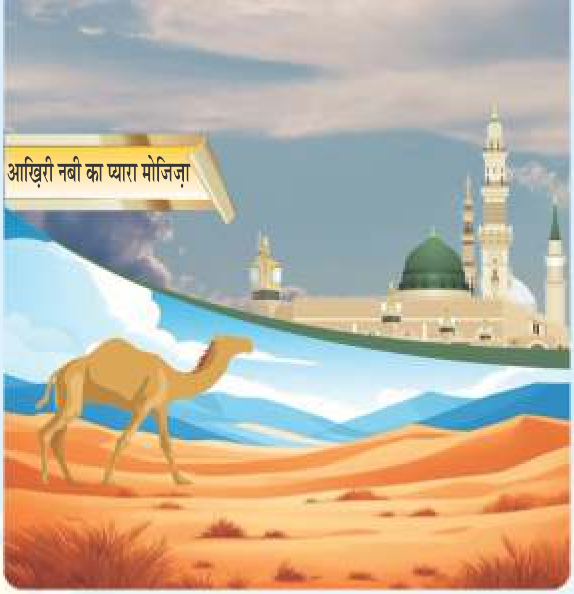

सुस्त ऊंट तेज़ कैसे हुवा ?

प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बारहा ऐसे मवाक़ेअ़ पर भी अपनी शाने मोजिज़ा का इज़्हार फ़रमाया करते थे जब आप का कोई सहाबी किसी उल्झन व परेशानी से दो चार होता, ऐसे मौक़ेअ़ पर आप का मोजिज़ा परेशान ह़ाल की राह़ते दिलो जान का सामान हुवा करता था जैसा कि एक बार ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللہُ عَنْہ की सफ़री परेशानी हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही की बरकत से दूर हुई, इस की तफ़्सील येह है कि ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं मैं एक जंग (ग़ज़्वए ज़ातुर्रिक़ाअ़) में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ गया तो मैं पानी लाने वाले एक ऐसे ऊंट पर सुवार था जो थक चुका था और चलने से तक़रीबन आ़जिज़ हो गया था ऐसी सूरत में प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ से आ मिले । आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे फ़रमाया कि तुम्हारे ऊंट को क्या हो गया है ? मैं ने अ़र्ज़ की, कि थक गया है, आप ने पीछे मुड़ कर ऊंट को हंकाया और उस के लिये दुआ़ फ़रमाई तो वोह मुसल्सल तमाम ऊंटों के आगे चलने लगा फिर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : ऊंट को कैसा पाते हो ? मैं ने अ़र्ज़ की, कि बेहतरीन है उस को आप की बरकत नसीब हो गई, आप ने फ़रमाया : क्या येह ऊंट मुझे फ़रोख़्त करोगे ? तो मुझे मन्अ़ करने से शर्म आई ह़ालां कि हमारे पास उस के इलावा कोई ऊंट न था, मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां । हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तो फिर मुझे बेच दो । मैं ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वोह ऊंट इस शर्त़ पर बेच दिया कि मैं मदीनए मुनव्वरा तक उस की पुश्त पर सुवारी करूंगा । जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो मैं ऊंट ले कर आप की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा आप ने मुझे ऊंट की क़ीमत भी अ़त़ा फ़रमाई और ऊंट भी मुझे वापस लौटा दिया । एक रिवायत के मुत़ाबिक़ जब रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللہُ عَنْہ से ऊंट बेचने के बारे में सुवाल किया तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : मैं येह ऊंट आप को तोह़फ़े में पेश करता हूं लेकिन रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमा दिया कि नहीं बल्कि मुझे फ़रोख़्त कर दो तब ह़ज़रते जाबिर ने फ़रोख़्त करने पर अपनी रिज़ामन्दी का इज़्हार किया। (بخاری، 2/300، حدیث: 2967- دیکھئے: سیرت ابن ہشام ص384)

प्यारे बच्चो ! यक़ीनन येह हमारे प्यारे आक़ा, ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का प्यारा प्यारा मोजिज़ा ही था कि वोह ऊंट जो थकावट से इस क़दर चूर हो चुका था कि उस में मज़ीद चलने तक की त़ाक़त न थी अचानक से उसी ऊंट में ऐसी भरपूर चुस्ती व तवानाई आ गई कि उस की सुबुक रफ़्तारी ने क़ाफ़िले के दीगर ऊंटों से आगे निकल गया।

प्यारे बच्चो ! इस मोजिज़ए मुस्त़फ़ा वाले प्यारे वाक़िए़ से चन्द बातें सीखने को मिलती हैं :

- रिश्तेदारों, दोस्तों और हमसायों वग़ैरा में अगर कोई परेशान दिखाई दे तो उस की परेशानी का पूछ कर उस का ग़म हल्का करना चाहिये।
- अपनी इस्तित़ाअ़त के मुत़ाबिक़ दूसरों की मुश्किल दूर करनी चाहिये।
- बड़ों को छोटों पर इन्तिहाई शफ़्क़त का मुज़ाहरा करते हुए छोटों की रिज़ामन्दी मालूम कर लेनी चाहिये ताकि बाहमी एह़तिराम व मह़ब्बत की फ़ज़ा क़ाइम रहे।
- छोटों को चाहिये कि बुज़ुर्गों की रिज़ामन्दी को तरजीह़ दें।
- इन्सान को अपने मुआ़हदों की पासदारी करनी चाहिये और अपनी बात पर साबित क़दम रहना चाहिये।

रात में सैर

"रात में सैर"

सर बिलाल व्हाइट बोर्ड पर आज के सबक़ का उ़न्वान लिख चुके तो फिर बच्चों की त़रफ़ देखते हुए पूछा : बच्चो ! आप में से किस किस को मुसलमानों के पहले ख़लीफ़ा का नाम पता है ?

तक़रीबन सभी बच्चों ने हाथ खड़ा कर दिया अगर्चे सर को पता था कि जवाब क्या आएगा फिर भी चन्द बच्चों से बारी बारी पूछा तो ह़स्बे तवक़्क़ोअ़ (As per expected) एक ही जवाब आया यानी : ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

अरे बच्चो ! येह आप का नाम नहीं था बल्कि कुन्यत और लक़ब (Title) था जब कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का अस्ल नाम ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह था।

मुआ़विया : लेकिन सर ! आप मशहूर तो ह़ज़रते सिद्दीक़ के नाम से ही हैं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को सिद्दीक़ क्यूं कहा जाता है ?

आप के सुवाल के जवाब में ही तो हमारा आज का सबक़ छुपा हुवा है बेटा, सर बिलाल ने मुस्कुराते हुए कहा : तो बच्चो बात है आज से कई सौ साल पहले की, अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा अबू त़ालिब और प्यारी ज़ौजा ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا दुन्या से पर्दा फ़रमा चुके थे, यानी मक्कए मुकर्रमा में आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बड़ी ह़िमायत ख़त्म हो चुकी थी ऐसे में आप ने मक्का से दूर एक इन्तिहाई पुर फ़ज़ा मक़ाम त़ाइफ़ को इस्लाम का मर्कज़ बनाने के इरादे से सफ़र किया लेकिन वहां के नादान लोगों ने भी आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पुर ख़ुलूस पैग़ाम क़बूल करना तो दूर उल्टा आप को बहुत तकालीफ़ पहुंचाईं, ऐसे वक़्त में अल्लाह पाक ने अपने मह़बूब की दिलजूई व ख़ुशनूदी के लिये आप को वोह अ़ज़ीम मोजिज़ा अ़त़ा फ़रमाया जिसे मुसलमान मेराज के नाम से जानते हैं।

सर मेराज है क्या चीज़ ? जैसे ही सर बिलाल सांस लेने रुके तो एक बच्चे ने पूछ लिया।

जी जी बेटा उसी त़रफ़ आ रहा हूं। हुवा कुछ यूं कि एक रात नमाज़ पढ़ने के बाद आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा रहे थे कि जिब्रीले अमीन ह़ाज़िर हुए और फिर आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिदुल ह़राम से जिब्रीले अमीन के साथ एक अ़ज़ीम और बरकत वाली सैर पर रवाना हुए। सब से पहले मस्जिदे अक़्सा पहुंचे जहां पहले ही सारे नबी عَلَیْہِمُ السَّلَام मौजूद थे और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इमामत में सब ने नमाज़ अदा की। इस के बाद आस्मानों की सैर शुरूअ़ हुई जिस में आप को सातों आस्मानों पर अम्बियाए किराम से मुलाक़ात और जन्नत की सैर करवाई गई, दोज़ख़ दिखलाई गई, सब से बढ़ कर उस रात में आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अल्लाह पाक का दीदार भी किया और फिर सुब्ह़ होने से पहले पहले वापस अपने घर भी तशरीफ़ ले आए।

उसैद रज़ा : सर आस्मानों पर आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुलाक़ात सारे अम्बिया से करवाई गई थी ?

सर बिलाल : नहीं बेटा, सात आस्मान हैं तो हर आस्मान पर एक नबी से मुलाक़ात हुई, पहले पर ह़ज़रते आदम

عَلَیْہِ السَّلَام से, तीसरे पर ह़ज़रते यूसुफ़ से, चौथे पर ह़ज़रते इदरीस से, पांचवें पर ह़ज़रते हारून से, छटे पर ह़ज़रते मूसा से, सातवें पर ह़ज़रते इब्राहीम से, बस सिर्फ़ दूसरा आस्मान था जहां दो अम्बियाए किराम से मुलाक़ात हुई ह़ज़रते यह़्या और ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِمُ السَّلَام।

लेकिन सर क्या येह सारा सफ़र सिर्फ़ एक रात में हो गया था ?

एक रात में नहीं कामरान बेटा बल्कि एक रात के भी थोड़े से हि़स्से में। एक दिलचस्प बात बताऊं आप सब को, जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ लाए तो आप का बिस्तर मुबारक अभी गर्म का गर्म ही था।

मुआ़विया : सर मेरा सुवाल तो रह ही गया।

जी जी बेटा ! अब आप के जवाब की ही बारी है, तो बच्चो ! हमारे बुज़ुर्गों ने इस की बड़ी दिलचस्प वज्ह लिखी है : मेराज से वापसी पर सुब्ह़ को जब हु़ज़ूर صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह वाक़िआ़ लोगों को सुनाया तो मुशरिकीने मक्का आप का मज़ाक़ उड़ाने लगे और उन में से कुछ लोग दौड़ते हुए ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ के पास तस्दीक़ (Conformation) करवाने पहुंचे और कहने लगे कि आप के दोस्त ऐसा (यानी रातों रात मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा की सैर करने का) कह रहे हैं, क्या आप इस बात को मानते हैं ?

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ ने पूछा : क्या आप صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वाक़ेई ऐसा कहा है ?

मुशरिकीन कहने लगे : जी हां। तो ह़ज़रते सिद्दीक़ ने बिला झिजक उस वाक़िए़ की तस्दीक़ कर दी। तो उस दिन प्यारे नबी صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ अबू बक्र ! अल्लाह ने तुम्हें सिद्दीक़ का नाम दिया है।

तो प्यारे बच्चो याद रखें ! येह ज़मीन, सूरज, चांद, आस्मान सारी काइनात का सिस्टम अल्लाह पाक का बनाया हुवा है तो वोह जिस के लिये चाहे उन का फ़ासिला समेट कर छोटा कर दे और जिस के लिये चाहे त़वील कर दे लिहाज़ा ऐसे मोजिज़ात में कभी भी शक नहीं करना चाहिये बल्कि हमें तो सिद्दीक़े अक्बर की पैरवी करते हुए अल्लाह रसूल की बातों के आगे न अ़क़्ल के घोड़े दौड़ाने चाहियें और न ही लोगों की बातों की परवाह करनी चाहिये बल्कि फ़ौरन उन्हें सच्चे दिल से मान लेना चाहिये।

बच्चों और बच्चियों के 6 नाम

सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी सब से पहला तोह़फ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है लिहाज़ा उसे चाहिये कि उस का नाम अच्छा रखे। (جمع الجوامع، 3/285، حدیث:8875) यहां बच्चों और बच्चियों के लिये 6 नाम, उन के माना और निस्बतें पेश की जा रही हैं।

बच्चों के 3 नाम

नाम	पुकारने के लिये	माना	निस्बत
मुह़म्मद	वसीम	ख़ूब सूरत	रसूले पाक صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सिफ़ाती नाम
मुह़म्मद	मुनीर	रौशन करने वाला	रसूले पाक صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सिफ़ाती नाम
	अ़ब्बास	वोह शेर जिसे देख कर दूसरे शेर भाग जाते हों	रसूले पाक صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचाजान का नाम

बच्चियों के 3 नाम

ह़लीमा	बुर्दबार/बरदाश्त वाली	रसूले पाक صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ाई (दूध के रिश्ते) की अम्मी जान का नाम
रुक़य्या	तरक़्क़ी करने वाली	रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी शहज़ादी का बा बरकत नाम
अरवै	ह़सीनो जमील	सह़ाबिय्या رَضِیَ اللہُ عَنْہَا का बा बरकत नाम

(जिन के हां बेटे या बेटी की विलादत हो वोह चाहें तो इन निस्बत वाले 6 नामों में से कोई एक नाम रख लें।)

बच्चों को वक़्त का पाबन्द बनाएं
(Make children punctual)

ज़िन्दगी वक़्त का नाम है और जिस ने वक़्त की क़द्र न की गोया उस ने ज़िन्दगी ज़ाएअ़ की। हम नहीं चाहते हमारी आग़ोश में पलने वाले हमारे फूल से प्यारे बच्चे ज़िन्दगी ज़ाएअ़ करें लिहाज़ा हमें चाहिये कि वक़्त की पाबन्दी का हुनर दे कर उन्हें ज़िन्दगी की क़द्र सिखाएं। आइये ! वोह त़रीक़े जानने की कोशिश करते हैं जिन की मदद से हम अपने बच्चों को वक़्त का पाबन्द बना सकते हैं।

सरापा तरग़ीब बनें

- वालिदैन ख़ुद वक़्त के पाबन्द बनें। अगर आप ख़ुद वक़्त पर काम करते हैं तो आप का बच्चा भी आप को देख कर येह आ़दत अपनाएगा।
- वक़्त पर उठें, वक़्त पर खाना खाएं और वक़्त पर कामों को अन्जाम दें।
- अपने बच्चे को अपने साथ शामिल करें ताकि वोह आप के कामों को देख सके।

डेली रूटीन शिड्यूल

- बच्चों के लिये रोज़ाना का मामूल बनाएं और उस पर अ़मल करवाएं। कुछ वक़्त का जदवल बनाएं और उसे दीवार पर लगा दें ताकि वोह अपनी सर गर्मियों को मुनज़्ज़म कर सकें।
- सोने और उठने का एक ख़ास वक़्त मुक़र्रर करें।
- खाने और खेलने का वक़्त त़ै करें।
- मामूल को दिलचस्प बनाने के लिये मुख़्तलिफ़ सर गर्मियां शामिल करें।

वक़्त की अहमिय्यत पर ब्रेफ़िंग

- अपने बच्चे को वक़्त की अहमिय्यत समझाएं।
- उन्हें बताएं कि वक़्त की पाबन्दी कैसे उन की ज़िन्दगी को आसान बना सकती है।
- उन्हें अह़ादीस, वाक़िआ़त और कहानियां सुनाएं या मिसालों के ज़रीए़ समझाएं कि वक़्त की अहमिय्यत क्या है।

वक़्त का ह़िसाब लगाना सिखाएं

- अपने बच्चे को घड़ी देखना और वक़्त का ह़िसाब

लगाना सिखाएं।

✺ उन्हें अलार्म घड़ी या टाइमर इस्तिमाल करना सिखाएं ताकि वोह वक़्त पर उठ सकें।

हौसला अफ़्ज़ाई भी और पूछ गछ भी

✺ जब आप का बच्चा वक़्त का पाबन्द हो तो उस की तारीफ़ करें और इन्आम दें।

✺ अगर वोह वक़्त का पाबन्द न हो तो उसे समझाएं और तम्बीह करें।

✺ तम्बीह करते वक़्त इस बात का ख़याल रखें कि वोह बदज़न और मुतनफ़्फ़िर न हो बल्कि समझे।

तफ़रीह से भरपूर तरीक़े

✺ मुख़्तलिफ़ सर गर्मियों के ज़रीए उन्हें वक़्त का हिसाब लगाना सिखाएं।

✺ उन्हें वक़्त के बारे में लतीफ़े या कहानियां सुनाएं।

सब्र और बुर्दबारी

✺ बच्चों को वक़्त का पाबन्द बनने में वक़्त लग सकता है।

✺ सब्र से काम लें और उन्हें हर क़दम पर हौसला दें।

✺ अगर वोह ग़लती करें तो उन्हें डांटें नहीं बल्कि समझाएं।

मुख़्तलिफ़ क़िस्म की याद दाश्त

वक़्त का पाबन्द बनने के लिये मुख़्तलिफ़ क़िस्म की याद दाश्त का इस्तिमाल होता है। मसलन, बच्चों को अपनी रोज़ाना की सर गर्मियों को याद रखने के लिये बसरी और समई याद दाश्त का इस्तिमाल करना पड़ता है।

नमाज़ का वक़्त

इस्लाम में नमाज़ का वक़्त मुक़र्रर है और उसे वक़्त पर अदा करने की ताकीद की गई है। येह बच्चों को वक़्त की अहमिय्यत सिखाने का एक बेहतरीन तरीक़ा है।

रोज़े का वक़्त

रमज़ान में रोज़े रखने का हुक्म है और उसे भी वक़्त पर शुरूअ़ और ख़त्म करना ज़रूरी है। येह बच्चों को सब्र और वक़्त का पाबन्द होने की तरबिय्यत देता है। (بخاری،4/222،حدیث:6412)

इज्तिमाई ज़िन्दगी

वक़्त की पाबन्दी एक समाजी फ़र्ज़ भी है और येह दूसरों के साथ अच्छे तअ़ल्लुक़ात क़ाइम करने में मदद करती है।

क़ारिईने किराम ! प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : दो नेमतें ऐसी हैं जिन के बारे में बहुत से लोग धोके में हैं, एक सेहत और दूसरी फ़राग़त।

हर इन्सान के पास एक दिन में 24 घंटे 1440 मिनट और 86400 सेकन्ड होते हैं। अब देखना येह है कि क़ुदरत के अ़ता कर्दा इस वक़्त को वोह किन कामों में सर्फ़ करता है। हमारी कोशिश होती है कि हम बच्चों की नफ़्सिय्यात के तमाम तर पहलूओं को मद्दे नज़र रखते हुए मुतअ़ल्लिक़ा मौज़ूअ़ पर मुअस्सिर मालूमात पेश कर सकें। वक़्त की पाबन्दी के ह़वाले से भी हम ने कोशिश की है कि बच्चों की उ़म्र, सलाहिय्यत, ज़ेहनी सत्ह़ के मुताबिक़ आप को मुफ़ीद मशवरे दे सकें। आप उन मशवरों पर अ़मल कर के देखियेगा अल्लाह पाक ने चाहा तो आप उस के मुस्बत नताइज पाएंगे। अल्लाह करीम हमें वक़्त दुरुस्त और नेक कामों में सर्फ़ करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

हज़रते अमीरे मुआ़विया رضی اللہ عنہ की सीरत जानने के लिये मक्तबतुल मदीना से किताब "फ़ैज़ाने अमीरे मुआ़विया" ह़ासिल कीजिये या दावते इस्लामी की वेब साइट से डाउनलोड कीजिये।

बेटियों की तरबिय्यत

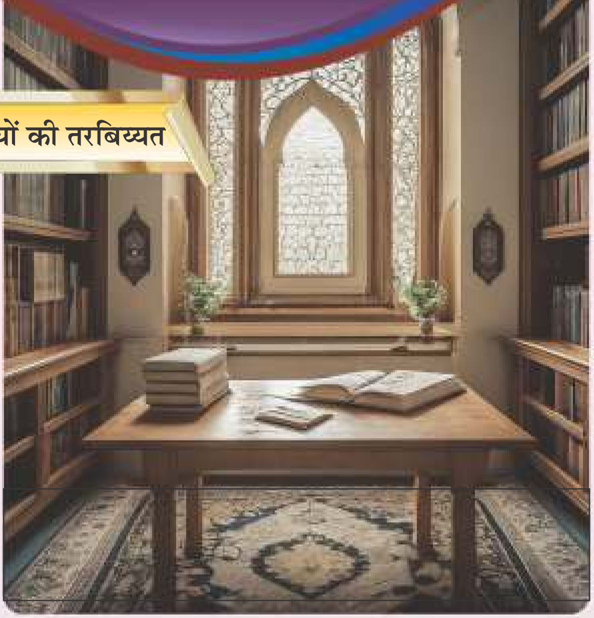

बेटियों की उस्तानी कैसी हो ?

تا توانی دور شو از یارِ بد یارِ بد بدتر بود از مارِ بد

مارِ بد تنہا ہمیں بر جان زند یارِ بد بر جان و ایمان زند[1]

यानी जब तक मुम्किन हो बुरे साथी से दूर रहो क्यूंकि बुरा साथी बुरे सांप से भी ज़ियादा ख़त़रनाक और नुक़्सान देह है इस लिये कि ख़त़रनाक सांप तो सिर्फ़ जान यानी जिस्म को तक्लीफ़ या नुक़्सान पहुंचाता है जब कि बुरा साथी जान और ईमान दोनों को बरबाद कर देता है। हर सोह़बत ख़्वाह अच्छी हो या बुरी अपना एक असर रखती है इसी ह़क़ीक़त को नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस त़रह़ बयान फ़रमाया है कि "अच्छे और बुरे मुसाहिब की मिसाल, मुश्क उठाने वाले और भट्टी झोंकने वाले की त़रह़ है, कस्तूरी उठाने वाला तुम्हें तोह़फ़ा देगा या तुम उस से ख़रीदोगे या तुम्हें उस से उ़म्दा ख़ुश्बू आएगी, जब कि भट्टी झोंकने वाला या तुम्हारे कपड़े जलाएगा या तुम्हें उस से ना गवार बू आएगी।"[2]

आज के दौर में अच्छी सोह़बत बहुत कम मयस्सर आती है इस मुआ़मले में ह़स्सास वालिदैन अपने बच्चों को बचपन से ही बुरी सोह़बत से बचाने की कोशिश करते हैं, बिल ख़ुसूस बेटियों को कि एक औ़रत ही आगे चल कर नस्लों की तरबिय्यत करती है इसी लिये बेटी को बचपन से ही ऐसी सोह़बत दी जाए कि उस सोह़बत का अच्छा असर उस के बड़े होने के बाद भी उस पर छाया रहे, और वोह अपनी आने वाली नस्लों की भी अच्छी तरबिय्यत कर सके। बच्चे की पहली दर्सगाह तो उस की मां की गोद होती है इस के बाद उस का बा क़ाइदा तालीम व तअ़ल्लुम का सिल्सिला शुरूअ़ किया जाता है, और एक अच्छे उस्ताज़ का इन्तिख़ाब किया जाता है, लड़कों को मर्द उस्ताज़ और लड़कियों को औ़रत उस्तानी के पास ही पढ़वाया जाए। इसी मुनासबत से हम आज बात करते हैं कि बेटियों की टीचर कैसी हों ? चूंकि त़ालिबे इ़ल्म त़वील अ़र्से तक रोज़ाना उस्ताज़ की सोह़बत में बैठते हैं लिहाज़ा उस्ताज़ की ज़ात में पाए जाने वाले औसाफ़ ग़ैर मह़सूस त़ौर पर उस के तलामिज़ा (Students) में मुन्तक़िल हो जाते हैं। चुनान्चे देखा गया है कि अगर टीचर ख़ुश अख़्लाक़ है तो उस की स्टूडन्टस भी ह़ुस्ने अख़्लाक़ की मज़्हर होंगी, अगर टीचर मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा रखती है तो उस की स्टूडन्टस भी मुसलमानों की मदद करने में ख़ुशी मह़सूस करेंगी, अगर टीचर नेकी की दावत को आ़म करने का जज़्बा रखती है तो उस की स्टूडन्टस भी नेकी की दावत को फैलाते हुए नज़र आएंगी, अगर टीचर अ़फ़्वो दर गुज़र की पैकर है तो उस की स्टूडन्टस भी ग़ुस्से से कोसों दूर रहने वाली होंगी, अगर टीचर नेक आमाल पर अ़मल करती है तो उस की स्टूडन्टस में भी अ़मल का जज़्बा बढ़ेगा, अगर टीचर आ़जिज़ी इख़्तियार करने वाली है तो उस की स्टूडन्टस भी आ़जिज़ी की पैकर बन कर रहेंगी, अगर टीचर ख़ुश लिबास है तो उस की स्टूडन्टस के लिबास भी साफ़ सुथरे दिखाई देंगे, अगर टीचर अपने मुआ़मलात (मसलन क़र्ज़ और चीज़ें और तोह़फ़े न मांगने) में मोह़तात़ वाक़ेअ़ होती है तो उस की स्टूडन्टस भी इस की पैरवी करने में फ़ख़्र मह़सूस करेंगी, अगर टीचर मुत़ालए़ का शौक़ रखती है तो उस की स्टूडन्टस के हाथों में भी किताबें दिखाई देंगी, अगर टीचर अपने अस्लाफ़ का अदब करती है तो उस की स्टूडन्टस भी बुज़ुर्गों का एह़तिराम करने वाली होंगी, अगर टीचर क़नाअ़त पसन्द है तो उस की स्टूडन्टस भी लालच

से दामन बचा कर रखेंगी, अगर टीचर किसी का एह़सान लेने की आ़दी नहीं है तो उस की स्टूडन्टस भी किसी से एह़सान लेने पर तय्यार नहीं होंगी, अगर टीचर सलीक़ा शिआ़र है तो उस की स्टूडन्टस की चीज़ें भी कमरे में बिखरी हुई दिखाई नहीं देंगी, अगर टीचर परहेज़गार है तो उस की स्टूडन्टस भी ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाली होंगी। इसी त़रह़ हर काम में जैसी टीचर होगी उस का अ़क्स उस की स्टूडन्टस होंगी। एक टीचर अपने स्टूडन्ट को एक अच्छा इन्सान और बा ख़बर शख़्स बनने में मदद करती है। ख़याल रहे कि मुल्क और क़ौम की तामीर में असातिज़ा का किरदार काफ़ी अहम होता है क्यूंकि नन्हे ज़ेहनों की आबयारी उन के हाथों में होती है। असातिज़ा क्यूं ज़रूरी हैं ? एक त़ालिबे इ़ल्म की उ़म्र जैसे जैसे बढ़ती है, वोह ज़ेहनी, जिस्मानी और नफ़्सियाती त़ौर पर उतना ही मुस्तह़कम होता जाता है।

इन्सान के वुजूद और कमाल में 2 शख़्सिय्यात का किरदार होता है :

1. वालिदैन : जो दुन्या में आने का सबब बनते हैं।
2. उस्ताज़ : जो आ़लमे मादा से आ़लमे रूह़ानिय्यत के साथ राबित़ा मज़बूत़ करते हैं।

वालिदैन बोलना सिखाते हैं और उस्ताज़ कब बोलना, कहां बोलना और कैसे बोलना सिखाते हैं। वालिदैन के साथ साथ रूह़ानी बाप (उस्ताज़) का ज़ियादा कमाल होता है। किसी को किसी पर कोई फ़ौक़िय्यत नहीं है और न ही कोई फ़ज़ीलत है लेकिन जब इ़ल्म से उस का वासित़ा पड़ा तो आला फ़र्द बन गया। इ़ल्म इन्सान के अन्दर नेकी, तक़्वा, परहेज़गारी, ज़ोहद व इत़ाअ़त, ख़ौफ़े ख़ुदा और ह़ुस्ने ख़ुल्क़ जैसी सिफ़ात पैदा करता है। अल्लाह पाक ने ज़ुल्मत व अन्धेरों में डूबी इन्सानिय्यत की हिदायत के लिये नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मुअ़ल्लिमे इन्सानिय्यत बना कर भेजा। असातिज़ा रूह़ानी वालिदैन की ह़ैसिय्यत रखते हैं। मां बाप इस दुन्या में लाते हैं और उस्ताज़ इ़ल्मो हुनर सिखा कर इन्सान को बुलन्दियों तक पहुंचा देता है। उस्ताज़ एक ऐसा चराग़ है जिस की रौशनी मुआ़शरे में जहालत के अन्धेरे को ख़त्म करती है। उस्ताज़ मुआ़शरे का ऐसा फूल है जिस की ख़ुश्बू से मुआ़शरे में मह़ब्बत का रिश्ता परवान चढ़ता है। एक कामयाब शख़्स के पीछे एक उस्ताज़ का ह़क़ीक़ी किरदार होता है। एक उस्ताज़ सिर्फ़ बच्चों को तालीमी मज़ामीन ही नहीं पढ़ाता बल्कि वोह बच्चों को अच्छी राह दिखाता है। वोह बच्चों की पेशावराना तरबिय्यत करता है। वोह बच्चों को समाजी बहबूद का शुऊर फ़राहम करता है। वोह बच्चों की सलाहिय्यतों को निखारता है। क़ुदरत ने हर इन्सान में एक ख़ूबी ज़रूर रखी होती है और उस्ताज़ वोह अ़ज़ीम हस्ती है जो उस पोशीदा ख़ूबी को न सिर्फ़ आश्कार करता बल्कि उसे निखारता भी है। तफ़्सीरे कबीर में है : उस्ताज़ अपने शागिर्द के ह़क़ में मां बाप से बढ़ कर शफ़ीक़ होता है क्यूंकि वालिदैन उसे दुन्या की आग और मसाइब से बचाते हैं जब कि असातिज़ा उसे नारे दोज़ख़ और मसाइबे आख़िरत से बचाते हैं।[3]

इसी लिये वालिदैन अपनी बेटियों के लिये ऐसी टीचर का इन्तिख़ाब करें कि जिस का अच्छा असर उन की बेटी पर पड़े, ऐसी टीचर कि जो बे ह़याई, बे पर्दगी व बद मज़हबी को फ़रोग़ न देती हो। इस ह़वाले से अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मशहूर किताब "ग़ीबत की तबाहकारियां" के सफ़ह़ा 63 पर तह़रीर करते हैं : बद मज़हब से दीनी या दुन्यावी तालीम लेने की मुमानअ़त करते हुए इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ग़ैर मज़हब वालियों (या वालों) की सोह़बत आग है, ज़ी इ़ल्म आ़क़िल बालिग़ मर्दों के मज़हब (भी) उस में बिगड़ गए हैं।[4]

गुनाहों की आग में जलते, गुमराहिय्यत के बादलों में घिरे इस मुआ़शरे में सुन्नतों की ख़ुश्बूएं फेलाता दावते इस्लामी का दीनी माह़ौल किसी नेमत से कम नहीं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! दीनी माह़ौल में तरबिय्यत पा कर सुन्नतें अपनाने वाला इस त़रह़ ज़िन्दगी बसर करने लगता है कि न सिर्फ़ हर आंख का तारा बन जाता है बल्कि अपने सुन्नतों भरे किरदार से कई लोगों की इस्लाह़ का सबब भी बन जाता है। फिर ज़िन्दगी की मीआ़द गुज़ार कर इस शानो शौकत से दारे आख़िरत रवाना होता है कि देखने सुनने वाले रश्क करने और ऐसी ही मौत की आरज़ू करने लगते हैं। आप भी दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से वाबस्ता हो जाइये। दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ाकर्दा नेक आमाल पर अ़मल को अपना मामूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه दोनों जहां की सआ़दतें नसीब होंगी।

---

(1) گلدستہ مثنوی بکھرے موتی، ص94 (2) مسلم، ص1116، حدیث: 2628

(3) تفسیر کبیر، 1/401 (4) فتاوٰی رضویہ 23/692۔

इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

1 नापाकी के दिनों में एह़राम का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि हिन्दा को हिन्दुस्तान से उ़मरह के लिये जाना है जिस के लिये उस ने अपने शौहर के साथ टिकट भी करवा ली है, लेकिन जाने से पहले ही हिन्दा के अय्यामे हैज़ शुरूअ़ हो चुके हैं, इस सूरत में वोह अगर उ़मरह की अदाएगी के लिये हिन्दुस्तान से मक्का जाती है, तो एह़राम का क्या हुक्म होगा, क्या हैज़ की ह़ालत में वोह एह़राम की निय्यत कर सकती है ?

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِكِ الۡوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الۡحَقِّ وَالصَّوَابِ

जो शख़्स भी बैरूने मीक़ात से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा जाने का क़स्द रखता हो, उस को मीक़ात से गुज़रने से पहले एह़राम की निय्यत करना ज़रूरी है, बिला एह़राम मीक़ात से आगे जाना जाइज़ नहीं, येही हुक्म उस औ़रत के लिये भी है जिस को उ़मरह की अदाएगी के लिये बैरूने मीक़ात से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा जाना हो, लेकिन उस के माहवारी के अय्याम शुरूअ़ हो चुके हों ।

पूछी गई सूरत में मक्कए मुकर्रमा रवानगी से पहले हिन्दा के अय्यामे हैज़ शुरूअ़ हो गए, तो उसे मीक़ात से गुज़रने से पहले एह़राम की निय्यत करना ज़रूरी है कि उस के लिये बिला एह़राम मीक़ात से गुज़रना ना जाइज़ व गुनाह है । ऐसी ख़्वातीन जो हैज़ या निफ़ास की वज्ह से नापाकी में हों वोह भी निय्यत से पहले ग़ुस्ल सफ़ाई कर लें जिस का मक़्सद मैल कुचैल दूर करना होता है जिस त़रह़ ह़ालते पाकी में निय्यत से पहले ग़ुस्ल करना मुस्तह़ब होता है । निय्यत और तल्बिया कहते ही एह़राम के अह़काम शुरूअ़ हो जाएंगे। मक्का पहुंच कर पाक होने का इन्तिज़ार किया जाए इस ह़ालत में त़वाफ़ करना या मस्जिद में जाना उस के लिये जाइज़ नहीं बल्कि मक्कए मुकर्रमा पहुंचने के बाद अपनी रिहाइश गाह पर रहे जब हैज़ फ़ारिग़ से हो कर ग़ुस्ल कर ले, उस के बाद मनासिक की अदाएगी के लिये मस्जिदे ह़राम जाए । (فتاوی قاضی خان،1/265-الھدایۃ مع البنایۃ،4/323-بہار شریعت،1/1071)

وَاللّٰہُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 नौ मौलूद बच्ची के बालों का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि पैदाइश के बाद बच्ची को गंजा करवा कर उस के बालों का क्या करें ? शरीअ़त इस बारे में क्या राहनुमाई करती है ?

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِكِ الۡوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الۡحَقِّ وَالصَّوَابِ

बच्चा हो या बच्ची दोनों के लिये हुक्म येह है कि पैदाइश के सातवें दिन उस का सर मून्ड कर उन बालों के वज़्न बराबर सोना या चांदी सदक़ा करना मुस्तह़ब है, येही बात ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमान से भी साबित है । अलबत्ता बाज़ लोगों में एक फ़ुज़ूल रस्म येह पाई जाती है कि वोह बच्चे के पैदाइशी बालों को संभाल कर रखते हैं, इस का शरीअ़त में कोई हुक्म नहीं, बल्कि शरअ़न बालों को दफ़्न करने का हुक्म है, लिहाज़ा उन बालों को भी मुम्किना सूरत में दफ़्न कर दिया जाए ।

(ردّالمحتار مع الدر المختار،9/554-بہار شریعت،3/335-1/1044)

وَاللّٰہُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रजबुल मुरज्जब के चन्द अहम वाक़िआ़त

तारीख़/माह/सिन	नाम / वाक़िआ़	मज़ीद मालूमात के लिये पढ़िये
5 रजब 183 हि.	यौमे विसाल ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रजब 1438 हि. और **"फ़ैज़ाने इमाम मूसा काज़िम"**
6 रजब 633 हि.	यौमे उ़र्स ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ह़सन संजरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रजब 1438 ता 1440 हि.
13 रजब 763 हि.	यौमे विसाल ह़ज़रते सय्यिद मीर मूसा जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रजब 1439 हि.
12 या 14 रजब 32 हि.	यौमे विसाल अ़म्मे रसूल ह़ज़रते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِىَ اللهُ عَنْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रजब 1438, 1439 हि.
15 रजब 148 हि.	यौमे उ़र्स ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम जाफ़र सादिक़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रजब 1438,1444 हि. और **"फ़ैज़ाने इमाम जाफ़र सादिक़"**
21 रजब 989 हि.	यौमे विसाल क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन मारूफ़ जिया उ़स्मानी क़ादिरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रजब 1439 हि.
22 रजब 60 हि.	यौमे उ़र्स सह़ाबिये रसूल कातिबे वह़ी ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِىَ اللهُ عَنْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रजब 1438, 1445 हि. और **"फ़ैज़ाने अमीरे मुआ़विया"**
24 रजब 261 हि.	यौमे विसाल इमामुल मुह़द्दिसीन ह़ज़रते इमाम मुस्लिम बिन ह़िजाज رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रजब 1439 हि.
25 रजब 101 हि.	यौमे विसाल ताबेई बुज़ुर्ग सानिये उ़मर ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रजब 1438, 1440 हि. और **"ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 ह़िकायात"**
25 रजब 1416 हि.	यौमे शहीदाने दावते इस्लामी मुह़म्मद सज्जाद अ़त्तारी और मुह़म्मद उह़द रज़ा अ़त्तारी	आदाबे मुर्शिदे कामिल, सफ़ह़ा 252 ता 255
27 रजब सिन 11 नबवी	अल्लाह पाक ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मेराज शरीफ़ का अ़ज़ीम मोजिज़ा अ़ता फ़रमाया	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रजब 1438 ता 1445 हि. और **"फ़ैज़ाने मेराज"**
27 रजब 297 हि.	यौमे विसाल इमामुत्ताइफ़ा ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रजब 1438 हि.
27 रजब 632 हि.	यौमे विसाल ह़ज़रते अबू सालेह़ अ़ब्दुल्लाह नस्र رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه	शर्हे शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या, सफ़ह़ा 91
रजब 15 हि.	वाक़िअ़ए जंगे यरमूक जिस में सिर्फ़ 41 हज़ार मुसलमानों ने 6 से 7 लाख रूमियों के दांत खट्टे कर दिये और अल्लाह पाक ने मुसलमानों को अ़ज़ीम फ़त्ह़ अ़ता फ़रमाई।	**"फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आज़म, जिल्द 2, सफ़ह़ा 591 ता 618"**

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلَّى الله عليه واٰله وسلَّم

اللہ

اللہ کا پیارا مہینا آ گیا رجب

اللہ کا پیارا مہینا آ گیا رجب — قلب و جگر پر چھا گیا اک کیف سا عجب
سارے جہاں پر چھا گیا ابرِ کرم ہے اب — آیا رجب ماہِ رجب پھر آ گیا رجب
ماہِ رجب کا واسطہ سستی ہو میری دور — نفلی عبادت کر سکوں فرما کرم اے ربّ!
ربّ کی عبادت کا رجب میں بیج بوئیے — اور کیجیے رو رو کے ربّ سے مغفرت طلب
افسوس! مجھ سے نیکیاں کچھ بھی نہ ہو سکیں — کر مغفرت بہرِ رجب اے مصطفیٰ صلی اللہ علیہ والہ وسلم کے ربّ
جنّت میں مولیٰ محل دے گا روزہ دار کو — اے بھائیو! روزے رکھو ماہِ رجب میں سب
اللہ تو غفار میں بے حد گناہگار — ماہِ رجب کا واسطہ تو بخش بے سبب

۲۹ جمادی الاخریٰ ۱۴۴۴ھ
22-1-23

अल्लाह

अल्लाह का प्यारा महीना आ गया रजब

अल्लाह का प्यारा महीना आ गया रजब — क़ल्बो जिगर पर छा गया इक कैफ़ सा अ़जब
सारे जहां पर छा गया अब्रे करम है अब — आया रजब माहे रजब फिर आ गया रजब
माहे रजब का वासित़ा सुस्ती हो मेरी दूर — नफ़्ली इ़बादत कर सकूं फ़रमा करम ऐ रब !
रब की इ़बादत का रजब में बीज बोइये — और कीजिये रो रो के रब से मग़्फ़िरत त़लब
अफ़्सोस ! मुझ से नेकियां कुछ भी न हो सकीं — कर मग़्फ़िरत बहरे रजब ऐ मुस्त़फ़ा صلی اللہ علیہ والہ وسلم के रब
जन्नत में मौला मह़ल देगा रोज़ादार को — ऐ भाइयो ! रोज़े रखो माहे रजब में सब
अल्लाह तू ग़फ़्फ़ार मैं बेह़द गुनाहगार — माहे रजब का वासित़ा तू बख़्श बे सबब

29 जुमादल उख़रा 1444 हिजरी
22-1-23

मक्तबतुल मदीना की किताबें घर बैठे ह़ासिल करने के लिये इस नम्बर 9978626025 पर Call SMS WhatsApp करें
مكتبة المدينة
MAKTABA-TUL-MADINAH

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी इन्डिया का साथ दीजिये और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर मदनी अ़त़िय्यात (Donation) के ज़रीए माली तआ़वुन कीजिये !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाह़ी (Reformatory), फ़लाह़ी (Welfare) ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER
HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI - BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD - 380028. (GUJARAT)
PLACE OF PRINTING : MODERN ART PRINTERS - OPP : PATEL TEA STALL, DABGARWAD NAKA, DARIYAPUR, AHMEDABAD - 380001.
PLACE OF PUBLICATION : BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD-380028. (GUJARAT) INDIA.